सावरकर

मोपला

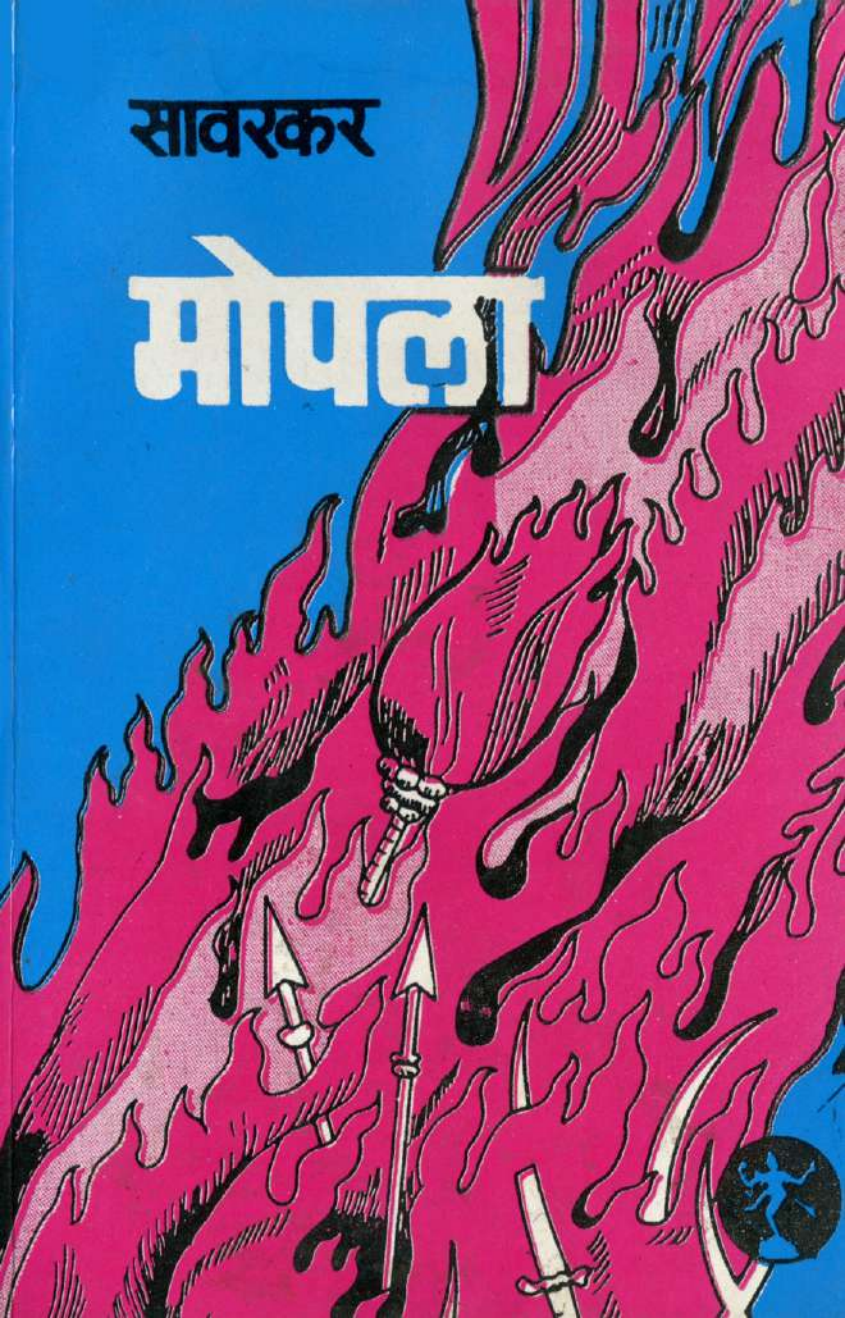

रात्रि में ग्राम में अग्निकाण्ड होने पर, आग में जान-बूझकर तेल डालना, जितना समाजद्रोही एवं पाप-पूर्ण कृत्य है, उतना ही इस आग की ओर से नेत्र मूँदकर यह मानना तथा रहना भी सार्वजनिक हित की दृष्टि से हानिकारक ही है कि आग लगी ही नहीं ! जैसे अग्नि में तेल डालना, आग बुझाने का सही उपाय नहीं, उसी प्रकार "आग लगी है, उठो भागो" आदि की आवाज़ इस भय से न लगाना कि कहीं सोते हुए लोगों की नींद न टूट जाए, भी उस अग्नि से ग्राम को बचाने का वास्तविक उपाय नहीं है।

मलाबार की सत्य घटनाओं के आधार पर ऐतिहासिक उपन्यास।

लेखक की अन्य रचनाएँ—

१. गोमान्तक (उपन्यास)
२. हिन्दुत्व के पंच प्राण (निबन्ध)
३. प्रतिशोध (नाटक)
४. १८५७ भारतीय स्वातन्त्र्य समर
५. हिन्दू पद पादशाही

मुझे इससे क्या?

अर्थात

मोपला

पूर्वीतट के मलाबार प्रदेश में घटित मोपला
उपद्रव पर आधारित उपन्यास

वी. डी. सावरकर

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 05

© योगेन्द्र दत्त

मूल्य 30.00
प्रकाशक हिन्दी साहित्य सदन
2 बी. डी. चैम्बर्स , 10/54 देश बन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग , नई दिल्ली-110005
email: indiabooks@rediffmail.com
फोन 51545969 , 23553624
फैक्स 011-23553624
संस्करण 2004
मुद्रक संजीव आफसैट प्रैस, दिल्ली

प्रकाशकीय

हमारी संस्था द्वारा वीर सावरकरजी की अमर कृतियों के हिन्दी में प्रकाशन की योजना बड़ी सफलता से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है—हम स्वीकार करते हैं कि इसकी गति मन्द है—कारण, प्रकाशन-व्यवसाय को पिछले वर्षों जो क्षति पहुँची है, उससे प्रत्येक प्रकाशक को अपने प्रकाशकीय कार्यक्रम में संशोधन करना पड़ा है।

फिर भी जिन महत्त्वपूर्ण कृतियों को प्रकाशनार्थ चुना गया उसमें निस्सन्देह सावरकर साहित्य को प्राथमिकता मिली—हमारे व्यक्तिगत अनुराग एवं पाठकों की माँग दोनों ही पहलू समक्ष थे। अतः 'मोपला'—उनके द्वारा लिखा गया मार्मिक उपन्यास हिन्दू-मुसलिम दंगे के सम्बन्ध में पाठकों को समर्पित है—एवं एक अन्य उपन्यास 'गोमांतक' भी इसके साथ प्रस्तुत किया जा रहा है—उसके प्रकाशक स्वयं श्री बाल सावरकर हैं, किन्तु उसके वितरण के सम्पूर्ण अधिकार हमारी संस्था को प्राप्त हैं—पाठकों की प्रतीक्षा समाप्त हुई। इस कृति के उपरान्त महर्षि सावरकर की अमर रचनाओं के प्रति पाठकों की जिज्ञासा पूर्व-ग्रंथों की तरह बढ़ जाएगी। उनके आत्मार्पण के उपरान्त तो हर क्षण यह रुचि निरन्तर बढ़ी है।

उपन्यास के आरंभ से पूर्व उनकी इस रचना को वैचारिक पृष्ठ-भूमि के मूल्यांकन का अध्ययन पाठकों को उपन्यास के कथानक के लिए रुचि उत्पन्न करेगा।

प्रस्तावना

रात्रि में ग्राम में अग्निकाण्ड होने पर, आग में जान-बूझकर तेल डालना, जितना समाजविद्रोही एवं पापपूर्ण कृत्य है, उतना ही इस आग की ओर से नेत्र मूँदकर रहना तथा यह मानना भी सार्वजनिक हित की दृष्टि से हानिकारक ही है कि आग लगी ही नहीं ! जैसे अग्नि में तेल डालना, आग बुझाने का उपाय नहीं, उसी प्रकार "आग लगी है, उठो भागो" आदि की आवाज इस भय से न लगाना कि कहीं सोते हुए लोगों की नींद न टूट जाए, भी उस अग्नि से ग्राम को बचाने का वास्तविक उपाय नहीं है ।

इसी भाँति मैं यह समझता हूँ कि मलाबार में मोपलों के उपद्रव के समय घटित भयंकर घटनाओं को अतिरंजित और अस्फुट-रंजित न करते हुए अथवा ज्यों का त्यों विवरण हिन्दू-मात्र के कानों तक पहुंचाना और इनके घातक कर्म को उनके हृदय में बैठाना, हिन्दुओं और मुसलमानों,दोनों के लिए हितकारी है । इसी दृष्टि से यह कहानी लिखी गई है ।

यद्यपि इस पुस्तक में उल्लिखित नाम और ग्राम कल्पित हैं, फिर भी इसमें जिन घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है उनमें वस्तुस्थिति का यथातथ्य प्रतिबिम्ब ही है ! इस वर्णन में मोपलों के उपद्रवों के समय हुई भयंकर और भव्य घटनाओं को अतिरंजित करने का प्रयत्न नहीं किया है ।

केवल पृथक् व अलग-अलग स्थानों पर आधारित हुई घटनाओं को कए सुसंगत कथा के सूत्र में पिरोने के लिए नाम, ग्राम व काल तथा

वेला की जितनी काट-छाँट आवश्यक थी उतनी की गई है ! किन्तु ऐसा करते हुए भी इस उपद्रव के उद्देश्य, इसकी भूमिका, कृत्यों अथवा घटनाओं की संगति और मर्म के ऐतिहासिक स्वरूप का लवलेश-मात्र भी विपर्यास न होने देने की सतर्कता बरती गई है।

मलाबार के उपद्रव का प्रत्यक्ष अवलोकन कर, उस उपद्रव से पीड़ित लोगों के मध्य अनेक वर्ष काम करते हुए सैंकड़ों पीड़ित हिन्दुओं और मोपला उपद्रवियों के वृत्त उनके हस्ताक्षरों सहित आर्य समाज ने "मलाबार का हत्याकाण्ड' नामक पुस्तक प्रकाशित की है। इस पुस्तक में श्रीयुत देवधर द्वारा मलाबार में पीड़ितों की सहायता करने का पुण्यकृत्य करते हुए वहाँ की परिस्थिति का इतिवृत्त भी प्रकाशित किया है। इसी विवरण और जानकारी के आधार पर यह कथा लिखी गई है। जिन पाठकों के लिए सम्भव हो वे इस पुस्तक तथा अली मुसेलियर के अभियोग का विवरण अवश्य ही पढ़ें ! 'मैं मलाबार का हत्याकाण्ड' नामक इस पुस्तक में ही लाला खुशहालचन्द खुरसन्द के प्रत्यक्ष रूप से देखे गए 'कुएँ' का वृत्तान्त (पृष्ठ ११२ ई०) पर्न्नीकर, तेहअस्मा, थल कुर्रे राम, सनको जी नायर, की हत्या कर तथा कंमियन को मृत समझकर इस कुएँ में फेंके जाने तथा ईश्वर-कृपा से उसके पुन: जीवित बचने, केश वन नम्बोदरी, कंजुनी, करुप व चमकुरी मंजेरी इत्यादि स्त्री-पुरुषों द्वारा अपने भयंकर अनुभवों का जो विवरण अपने हस्ताक्षरों सहित दिया, प्रकाशित किया गया है। इन्हें पाठक अवश्य पढ़ें। उससे पाठकों को यह विदित हो सकेगा कि पुस्तक में दिया गया विवरण कितना यथार्थ है।

ऐसा अवसर अपने राष्ट्र के समक्ष क्यों उपस्थित हुआ और पुन: ऐसा प्रसंग उपस्थित न हो पाए इसके लिए किन उपायों का अवलम्बन किया जाना चाहिए, इस प्रश्न को समाधानकारक रीति से सुलझाया जाना आवश्यक है। सत्य से दृढ़ता-सहित सामने रखकर हिन्दू-मुसलमान दोनों ही इस प्रश्न को समान रूप से सुलझाने को प्रवृत्त हों। ईश्वर से मेरी उत्कण्ठा-सहित यही प्रार्थना है।

लेखक

मोपला—पुनर्मूल्यांकन

(प्रस्तुत उपन्यास विषय एवं तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में)

महर्षि सावरकर के साहित्य-सृजन का हेतु देश, काल और समाज से सम्बन्धित परिस्थितियाँ मात्र ही नहीं अपितु उनके साहित्य में एक स्थायी तत्त्वज्ञान भी है। रचनाओं का यह स्थायी तत्त्वज्ञान तथा ऐतिहासिक सामग्री जो अस्थायी परिवेश में तात्कालीन समस्याओं पर आधारित है किसी न किसी सिद्धान्त एवं विचार-सूत्र की धुरी की ही परिक्रमा करते हैं।

हिन्द महासागर के पश्चिमी तट पर स्थित (मलाबार) कालीकट इत्यादि का मलयालम भाषा-भाषी अंचल किसी समय मद्रास प्रदेश का भाग था किन्तु अब यह केरल का भाग है। इसी अंचल में निवास करने वाले मुस्लिम 'मोपला' कहलाते हैं। इनमें से कुछ उन अरबी जलदस्युओं के वंशज हैं जो सौदागरों के रूप में आकर इस अंचल में बस गये और अन्य वे हैं जिनको इन्होंने हिन्दू समाज में व्याप्त छुआछूत की भावना का लाभ उठाकर अथवा प्रलोभन देकर धर्मान्तरित किया था।

इस्लामी खलीफा के समर्थन में भारत में भी खिलाफत-आन्दोलन मुसलमानों द्वारा आरम्भ किया गया और हिन्दू-मुस्लिम एकता के दीवानों ने स्वातन्त्र्य-प्राप्ति की मृग-मरीचिका में जी भरकर इसका समर्थन किया। किन्तु थोड़े समय बाद ही विचित्र बात यह हुई कि देश-भर में भयंकर हिन्दू-मुस्लिम उपद्रव आरम्भ हो गए। मलाबार में तो भीषण रक्तपात हुआ। उसी समय की स्थिति तथा हिन्दू की वेदना ही इस उपन्यास की पृष्ठभूमि है जिसे महान साहित्यकार हिन्दू हृदय-

सम्राट वीर सावरकर ने अपनी लेखनी से प्रस्तुत किया है।

वस्तुतः हिन्दू-मुस्लिम दंगे भी भारत में इतिहास की एक शृंखला ही बन गए हैं, इनका स्वरूप बदलता रहता है। जिस दिन से विश्व में इस्लाम का प्रादुर्भाव हुआ तबसे संसार के रंगमंच पर एक विचित्र उथल-पुथल होती आ रही है। प्रत्येक दूसरी जाति से इस्लाम के अनुयायियों का संघर्ष हुआ। इस्लामी धर्मोन्माद को हिन्दुस्थान ने भी सैकड़ों वर्षों तक झेला है। चाहे वह उन्माद गजनवी और गौरी के आक्रमणों अथवा खिलजियों और मुगलों की सत्ता—किसी भी रूप में उभरा हो। हिन्दू निरन्तर उसका लक्ष्य बनता रहा है!

किन्तु सबसे अधिक दुखद तथ्य यह है कि जब यह मुस्लिम-समूह स्वयं भी हिन्दुस्थान के हिन्दुओं के समान ही किसी तीसरी सत्ता के अधीन हो गया और अब भारतीय भी कहलाने लगा था तब भी उसने जातिगत रूप में अपनी पृथकतावादी नीति, उग्रता और हिंसक प्रवृत्ति का परित्याग नहीं किया और वह प्रवृत्ति तृतीय शक्ति के समान शत्रु के स्थान पर सहवासी भारतीयों के विरुद्ध ही रही। यद्यपि इन मुसलमानों में अधिकांश वही थे जिनके पूर्वज हिन्दू ही थे, किन्तु इनकी मज़हबी मान्यताएँ और धर्मान्धता से तो ऐसा सन्देह होने लगता है कि अन्य धर्मावलम्बियों के साथ सहअस्तित्व, सहयोग और सद्भावना तथा शान्ति शायद उनके शब्दकोष में ही नहीं है।

इस पृथक् मनोवृत्ति एवं उपद्रवों की प्रवृत्ति से एक पृथक् इस्लामी साम्राज्य उन्होंने सहज में प्राप्त कर लिया। जैसा कहा गया है इसके वैचारिक कारण भी हैं कि इस्लाम की दृष्टि में राष्ट्रीयता की भावना ही स्वीकार्य नहीं। इस्लाम एक पृथक् जीवन-पद्धति है जो केवल मक्का और अरब के पैगम्बर रसूल को ही मान्यता देते हैं, यही उनका धर्म है और यही है उनकी राष्ट्रीयता तथा अन्तर्राष्ट्रीयता।

इन दंगों में निर्दोष नागरिक मरते हैं। वस्तुतः किसी एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों को यह अधिकार नहीं दिया जा सकता कि वे कानून का उल्लंघन कर अशान्ति उत्पन्न करें। किन्तु यह स्थिति किसी

राष्ट्र के कर्णधारों की बुद्धि और विवेक की परीक्षा का भी विषय है। उनका दायित्व है कि इन काण्डों की पार्श्वभूमि और अन्य कारणों पर सांगोपांग विचार करें। जो दोषी हो, या दोष का मूल कारण हो उसको सही पथ पर लाएँ। किन्तु जिनको देशवासियों ने अपना भाग्यनिर्माता चुना है वे हिन्दू-मुस्लिम समस्या के सही निदान को खोजने में असफल ही नहीं रहे अपितु देश के विभाजन-जैसा पाप-कृत्य मान लिया। उस समय विभाजन के पक्ष में उन्होंने यही तर्क दिया कि यदि मुसलमान अन्य भारतवासियों के साथ नहीं रहना चाहते तथा ऐसा हो जाने से आए दिन के हिन्दू-मुस्लिम दंगों की समस्या का भी समाधान हो जाएगा। किन्तु भारत के विभाजन के पश्चात् आज भी यह समस्या पूर्ववत् विद्यमान है। पहले ये कांग्रेसी नेता कहते थे कि तीसरी विदेशी शक्ति अर्थात् अंग्रेज मुसलमानों को उकसाते हैं किन्तु अब २५ वर्ष के उपरान्त भी जबकि उनका देश पर पूर्ण अधिकार रहा, भारत की धरती इन दंगों की विभीषिका से मुक्त नहीं हो पाई। वस्तुतः उनके विचार करने का ढंग ही विकृत है और वे अपनी भूल को सुधारने के प्रयास को ही अपना अपमान मान बैठे हैं। अब भी इस स्थिति का जारी रहना राष्ट्र के कर्णधारों की बुद्धि, विवेक और निष्ठा को चुनौती है। वे यह विचार ही नहीं कर पाते कि क्या कारण है कि पश्चिमी पाकिस्तान हिन्दुओं से पूर्णतः खाली हो चुका है और पूर्वी पाकिस्तान के बचे-खुचे हिन्दू भारत आने को लालायित हैं? किन्तु लाखों मुसलमान जो पाकिस्तान को गए थे, उनमें से भी बहुत से वापस हिन्दुस्थान में आ गए हैं और पाकिस्तान की सीमा के समीप स्थित सभी भारतीय अंचलों में मुस्लिम जनसंख्या बड़ी तीव्र गति से बढ़ती जा रही है। लाखों पाकिस्तानी मुसलमानों ने असम में घुसपैठ कर ली है। वस्तुतः यह स्थिति भारत की कथित धर्मनिरपेक्षता की नीति एवं उन सभी राजनीतिक दलों की है जो भारत को वीर सावरकर की परिभाषा के विपरीत हिन्दू राष्ट्र नहीं मानते अथवा मिश्रित राष्ट्र और संस्कृति की विरुदावलियाँ गाते हैं।

वस्तुतः जिस समस्या को वर्षों पूर्व ही भारत में हिन्दू आन्दोलन के प्रवर्तक स्वातन्त्र्य वीर सावरकर ने समझा और आजीवन उनको अपने भाषणों और लेखनी से उसका निदान और समाधान प्रस्तुत किया। वे कहते रहे कि विश्व में सहअस्तित्व, शान्ति, उदारता, अहिंसा, पारस्परिक सहयोग, भ्रातृत्व भाव, एकता और मानवता एवं प्रेम बड़े ही मधुर एवं कर्णप्रिय शब्द हैं। इनका प्रचार करने वाला महान् आदर्शवादी भी माना जाएगा, किन्तु इनका क्रियान्वयन तभी होगा जब सभी जनसमूहों के बीच समान मानबिन्दु हो। एक सद्गुणी व्यक्ति अपना कर्तव्य तो पूर्ण कर सकता है और अपने कृत्य के लिए उत्तरदायी हो सकता है, किन्तु दूसरे के लिए नहीं। अतः नाना प्रकार की प्रवृत्तियों वाले जनसमूह में जब किसी आदर्श के प्रति मौलिक निष्ठा होगी तभी वह वास्तविक पारस्परिक सद्भावना में योग देगा।

परन्तु यह एक कटुसत्य है कि इस्लाम अपने अनुयायियों को अपने उन सहवासी देशवासियों के साथ मिलने ही नहीं देता जो किसी अन्य धर्म का अवलम्बन करते हैं। इतना ही नहीं उसकी शिक्षाओं के नाम पर आज तक उसके नेताओं ने उन लोगों के प्रति शत्रु-भाव भी भड़काया है जो इस्लाम को नहीं मानते। जो हजरत मुहम्मद और कुरान का अनुयायी अर्थात् मुसलमान नहीं उसके प्रति दया, उदारता और सहिष्णुता को उन्होंने पनपने ही नहीं दिया। अन्य लोग यह भी भूल कर जाते हैं कि इस्लाम में निश्चय ही जो प्रेम-भाव, सामाजिक एकता है, वह इस्लाम के अपने परिवार—मुसलमानों तक ही सीमित है, जहाँ तनिक भी दूसरा प्रतिपक्षी—समक्ष आया, सारी परिभाषा उल्टी हो जाती है।

इतिहास साक्षी है कि इस्लाम के अनुयायियों ने तभी दूसरों को सहन किया है जब तक कि किसी देश-विशेष में उनका प्रभाव नहीं बढ़ा और प्रतिपक्षी अधिक शक्तिशाली रहा। विश्व के अन्य धर्मों की तुलना में इस्लाम की शिक्षा, अधिक अन्धविश्वास और कट्टरता की है। धर्म के नाम पर जितने युद्ध मुसलमानों ने लड़े हैं उतने अन्य धर्मावलम्बियों

ने नहीं। उनका युद्ध ईसाइयों से चला तो यहूदियों से भी आज तक चल रहा है। जब यूरोप में उनकी दाल नहीं गली तो उन्होंने तलवार की धार पर एशिया के अन्य धर्मावलम्बियों के मूलोच्छेद का उपक्रम किया! तलवार की नोक से देश के देश मुसलमान बनाए गए। भयानक रक्तपात उनका मुख्य लक्ष्य रहा। ईरान के पारसी समुदाय को भी अपना देश छोड़ कर उन्हीं के कारण भारत में शरण लेने पर बाध्य होना पड़ा। उन्होंने अहिंसावादी बौद्धों को भी क्षमा न किया।

एक कट्टर मुसलमान को भारत या हिन्दुओं के तत्वज्ञान पर गर्व नहीं अपितु आश्चर्य ही होता है कि यहाँ धर्म के नाम पर तलवार क्यों नहीं चली। यहाँ बौद्ध, जैन, सिख, आर्य, सनातनी भारतीय मतावलम्बियों में से कई की वैदिक धर्मग्रन्थों में आस्था न होने पर वे परस्पर संघर्षरत क्यों नहीं हुए और हिन्दुत्व का अविभाज्य अंग कैसे बने रहे। वे एक-दूसरे के महापुरुषों को सम्मान की दृष्टि से देखते हुए नतमस्तक क्योंकर होते रहे। आज भी हैं।

गांधीजी सरीखे नेताओं ने इस एकता के चिरन्तन स्रोत की ओर ध्यान न देकर एक राष्ट्र बनाने का रासायनिक प्रयोग आरम्भ किया। वे यही समझते रहे कि एकपक्षीय सद्भावना और इच्छा से ही यह कार्य पूर्ण हो जाएगा। किन्तु उन्होंने एकता के मूल तथ्यों एवं शाश्वत सिद्धान्तों की उपेक्षा की। अब वह ग़लत विचारधारा रीछ एवं कम्बल की-सी बात बन गई। भारत का अधिकांश बुद्धिजीवी वर्ग इस वैचारिक चक्रव्यूह को तोड़ने की अपेक्षा उन्हीं विचारों का पोषक बन गया है। भारत के नए-पुराने राजनीतिक दल भारतीय आत्मा की आकांक्षाओं को न समझकर यही रट लगा रहे हैं कि यह हिन्दू-मुसलमानों का मिला-जुला राष्ट्र है और हिन्दुत्व का प्रभाव राज्य पर नहीं पड़ना चाहिए? पाकिस्तान बनने के बाद तो भारत में हिन्दू राज्य की स्थापना एक तर्कसम्मत निष्कर्ष था। किन्तु वैसा न होने देने के लिए धर्म-निरपेक्ष राज्य का नारा लगा दिया। जबकि विश्व के किसी भी देश में भारत-सरीखी कल्पित धर्मनिरपेक्षता को मान्यता नहीं मिल पाई है।

इसलिए खण्डित भारत की स्वतन्त्रता के उपरान्त महर्षि सावरकर ने यह घोषणा की थी कि भारत में हिन्दू राज्य की स्थापना के बिना इसकी राजनीतिक स्वतन्त्रता पूर्ण नहीं हो सकती ! पहले हिन्दू-मुस्लिम दंगों की समस्या एक घरेलू समस्या थी, किन्तु अब भारत पाकिस्तान की १६०० मील लम्बी सीमाओं पर एक-दूसरे के शत्रुवत् खड़े दो राष्ट्र हैं। अतः इस समस्या को भी विकराल रूप मिल रहा है। अब तो यह राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्या है।

प्रगतिशील और विज्ञाननिष्ठ बनने वाले साम्यवादियों के गुरुजन भी यही कह गए हैं कि दो भिन्न और विपरीत विचारधाराओं का समन्वय नहीं होता। वे संघर्षरत रहती हैं।

इस्लाम, ईसाइयत और साम्यवाद के समान ही हिन्दुत्व भी एक पूर्ण जीवन-पद्धति है। अतः हिन्दू-मुस्लिम विरोध-भावना का निदान तथाकथित धर्मनिरपेक्षता, मिश्रित संस्कृति के नारों अथवा समाजवाद, सर्वोदयवाद या साम्यवाद या भारतीय राष्ट्रवाद, जिसमें मुसलमानों के लिए मुहम्मदपंथी हिन्दू की संज्ञा का हास्यास्पद—नया आविष्कार कर दिया गया है, से नहीं हो सकेगा। इस समस्या का निदान वीर सावरकर द्वारा प्रदर्शित राजनीति के हिन्दूकरण अथवा हिन्दू राजनीतिक शक्ति के उदय से ही हो सकता है ! क्योंकि जिस समाज का नेतृत्व दुराकांक्षाएँ रखने वाले उत्तेजित लोगों के हाथों में हो वह शक्ति के आगे ही नतमस्तक हो जाता है। इसी कारण हमारे पूर्वजों ने, तत्ववेत्ताओं ने अहिंसा को समष्टि की नहीं व्यष्टि की साधना का विषय बनाया था। यदि अहिंसा का व्यवहार आक्रामक के प्रति भी किया जाए तो सभ्य समाज और शान्तिप्रिय राष्ट्र को जीवन की समाप्ति के अतिरिक्त अन्य कोई परिणाम उपलब्ध नहीं हो पाता। इसीलिए योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गीता के रूप में भी ऐसी समस्याओं का एक ही सार प्रस्तुत किया था कि यदि अन्याय अपना भी करता है, वह भी समाज की नैतिकता, संस्कृति और मर्यादाओं को चुनौती देता है, तो वह भी दण्डनीय है।

महर्षि सावरकर ने १८५७ के स्वातन्त्र्य-समर-ग्रंथ में उन मुसलमान पात्रों की भी प्रशंसा की है जिन्होंने निष्ठा से उसमें भाग लिया। अतः किसी मानव की तरह मुसलमान से भी शत्रुता उन जैसा क्रांतिकारी साहित्यकार, ऋषितुल्य महापुरुष का कोई ध्येय नहीं—उन्होंने तो एक सुधारक की तरह हिन्दुओं की त्रुटियों एवं ग़लत सामाजिक रूढ़ियों की भी निन्दा की है। विशेषतः अपने समाज में छूआछूत की प्रवृत्ति—जिसका एक दृश्य आपको प्रस्तुत पुस्तक में भी मिलेगा। वह हर स्थान पर सत्यासत्य का सन्देशवाहक है—वह इतना कहता है कि आग लगी है—तो अब घर वाले आग से नफ़रत करके भाग जाएँगे—तो इस अग्नि के विकराल रूप से मुक्त नहीं हो सकते। अतः समस्या जो भी है उसका साहस एवं न्याय के साथ मूल्यांकन करो—और सामना भी। वरना समस्याएँ तो भाग जाने पर भी कायरों का पीछा करती हैं—यदि आप में निपटने की शक्ति नहीं तो वह मूर्ख आदर्शवादियों को ही समाप्त कर देंगी—जैसे हिन्दू-मुस्लिम समस्या।

सावरकर साहित्य मूल्यांकन समिति

मोपला

□ | १

भारतवर्ष के सुरम्य स्थानों, पावन प्रदेशों में मलावार की गणना की जाती है। हरे वृक्षों से आच्छादित सघन वन, नाना प्रकार के फलों और पुष्पों से ढकी पर्वतमालाएँ, स्वच्छ सलिल से आप्लावित मंजुल प्रपात, गहरी किन्तु शान्तस्वभावी सरिताएँ, विपुल धान्य से भरे-पूरे खेत, ऊँचे और छत्र-से प्रतीत होने वाले वृक्ष पर लगे नारियल एवम् पोफली तथा ताड़ इत्यादि वृक्षों की पंक्तियों से परिपूर्ण यह प्रदेश नेत्रों और मन को पद-पद पर आह्लादित करता प्रतीत होता है।

ऐसे इस सुरम्य प्रदेश में, नाना प्रकार के फलों और पुष्पों से आच्छादित ऐसी ही पर्वतमालाओं के एक पर्वत-शिखर पर बसी थी कुट्टम नामक एक छोटी-सी बस्ती। वहीं नारियल और पोफली के सघन वन में पांच-छह नम्बूद्री ब्राह्मणों के घर थे। उन्हीं के समीप कुछ दूरी पर ही नायकों के पच्चीस के लगभग परिवार बसते थे और उनसे कुछ आगे थी अन्य 'स्पृश्यों' की थोड़ी-सी बस्ती। इसी बस्ती से आधे मील की दूरी पर 'थिय्या' जाति के परिवारों की दस-बारह झोंपड़ियाँ पड़ी हुई थीं। मुख्य बस्ती से आधे मील की दूरी पर पड़ी ये झोंपड़ियाँ ही इस बस्ती की सीमा समझी जाती थीं। यद्यपि ये भी इसी ग्राम का भाग थीं, किन्तु फिर भी उनके इतनी दूरी पर बसने का कारण यह था कि ये थिय्या लोग अस्पृश्यों में गिने जाते थे।

प्रतिदिन प्राची दिशा में भगवान् अंशुमाली के भी उदित होने से पूर्व ही नम्बूद्री ब्राह्मणों के कुमार उठकर वेदपाठ आरम्भ कर देते थे।

उनके सुमधुर कंठों से उभरते पावन वेदमन्त्रों के स्वरों को सुनकर पशु-पक्षी भी आनन्द-विभोर हो उठते थे। वहाँ के ब्राह्मणवृन्द ने वेदों का रक्षण इतनी उत्कृष्टता-सहित किया है कि स्नान और संध्या से विरत होकर शुभ्र एवम् शुद्ध यज्ञोपवीत धारण कर चारों ही वेदों का स्वर शुद्ध और भ्रमरहित तथा धाराप्रवाह पाठ करते हुए आज भी दृष्टिगोचर होते हैं।

परन्तु वेदों के पठन-पाठन का अधिकार शूद्रों को नहीं है, इसी धारणा के फलस्वरूप ब्राह्मणों के मुख से उच्चारित वेदों की पावन ध्वनि अन्य जातियों को सुनाई न पड़ सके। इस बात को दृष्टिगत रखकर इन ब्राह्मणों ने अपनी बस्ती ग्राम की सीमा पर अन्य लोगों से दूर बसाई थी। उनके घरों के आगे कुछ दूरी पर नायर परिवार बसते थे। नायर अपने-आपको क्षत्रिय समझते हैं और किसी ब्राह्मण का कनिष्ठ पुत्र नायर कन्या से विवाह कर सकता था, किन्तु ब्राह्मण के ज्येष्ठ पुत्र के लिए ब्राह्मण कन्या को ही अपनी जीवन-संगिनी बनाना अनिवार्य था। इसका कारण यह था कि नायरों से अनुलोम पद्धति के अन्तर्गत सम्बन्ध स्थापित करना, उस जाति के साथ रक्तैक्य व बीजैक्य स्थापित करना वे अपनी उच्चता के अनुरूप मानते थे। उनका बीज, रक्त और जाति का अस्तित्व विशुद्ध रखने में विश्वास था। नायर भी थिय्या, नवाड़ी, यलावन, कलियन और मसकून इत्यादि जातियों को अस्पृश्य समझते थे। अतः उनकी भी यह धारणा थी कि इस जाति के किसी व्यक्ति का दर्शन करना भी अनिष्टकारी है। इसी कारण इन जातियों के परिवार प्रत्येक ग्राम में ही मुख्य बस्ती से मील-आधा मील की दूरी पर बसे हुए थे।

इस सामाजिक रूढ़ि से विशृंखलित सम्पूर्ण हिन्दू समाज के समान ही कुट्टम् ग्राम की यह बस्ती भी व्यवस्थित रीति से अलग-अलग बसी हुई थी।

प्रातःकाल की वेला थी। सुदूर नारियल और पोफली के सुन्दर वन्य-प्रदेश में वेदशास्त्रनिरत ब्राह्मण सांगोपांग वेदपाठ करने में संलग्न

थे। बीच-बीच में हवन यज्ञ से उठता हुआ सुगंधित धूम्र, कालिदास के यक्ष का सन्देश देने वाले स्निग्ध एवम् दयालु मेघों के तुल्य नारियल वृक्षों की शिखाओं के नीचे मण्डरा रहा था। बस्ती के मध्य में बसने वाले नायर तथा अन्य जातियों के कुटुम्ब भी अपने-अपने कार्यों में संलग्न थे। उनमें से अनेक बस्ती के समीप स्थित सरोवर से पानी भरने के लिए जा रहे थे। नायरों के परिवारों की महिलाएँ भी इस तालाब के मार्ग पर आ-जा रही थीं। उनमें से दस-पाँच महिलाएँ क्षण-भर ठहरतीं और हँसते हुए एक-दूसरे से विदा ले रही थीं।

उसी समय इस स्थान से दूर खेतों के समीप थिय्यों की उस बस्ती में एक मुसलमान मौलवी एक खेत के किनारे खड़ा दो थिय्यों से वार्ता कर रहा था। खास मुहम्मद पैगम्बर के चाचा की मौसी के जँवाई की जो बहिन थी उसके पड़ोसी की भानजी का लड़का मेरा पूर्वज था। इस प्रकार मैं एक विशुद्ध अरब घराने को अलंकृत करता हूँ। अपनी लम्बी दाढ़ी पर तीन-तीन बार साथ फेरकर वह सब लोगों को समझा रहा था। उन थिय्याओं में से एक ३० वर्ष का नवयुवक था, उससे मौलवी ने कहा, "कंबु, तुम्हें पता है, दिव्य पुस्तक में क्या कहा गया है। सुरतुल् फुर्कान नामक अध्याय में ईश्वर ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि कुरान उसने प्रकट की है जो पृथ्वी और आकाश की सम्पूर्ण बातों को जानता है। पुनः जो इसे तथा पुनरुत्थान (क़यामत के बाद पुनः रचना) की बात को जो ग़लत समझते हैं, उनके लिए मैंने भयंकर नरकाग्नि तैयार करके रखी हुई है।" तब कम्बु ने नितान्त शान्त भाव से कहा, "मौलवी, यह वाक्य तुमने मुझे अनेक बार सुनाया है। परन्तु मैंने तुम्हारे समक्ष जो शंका प्रस्तुत की है उसका निवारण क्यों नहीं करते? सभी मनुष्य एक न एक दिन मरते हैं और वे सभी कब्रों में पड़े हैं, और जब कभी युगों के उपरान्त समाप्त होगा तदुपरान्त परमात्मा एकदम तुरही फूंकेगा और वे उठ बैठेंगे, तथा उनके साथ न्याय किया जाएगा, इसी को आप पुनरुत्थान कहते हैं ना?" "हाँ," "अच्छा ठीक है, तब यह बताइए कि यदि किसी मनुष्य के द्वारा किए गए किसी कार्य का फैसला करने के

लिए पुलिस उसे एक कोठरी में बन्द कर दे और दस वर्ष तक भी उसके मामले की सुनवाई न करे और उसे वहाँ बन्दी बनाए रखे तो क्या इस भयंकर कच्ची कैद देने वाले उस पुलिस अधिकारी के इस कृत्य को अमानुषिक कहेंगे अथवा नहीं ?" "निश्चित," "अतः जब न्याय न करते हुए जांच के नाम पर ही किसी व्यक्ति को दस वर्ष तक कैद में रखना यह एक अमानुषिक कृत्य है ऐसी आपकी भी मान्यता है तो फिर अन्यायी अथवा न्यायी किसी भी व्यक्ति को अन्तिम निर्णय सुनाने के लिए संसार में अब तक कब्रों-सरीखी भयंकर कोठरियों में डाले रखना, परमात्मा की अमानुषिकता भले ही न हो, परन्तु क्या उसकी दयालुता के विरुद्ध नहीं है ? और फिर इस प्रकार की बात पर जो व्यक्ति विश्वास नहीं कर पाता उसे नरकाग्नि में फेंक दे। छिः-छिः, परमेश्वर तो महान दयालु है, कृपालु है, वह तो न्यायकारी भी है। आप जो कुछ बताते हैं उसमें तो परमात्मा के न्यायकारी होने की कल्पनामात्र भी नहीं है, उसमें तो नाममात्र को भी दया-भावना नहीं है।"

"कम्बु !" मौलवी क्रुद्ध होकर बोला, "तुम काफिरों के कानों तथा हृदय पर तो परमेश्वर ने मोहर लगाई हुई है। तुम्हारी बुद्धि तथा हृदय को परमात्मा ने बधिर और वेदनाशून्य बनाकर रखा है। इसीलिए तुम पुनरुत्थान और पैगम्बर के वचनों पर विश्वास नहीं कर सकते।"

"और," कम्बु बीच में ही बोल उठा, "फिर हमें भयंकर नरकाग्नि में फेंक दिया जाएगा। यह परमेश्वर को शोभा देता है क्या ? पहले तो सर्वशक्तिमान होकर भी उसने हमारे कान व हृदय बन्द कर दिया, और उस पर भी अज्ञान की मोहर ठोक दी। फिर हमारे लिए तुम्हारे कथन के अनुसार सत्य-वचन सुनाने हेतु आपके समान मौलवी भेज दिया और उसकी आज्ञा से हमारी मुक्ति नहीं होगी अपितु हमें दण्डित किया जाएगा। जैसे पहले तो कोई हमारे हाथ में बलात् दूसरे की वस्तु रख दे और तदुपरान्त यह कहकर कि हमने चोरी की है, उसका यह कृत्य जिस भांति अन्याय है, उसी भाँति जिस प्रकार के परमेश्वर की कल्पना तुम दे रहे हो उस पर विश्वास करना मात्र भी अन्याय और

अधर्म ही कहा जाएगा।"

"तौबा ! तौबा !" मौलवी बोल उठा, "परन्तु यह परमेश्वर द्वारा प्रकटित पुस्तक में लिखा हुआ है ना ?"

कम्बु—'यदि आप ऐसा समझते हों तो आप सुखपूर्वक अपना यह विश्वास बनाए रखिए। मुझे तो अपने हिन्दू सन्तों के उपदेश ही अधिक आनन्ददायक लगते हैं। मैं ऐसा समझता हूँ कि परमेश्वर इस बात से किसी व्यक्ति की साधुता अथवा भक्ति की परीक्षा नहीं करेगा कि पुनरुत्थान पर उसका विश्वास है अथवा नहीं अपितु वह इस आधार पर मानव की परीक्षा करता है कि 'तूने सत्कर्म किए हैं, अथवा दुष्कृत्य किए हैं।' जिन्हें पुनरुत्थान की कल्पनामात्र भी नहीं है किन्तु जिन्होंने संसार में प्राणिमात्र पर दया की है; सत्य, समत्व, परहित-तत्परता को जीवन में स्थान दिया है उनसे परमेश्वर सदैव ही सन्तुष्ट रहता है। हम हिन्दुओं में अनेक ऐसे साधु-सन्त जन्मे हैं, जिन्होंने मुसलमानी कुरान का कभी पन्ना भी नहीं पलटा, किन्तु वे अपने पवित्र आचरण और भक्ति के आधार पर ही मुक्ति पाने में सफल हुए हैं !"

"मुक्त हो गए !" मौलवी यह कहकर हँस पड़ा। "मूर्ख, वे सभी नरकाग्नि में जले हैं। परमेश्वर तथा पैग़म्बर पर जिसका विश्वास है वही मुक्ति प्राप्त कर सकता है।"

"क्या कहा ? हम हिन्दुओं ने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसकी भक्ति भी पूर्ण मनोभाव सहित की, परन्तु जिस प्रकार तुम पैग़म्बर मुहम्मद पर विश्वास करने को कहते हो उस प्रकार विश्वास न करें अथवा पुनरुत्थान और उपपत्ति को मान्यता न दें तो हमारी मुक्ति नहीं हो सकती ?"

"अलबत्—अर्थात् नहीं !"

"फिर तो हमारे लिए परमेश्वर के समान ही पैग़म्बर की भक्ति करना भी महत्त्वपूर्ण है। हमारे समान ! और पैग़म्बर से पूर्व मनुष्य जाति की जो लाखों पीढ़ियाँ संसार में जन्मी और उनके उपरान्त पैदा हुईं, इस संसार की सर्व पीढ़ियाँ नरक में गई हैं ना ? हमारी

हिन्दू-जाति के साधु-सन्तों को भी नरक ही मिला है ना ?"

"अर्थात् ! परमेश्वरी पुस्तक से तो यह बात स्पष्ट ही है।"

"फिर अच्छा है !" कम्बु ने चलते-चलते कहा, "मौलवी जी, जिस नरक में ऐसे साधु-सन्त रहते हैं, जहाँ मेरे पूर्वजों की पीढ़ियों की पीढ़ियाँ निवास कर रही हैं, वही मेरा स्वर्ग है ! मैं हिन्दू ही रहूँगा। इस धर्म का परित्याग कर मैं स्वर्ग-प्राप्ति का इच्छुक नहीं हूँ। धर्मराज की कथा मेरी दादी मुझे आज भी सुनाती है कि उन्होंने अपने पाँच भाइयों को छोड़कर स्वर्ग में जाने के स्थान पर नरक में अपने जाति-बांधवों के साथ रहना ही श्रेयस्कर समझा और अपने धर्मबल से अपने भाइयों को मुक्त कराया। मैं उस धर्मराज के भक्तों का एक नितान्त ही कनिष्ठ भक्त हूँ। मैं उसी धर्मराज के तथा श्रीकृष्ण के पावन हिन्दू धर्म का अनुगामी रहूंगा !"

इतने में ही थिय्यों की बस्ती जिसे अस्पृश्यों की बस्ती अर्थात् महारवाड़ा भी कहा जा सकता है, से एक प्रचण्ड चीत्कार सुनाई पड़ा, "कम्बु ! कम्बु ! अरे दौड़ो ! तुम्हारा पुत्र मारा गया। वह दम तोड़ गया।"

इस चीत्कार को सुनते ही कम्बु एवं उसके साथ वहाँ खड़े हुए सभी थिय्या अपने महारवाड़े में जा पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि कम्बु का एकमात्र पुत्र वटवृक्ष पर चढ़ते हुए उससे गिर पड़ा था। इससे उसे भयंकर चोट आई थी ! उसके घावों से बहते हुए रक्त से उसके अंग-प्रत्यंग तथा वस्त्रादि भीग गये थे। वह अचेत पड़ा था। किसी थिय्या को जितनी जानकारी थी, उसने उतना उपचार भी किया था ! किन्तु बालक के व्रणों से होता हुआ रक्तस्राव बन्द नहीं हो पाया था। उसी समय एक थिय्या बोला, "ग्राम के कृष्ण नायर के पास कोई दौड़कर जाए और उसे बुला लाए, इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है।" यह सुनते ही कम्बु और उसके समीप खड़ा हुआ एक अठारहवर्षीय किशोर दामू तीर के समान दौड़ पड़े। मौलवी भी उनका पीछा करता हुआ जिस मार्ग से उन्हें जाना था उस मार्ग

में स्थित तालाब के पास जाकर खड़ा हो गया था। कम्बु और दामू दोनों ही बड़ी व्यग्रता सहित दौड़ते हुए उस तालाब से लगभग सौ-डेढ़-सौ फुट की दूरी पर जा रहे थे; तभी तालाब पर पानी भरने वाले तथा खड़े हुए नर-नारी सहसा ही चीख पड़े—"थिय्या! थिय्या! दुर! दुर!"

मलाबार में स्पृश्य जातियाँ अस्पृश्यों को अपने से सौ-डेढ़-सौ फुट दूर ही रहकर चलने देते हैं। स्पृश्यों की यह धारणा है कि यदि तालाब से १०० फुट की दूरी तक स्थित मार्ग पर किसी अस्पृश्य का पैर भी पड़ जायेगा तो सम्पूर्ण तालाब का जल ही अशुद्ध हो जाएगा। इन दोनों थिय्यों को तालाब के समीप से जाते हुए देखकर हुई इस गड़बड़ को देखकर मौलवी का हृदय हर्ष से प्रफुल्लित हो उठा और उसने वहीं खड़े रहकर यह दृश्य देखने का निश्चय कर लिया।

दूर से ही उन थिय्यों ने कहा, "महाराज! हमारा एक लड़का भयंकर घाव लगने के कारण मरणासन्न है। हम कृष्ण नायर वैद्य के घर से उसके लिए औषधि लेने जा रहे हैं। दूसरा मार्ग यहाँ से दो-तीन मील की दूरी पर है अतः दया कीजिए, हमें इस मार्ग से जाने की अनुमति दीजिए।"

"चांडाल, मरे तुम्हारा बेटा" एक नायर हाथ हिलाते हुए दौड़ता हुआ आया और चीख उठा। उसने कहा, "क्या तुम्हें पता नहीं है कि किस मार्ग से तुम जा रहे हो, यह सौ फुट दूर नहीं है। चाहते हो तो नापकर देख लो।"

"महाराज! तालाब के पास से यह स्थान जितना निकट है, उससे भी मेरा पुत्र मृत्यु-मार्ग के निकट पहुँच चुका है। अतः कृपा कीजिए और मुझे औषधि लाने के लिए जाने दीजिए।"

"तुम्हारा पुत्र मरता है तो मरे" वह राम नायर बोल उठा, जिसे चोरी के आरोप में दो बार कारागार की सैर करनी पड़ी है। उसने कहा, "हमारा तालाब अशुद्ध हो गया तो? नहीं! तुमने पाप-योनि में जन्म लिया है, तुम्हें तो देखना मात्र भी अशुभ है, किन्तु कलियुग है

अत: मैं सहन कर रहा हूँ।"

"महाराज आपके मन में जो भी आए कह लीजिए, किन्तु दया कीजिए, मेरा यही एकमात्र पुत्र है। मुझे जाने दीजिए। मैं अपने मुख को ढँक लूँगा जिससे वह आपको दिखाई न देगा।"

"चुप!" यह मुकन्द उत्तेजित होकर बोला जो पिछले पाँच वर्ष से कालीकट में शराब की दूकान चला रहा था। उसने चीख कर कहा, "तुझे दिखाई नहीं देता कि मैं स्नान कर रहा हूँ? तू बड़ी ही ढिठाई दिखा रहा है हमारे बारम्बार मना करने पर भी आगे ही बढ़ता आ रहा है। क्या तुझे विदित नहीं है कि तेरे शब्द कानों में पड़ जाने मात्र से ही मेरे लिए पुन: स्नान करना अनिवार्य हो गया है। पता नहीं है क्या तुझे?"

इतनी कहा-सुनी होते वे दोनों थिय्या, जो पहले सौ-सवा-सौ फुट की दूरी पर खड़े थे और अधिक निकट सरकते-सरकते आ पहुँचे थे। वे दोनों अब उस तालाब के तट से होकर जाने वाले मार्ग पर पहुँच चुके थे। लड़के के सिर से निरन्तर रक्त प्रवाहित हो रहा था। उसके पिता को भी यह आभास हो रहा था कि उसका पुत्र प्रतिक्षण मृत्यु की ओर पग रख रहा है! जिस समय थिय्या तालाब से केवल 30 फुट की दूरी पर स्थित पगडंडी के समीप आ पहुँचे तो उस तालाब पर खड़े तथा उसमें स्नान कर रहे स्पृश्यों में भारी उत्तेजना व्याप्त हो गई और दो नायर, एक-दो ब्राह्मण तथा सुतार भी उन पर पत्थर फेंकते हुए उनकी ओर दौड़ पड़े। उसी समय शान्ति-सहित पुरुषसूक्त का उच्चारण करता हुआ एक ब्राह्मण वहाँ आया और उसने हाथ उठाते हुए कहा, "हाँ! हाँ! ऐसी निरर्थक मारामारी आप लोगों के लिए शोभा नहीं देती! सुनो कम्बु! मैं तुम्हारे लिए उस वैद्य के पास चला जाता हूँ और उसके पास से औषधि ला दूँगा। यद्यपि मैं तुम्हारे पुत्र का कोई संबंधी नहीं हूँ। फिर भी तुम्हें अपने पुत्र के सम्बन्ध में जितनी चिन्ता है, उतनी ही चिन्ता अपने हृदय में लिए शीघ्रता सहित वैद्य के पास जाऊँगा और औषधि ला दूँगा। तुम यहीं खड़े

रहो। इससे किसी की भावनाओं को भी आघात नहीं लगेगा और तुम्हारा कार्य भी हो जाएगा।" अभी इस ब्राह्मण ने इतना कहा ही था कि वह मौलवी बीच में ही बोल उठा, "माफ करो। मैं बड़े आनन्द सहित कम्बु को औषधि ला दूँगा। आप अपनी संध्या पूर्ण कीजिए। मेरे इस रास्ते से जाने में तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होगी ना ?" तभी शराब की दुकान चलाने वाला मुकन्द बोल उठा, "पर तेरी जाति क्या है ? थिय्या लोक अस्पृश्य हैं और गन्दा काम करते हैं।"

मौलवी बोला, "मैं थिय्या हिन्दू नहीं, मैं तो मुसलमान हूँ।" "ओहो, तो आप खान साहेब हैं ! भला आप पर किसे आपत्ति होगी। आप इस मार्ग से चाहे आएँ अथवा जाएँ, इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती है। ये थिय्या पाप योनि वाले हैं अतः इस तालाब से १०० फुट की दूरी से इनके आगे आने से तालाब भ्रष्ट हो जाता है ?" चोरी करके दो बार कारावास भोगने वाला वह क्षत्रिय कुलावतंस राम नायर अभी इधर ये बातें ही कह रहा था कि पुरुषसूक्त का उच्चारण करने वाला वह ब्राह्मण अपने भीगे वस्त्रों सहित ही दौड़ता हुआ चला गया था। वे थिय्या खड़े हुए प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह कब कम्बु के पुत्र के लिए औषधि लेकर वापस लौटता है। अब वह मौलवी भी उन दोनों के समीप जा पहुँचा और बोला, "हाय ! हाय ! ये काफिर कितने निर्दयी हैं। कम्बु, मुझे क्षमा करो ! किन्तु मैं तुम्हारे हित की ही बात कह रहा हूँ। वस्तुतः तूने मेरे समक्ष इस्लाम के विरुद्ध जो अपशब्द कहे थे उसी का तुझे यह तत्काल प्रत्युत्तर मिला है। तेरे पुत्र को इसी कारण अल्लाह मियाँ ने वृक्ष से नीचे गिरा दिया है ! और जिन्हें तू अपने धर्मवाला समझता है उन काफिरों, ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों के हृदय पर तो अल्लाह ने मुहर ठोक दी है। मैं मुसलमान हूँ, मैं तो इस तालाब पर जा सकता हूँ, तू हिन्दू है ! किन्तु अस्पृश्य है, वहाँ नहीं जा सकता है। तू मुसलमान हो जा, फिर देख कि मैं तुझे इसी तालाब से लेकर जाता हूँ अथवा नहीं। फिर तू इस तालाब से पानी भी लेगा तो कोई न बोल सकेगा। तू मुसलमान हो। अब शीघ्र ही वह समय भी आने

वाला है जब मुसलमान इन सभी काफिरों की स्त्रियों से पाणिग्रहण करेंगे। समझा! चल और तू मुसलमान होने का संकल्प ग्रहण कर। और इस आयत का—कुरान के मन्त्र का उच्चारण कर, जिसे मैं तुझे बताता हूँ। फिर तू देखेगा कि तेरा पुत्र भी तत्काल स्वस्थ हो जाएगा और साथ ही तुझे इन निर्दयी ब्राह्मणों व स्पृश्यों से प्रतिशोध लेने का अवसर भी प्राप्त हो जाएगा।"

अपनी ही चिन्ता में ग्रस्त वह थिय्या मौलवी के इस भाषण को सुनकर संतप्त हो उठा और बोला, "मेरा पुत्र भले ही अच्छा न हो। भले ही उसकी मृत्यु हो जाए, किन्तु मैं मुसलमान नहीं बनूँगा! ब्राह्मणादि हिन्दुओं की इस निर्दयता का प्रतिशोध किस प्रकार लेना है, यह मेरे सोचने का विषय है, तुम्हारे विचारने का नहीं। और जो दयालु मनुष्य मेरे लिए प्रार्थना करता-करता गीले वस्त्रों सहित ही वैद्य के पास दौड़ता हुआ गया है, वह भी तो ब्राह्मण ही है!"

अब मौलवी निराशा और क्रोध से लाल-पीला हो उठा और बोला, "चांडाल! काफिर! 'सूरतूल बय्यन' इस अध्याय में परमेश्वर ने मूर्ति-पूजकों के लिए जिस दण्ड के संबंध में कहा है वह दण्ड तुझे मिलेगा। तुम्हारे लिए नरकाग्नि में पड़ने की ही व्यवस्था है। जैसा कि तू कह रहा है, तेरा पुत्र मरेगा ही। नहीं, नहीं, तुम काफिरों के लिए तो ईश्वर ने ही यह व्यवस्था की हुई है। तब तक तुम कुरान की श्रेष्ठता स्वीकार नहीं करोगे जब तक कि तुम्हारी गर्दनों पर तलवार नहीं बरसेंगी। ठहरो, वह दिन भी अब दूर नहीं रह गया है!" हाथों की मुट्ठियाँ बाँधे मुक्का दिखाते हुए वह मौलवी उसे यह श्राप देता हुआ वहाँ से चल पड़ा!

इसी बीच औषधि लाने के लिए गया वह ब्राह्मण भी लौट आया। उसके साथ वह नायर वैद्य भी आ गया था। कम्बु थिय्या था, अस्पृश्य जाति में जन्मा था, किन्तु वह सुशिक्षित था और कालीकट से मलयालम भाषा का एक साप्ताहिक पत्र भी प्रकाशित करता था। उसने हिन्दू-धर्म का मलयालम भाषा तथा अंग्रेजी ग्रन्थों द्वारा पर्याप्त अध्ययन

भी किया था। इतना ही नहीं वह संस्कृत ग्रन्थों का पाठ भी बे-रोक-टोक ही नहीं करता था अपितु उनका अर्थ भी काफ़ी हद तक समझ लेता था। भगवद्गीता का तो वह भली-भांति पाठ करने में सक्षम था।

संस्कृत भाषा को मातृभाषा के समान ही धाराप्रवाह बोलने वाले अनेकों ब्राह्मण कुटुम्ब आज भी मलाबार में हैं। किन्तु इतना ही नहीं ऐसे अनेकों थिय्या आदि अस्पृश्य भी मलाबार में निवास करते हैं जिन्हें संस्कृत के सौ-दो-सौ श्लोक कंठस्थ हैं। पर इतना ही क्यों, वहाँ तो सर्वसाधारण में भी संस्कृत के अनेक श्लोक इतने अधिक प्रचलित हैं कि भर्तृहरि के कतिपय चुने हुए श्लोक अशिक्षित मुसलमानों तक को याद हैं। अस्पृश्यता की बात को छोड़कर कम्बु थिय्या की विद्वत्ता के तो स्पृश्य लोग भी कायल थे। वे भी उसकी विद्वत्ता का सम्मान करते थे। कृष्ण नायर वैद्य की दृष्टि में उसके लिए पर्याप्त सम्मान था। वह भी उसके साथ लगभग ५० फुट के अन्तर से चलता हुआ महार-वाड़े पहुँचा और उसके पुत्र का यथोचित उपचार कर वापस लौट गया। जब कम्बु का पुत्र कुछ स्वस्थ हो गया तो कम्बु के साथ जो थिय्या तरुण उस मौलवी द्वारा किए गए संभाषण के समय उपस्थित था वह कम्बु से बोला, "दादा! मुझे क्षमा करो, यह मौलवी जो यह कह रहा था कि कुरान ईश्वर द्वारा प्रकट की गई पुस्तक है, मुझे लगता है सत्य ही है।" कम्बु हँसते हुए बोला, "तुमने यह कैसे समझ लिया?" तरुण बोला, "इसका कारण यह है कि वह मौलवी इस बात को बारम्बार बड़े विश्वास के साथ दोहरा रहा था।"

"तो फिर यदि किसी बात को एकाध बार जोरों से कह दिया जाए तो क्या वह सही हो जाती है? तब फिर मैं यदि ऐसा कहूँ कि दो और तीन मिलकर सात होते हैं, और यह ज्ञान मुझ पर परमेश्वर ने प्रकट किया है तथा मैं सौ बार इसी वाक्य को दोहरा दूँ तो क्या तुम इसे सच मान लोगे?"

"छिः-छि, यह बात मेरे प्रत्यक्ष ज्ञान और अनुभव को स्वीकार

नहीं, मेरी बुद्धि ऐसा मानने की अनुमति नहीं देती।"

"किन्तु दामू, कुरान ईश्वर-प्रणीत है, यह मुझे नहीं लगता। मेरे समक्ष तू ऐसा कोई तर्क प्रस्तुत कर जिससे तेरे इस कथन की पुष्टि होती हो। अन्यथा बात ऐसी है कि जिन्हें कुरान ईश्वर-प्रणीत लगती है, वे खुशी से ऐसा मानें, किन्तु मेरी दृष्टि से तो उसका अर्थ समाज-नाशक, निष्ठुर अथवा अविश्वसनीय है। किन्तु ऐसा समझने वाले मेरे सरीखे लोगों की गर्दन पर तलवार रखी जाएगी, उन्हें नरकाग्नि में दग्ध किया जाएगा और क्या उनके हृदय को दग्ध करने का प्रयत्न होगा?"

"दादा, हम अस्पृश्यों पर जो हिन्दू धर्म इतना अन्याय करता है, क्या उसका अपमान करने वाले एवम् हिन्दुओं को काफ़िर समझने वाले मुसलमान हमसे अधिक पवित्र हैं। वे गोवध करते हैं और देवमूर्तियों को पत्थर के टुकड़े समझने वाले ये मुसलमान उनके तालाबों पर भी जा सकते हैं, परन्तु राम-कृष्ण की पूजा करने वाले हम, जो उनके हिन्दू बन्धु-बान्धव हैं, उन्हें वे पाप-योनि वाला समझते हैं और हम उनका स्पर्श भी नहीं कर सकते। जिस हिन्दू धर्म में इस भयंकर अन्याय की गणना भी पुण्य के रूप में की जाती हो, उस हिन्दू धर्म की अपेक्षा अस्पृश्य जाति की कल्पना मात्र भी न करने वाला एवम् सभी मनुष्यों को समान समझने वाला मुसलमानी धर्म श्रेष्ठ नहीं है क्या?"

बड़े लाड़ सहित उस तरुण की पीठ पर हाथ रखते हुए कम्बु बोला, "पगले, देख शब्दों का अन्तर होने से ही विचारों में भी कितना घोटाला हो जाता है? तू कहता है कि हम से हिन्दू धर्म अन्याय करता है, पर हम अस्पृश्यों पर जो निर्दयता सहित अत्याचार होता है, वह हिन्दू धर्म नहीं करता अपितु यह अत्याचार हिन्दू समाज द्वारा किया जाता है। किन्तु थोड़ा-सा विचार करें तो यह बात भी भूल ही प्रतीत होती है। कारण हम अस्पृश्य भी तो हिन्दू समाज के ही अन्तर्गत हैं। अतः यह कहना ही उचित होगा कि अपने-आपको स्पृश्य समझने वाले कतिपय व्यक्ति—हम अस्पृश्य समझे जाने वाले लोगों पर कई दृष्टियों से अत्याचार करते हैं, ऐसा कहना ही न्यायसंगत होगा। और एक क्षण के

लिए इस बात पर भी विचार कर कि हिन्दू समाज में अस्पृश्यता का यह पाप ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ही नहीं करते अपितु हम थिय्या भी तो इस पाप में भागीदार होने से मुक्त होने का दावा नहीं कर सकते। जब नायर हमसे यह कह सकते हैं कि छुओ मत तो हम महारों को इतना क्रोध आता है—यह है भी उचित। किन्तु महार थिय्या भी तो वादकों को अपनी पंक्ति व समाज में मिलाना अनिष्टकारक मानते हैं। वे भी तो उन्हें पास से नहीं गुजरने देते और उन्हें जब हम अपने से अलग करते हैं तो उन्हें भी बुरा ही लगता होगा। अतः इस पाप का प्रक्षालन तो हम सब हिन्दुओं को मिलकर ही करना होगा। और उस पाप के प्रक्षालन का मार्ग मुसलमान हो जाना है क्या? तेरी बुद्धि यह स्वीकार करती है? एक बार नहीं हजार बार यह बात कही जा सकती है कि छूआछूत ने ही हिन्दुओं में अस्पृश्यता का प्रसार किया है, किन्तु जिसे मुसलमान ईश्वरीय आज्ञा समझते हैं। क्या वह भयंकर अस्पृश्यता नहीं है? कारण यह है कि २० करोड़ मुसलमानों को छोड़कर जो अवशिष्ट सैंकड़ों कोटि लोग इस धरती पर हैं, मुसलमानी मत के अनुसार क्या वे अस्पृश्यों से अधिक अस्पृश्य नहीं हैं? उनका उद्धार नहीं हो सकता, उनकी मुक्ति का कोई मार्ग नहीं। उनके हजारों पूर्वज साधु, सन्त, सभी नरक में गए हैं व जाएंगे। पैगम्बर की पुस्तक पर विश्वास न करने वालों को परमात्मा भी स्पर्श नहीं करता, ऐसा कुरान का वाक्य बताया जाता है! इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर भी उनके मतानुसार स्पृश्य और अस्पृश्य का विचार रखता है। हम हिन्दू अस्पृश्यों को तो अपने पुनीत आचरण द्वारा पुनः जन्म ग्रहण करने पर स्पृश्य होने की आशा है, परन्तु मुसलमान मत के अनुसार तो जो अस्पृश्य हैं और जिनकी संख्या सैंकड़ों-करोड़ों है, उनका पुनर्जन्म ही नहीं होगा। वे नरक में ही गलेंगे-सड़ेंगे। उनकी ओर ईश्वर भी दृष्टिपात नहीं करेगा, केवल जो मुसलमान हैं वे ही स्वर्ग के अधिकारी हैं। शेष सारा संसार तुम्हारे रामचन्द्र, श्रीकृष्ण, पांडुरंग, भक्त पुंडलिक सहित नरक में पड़ा सड़ रहा है। अस्पृश्यता त्याज्य है, परन्तु मुसलमानों की इस भयंकर

अस्पृश्यता की तुलना में क्या हिन्दुओं में विद्यमान अस्पृश्यता वरदान ही नहीं है ? साथ ही इस बात पर भी ध्यान देना अभीष्ट है कि अस्पृश्यता को दूर करने के लिए हम सब हिन्दुओं को मिलकर ही इस रूढ़ि को तोड़ना होगा। क्या इस कार्य के लिए तुम हिन्दू धर्म का ही परित्याग कर देने की निन्दनीय कल्पना करते हो ? अस्पृश्यता का अर्थ सांगोपांग हिन्दू धर्म नहीं है। घर में एक घूस ने बिल बना लिया है, सांप भी उसमें आ सकता है, अतः तुम्हें उस बिल को बन्द करना होगा। किन्तु क्या उस एक बिल के कारण ही तुम अपनी थिय्या जाति के अनेक पूर्वजों के भी पूर्वजों की दृष्टि में पवित्र और प्रिय इस हिन्दू धर्म के मन्दिर को छोड़कर दर-दर भटकना पसन्द करोगे। मैं समझता हूँ कि ऐसा करने का कोई कारण नहीं है।

थिय्या लोग अन्यों की दृष्टि में अंत्यज हैं, फिर भी उन्हें अपनी जाति का, रीति-रिवाजों का और कर्म का प्रखर अभिमान है। उनके पूर्वजों की कोई निन्दा करे, यह उन्हें तनिक भी नहीं सुहाता। उनके इसी प्रखर पूर्वजाभिमान और जाति-प्रेम ने उन्हें आज तक भी ईसाइयों और मुसलमानों के जाल में पूरी तरह नहीं फँसने दिया है। उनमें अनेक साधु-सन्त हुए हैं। आज भी उनमें अनेक बैरिस्टर, वकील, डाक्टर तथा पत्रकार हैं। तथापि उनमें से अनेकों उतावले तरुणों को अपने हिन्दू समाज की अस्पृश्यता के अन्याय और घातक रूढ़ि ने अपने धर्म से बलात् धक्का देकर दूसरे धर्मों में धकेल दिया है। थिय्या जाति के विधर्मी बने तरुणों को इस ग़लत मार्ग से पुनः सही मार्ग पर लाने के लिए जिन थिय्या नेताओं ने प्रयत्न आरम्भ किया था कम्बु उनमें अग्रगण्य है। ऐसे इस हिन्दू धर्माभिमानी महार बन्धु का तालाब पर स्पृश्य लोगों द्वारा इतना अपमान किए जाने पर भी उसकी हिन्दू जाति के प्रति इतनी प्रगाढ़ निष्ठा देखकर वह तरुण भी प्रभावित हुआ और उसने कम्बु के चरणों का स्पर्श करते हुए कहा, "मैं अब अपना सम्पूर्ण जीवन ही हिन्दू जाति में प्रचलित अस्पृश्यता सरीखी रूढ़ियों को समाप्त करने में लगा दूँगा। जिस प्रकार भी आप कहेंगे, उसी प्रकार मैं हिन्दू जाति

की सेवा करने के लिए सिद्ध हूँ।" कम्बु बोला, "आज हिन्दू धर्म की सेवा और संरक्षण के लिए जितने स्वयं सेवकों व स्वेच्छा से सैनिक बनने वालों की आवश्यकता है, उतनी इससे पूर्व कभी भी नहीं थी। मेरी ऐसी आकांक्षा-महत्त्वाकांक्षा है कि आज तक हिन्दू धर्म का संरक्षण जितनी प्रमुखता से ब्राह्मणों और क्षत्रियों ने किया है, वैसे ही अब हम शिष्यों को करना होगा। हिन्दू धर्म के लिए धर्मवीरत्व को प्रदर्शित करते हुए स्पृश्यों के स्थान पर हम अस्पृश्यों को, ब्राह्मणों की जगह हम महारों को अधिक शौर्य का प्रदर्शन कर दिग्दिगन्त में उसका जय-जयकार गुंजाना होगा, यही मेरी महत्त्वाकांक्षा है। चल, अपने मलाबार के हिन्दुओं पर जो भयंकर संकट शीघ्र ही आने वाला है, जिसकी कल्पना इन वेदों के घोष में निमग्न ब्राह्मणों को किंचित् मात्र भी नहीं हो पाई है, उस संकट का निराकरण करने के लिए मेरे साथ चल।"

□ | २

उस तरुण को साथ लेकर कम्बु अपने महारवाड़े से निकलकर ग्राम की पगडंडी पर चढ़ता-चढ़ता नारियल और पोफली के वृक्षों के वन में जा खड़ा हुआ। वे उस वन में आकर गुपचुप खड़े हो गए, जिससे कि किसी ब्राह्मण की दृष्टि उन पर न पड़ने पाए। क्योंकि यदि वह जोर से बोलता तो स्नान-संन्ध्या निरत ब्राह्मणों का अनिष्ट हो जाता। इसलिए वह अपने हाथ के इंगित से दामू को अपने साथ आने का निर्देश देता रहा और वे दोनों एक वृक्ष के नीचे आकर बैठ गए।

इधर ब्राह्मणों के घरों में होने वाला प्रातःकालीन वेदघोष भी संपन्न हो चुका था। हरिहर शास्त्री के द्वार से निकलकर उनकी पन्द्रह वर्षीय कन्या और लगभग १८ वर्ष का पुत्र नारियल के एक उद्यान में जहां विभिन्न रंगों के पुष्प भी लगे हुए थे, पुष्प-चयन के लिए आ पहुँचे। पुष्प-चयन के साथ ही साथ यह बालक और बालिका संस्कृत श्लोक बोलते जाते थे और श्लोक के अन्तिम अक्षर को लेकर दूसरा उससे आरम्भ होने वाले श्लोक का उच्चारण करता था। इस प्रकार बीच-बीच में उनका सुमधुर हास्य भी गूंज उठता था। हरिहर शास्त्री यद्यपि नम्बूद्री ब्राह्मण थे फिर भी वे जब से एक बार मद्रास-पर्यन्त हो आए थे तब से उनके मन को इस सम्बन्ध में कोई शंका नहीं रह गई थी कि इस जगत् में आग-गाड़ी और तारयंत्र जैसे पदार्थ भी हैं। किन्तु इतना ही नहीं, वे उन ब्राह्मणों की शंका का भी समाधान करते थे जिन्होंने अपनी सम्पूर्ण आयु नारियल और पोफली के वृक्षों से आच्छादित वनों में

ही व्यतीत कर दी थी और जिन्हें इस सम्बन्ध में कोई जानकारी ही नहीं थी कि यज्ञशाला के बाहर भी अग्नि कोई अन्य रूप धारण कर लेती है। जब हरिहर शास्त्री इन ब्राह्मणों से आग-गाड़ी अथवा तार-यंत्र आदि की चर्चा करते थे तो उन्हें विश्वास न हो पाता था। उस समय हरिहर शास्त्री उनकी शंका का समाधान करने के लिए वेदों में से भी आग-गाड़ी और तार-यंत्रों का उल्लेख खोज निकालते थे। हरिहर शास्त्री उद्भट विद्वान थे। अब तो मद्रास-पर्यन्त की उनकी यात्रा ने उनकी विद्वत्ता पर और भी धार चढ़ा दी थी। उन्हें विद्यमान सामाजिक और राष्ट्रीय स्थिति की कल्पना थी और वे समाज में व्याप्त बुराइयों के उन्मूलन के संबन्ध में विचार करते थे। उनके घर में काम करने वाले नौकर पर्यन्त थोड़ी बहुत संस्कृत समझ लेते थे। वे अपने घर के आँगन में खड़े हुए बाग में फूल तोड़ते हुए अपने दोनों बालकों की लीला का अवलोकन कर रहे थे। इधर उनकी पुत्री अपने भाई से खेल-खेल में रुष्ट होती हुई कहने लगी। 'भाऊ! अब मैं तुम्हारे साथ नहीं खेलूंगी। यह श्लोक तुमने नियम से बाहर श्लोक कहा है। पंच-महाकाव्यों में से किसी का भी यह श्लोक नहीं है और पंच-महाकाव्यों में से ही श्लोक बोलने की तुम्हारी प्रतिज्ञा थी।'

'परन्तु सुमति! यह श्लोक तो रघुवंश का है।'

'कदापि नहीं—' 'चलो! तुम से मेरी शर्त रही!' 'हाँ-हाँ, चल शर्त ही सही, बाबा से ही निर्णय कराए लेते हैं। 'कहिए न बाबा' उसका भाई बोला, 'बाबा! सीते दुस्सहनं वनं!' क्या यह श्लोक कालिदास का नहीं है?' 'नहीं बाल,' शास्त्री ने कहा। किन्तु यह कहाँ का है, यदि सुमति ने यह बता दिया तो मैं समझूंगा कि वह जीत गई है!' 'हाँ-हाँ, यह रामायण का श्लोक है,' सुमति तत्काल बोल उठी। 'यह सही है' तथापि रामायण के कतिपय अनुष्ठुपे भी कालिदास के अनुष्ठुपों से इतने अधिक मिलते हैं कि जितने गीता के उपनिषद् से।' अतः यदि बाल से भूल हो गई तो इसमें सुमति तुम्हारे लिए दोष देने का कोई अवसर नहीं है।' सुमति कुछ क्रुद्ध-सी होती

हुई बोली, 'छोड़िए, इससे कुछ नहीं होता।' उसी समय उसके पैरों से थोड़ी-सी ही दूरी पर बड़ी तेजी से एक सर्प दौड़ता हुआ दिखाई दिया। शास्त्री किंचित मात्र भी न चौंकते हुए बोले, 'सुमते! देख तो मेरा फणीन्द्र तेरे चरणों में क्या विनती करने आया है। आज प्रातःकाल फूल तोड़ते समय तूने उसे वह गीत नहीं सुनाया जो तू प्रतिदिन गाती थी। यही कहने के लिए वह आया है, उसे सुना दे वह गीत।'

उस साँप को 'फणीन्द्र-फणीन्द्र' कहते हुए वे दोनों ही बालक उसके साथ खेलने लगे। वे कभी चुटकी बजाकर उसे बुलाते थे तो कभी पुचकार कर आगे आने का इशारा करते थे। उनके खेलते ही खेलते वहाँ दो तीन सर्प और भी आ गए। वे भी अपने बिलों से निकल कर उनके साथ खेलने लग गए। यहाँ जिस प्रकार आप लोग अपने घरों में कुत्ते और बिल्लियाँ पालते हैं, उसी प्रकार मलाबार में सभी जातियों के लोग घरों के आँगन में सर्पों को निवास करने देते हैं। जिस प्रकार आपके मन में यह कल्पना भी नहीं आ पाती कि कुत्ता भी प्राणघातक सिद्ध हो सकता है, इसी भाँति यहाँ के निवासी सर्पों से किंचित मात्र भी भयभीत नहीं होते। किन्तु ऐसी बात भी नहीं है कि सर्प कभी किसी पर वार ही नहीं करता हो! तथापि मलाबार में सर्प की हत्या करना सामान्यतः क्रूरता समझी जाती है। अतः अनेक स्थानों पर पालतू पशुओं के समान ही सर्प भी गृह-आँगन से चौखटों तक, चौखटों से गृह आँगन तक में विचरण करते हुए दृष्टिगोचर हो जाते हैं। हरिहर शास्त्री को अपने उद्यान में विचरण करने वाले सर्पों से केवल धार्मिक दयाभावना अथवा सामाजिक रूढ़िमात्र के कारण ही प्रेम नहीं था, अपितु सर्पों के प्रति उनके मन में विद्यमान वात्सल्य-भावना का एक विशेष कारण भी था। कारण यह था कि जिस सर्प ने उसकी कन्या के पैरों के समीप आकर बड़े लाड़ सहित कुण्डली मारी थी। उस सर्प का अपनी सन्तान के तुल्य ही पालन करने का निर्देश उन्हें उनके पिता ने ही-देह त्याग करते समय दिया था। हरिहर शास्त्री के वृद्ध पिता एक दिन वनांचल से गुजर रहे थे और वर्षा की रिमझिम

फुहारें पड़ रही थीं। उन्होंने अपने सिर पर वर्षा से भीगने से बचने लिए ताड़पत्रों की बनी एक छत्री लगाई हुई थी। वर्षा के कारण शीत बढ़ रहा था और वन्य पशु भी इस ठंड से बचने के लिए यत्र-तत्र शरण लेने का स्थान खोज रहे थे। ऐसे समय ही जब वह वृद्ध एक नागफनी के वृक्ष के समीप से होकर गुजरा तो उस वृद्ध ब्राह्मण की छत्री में एक नाग का बच्चा आ गिरा। वह उसकी छत्री के डण्डे में लटक गया और वृद्ध ब्राह्मण उसे अपने घर ले आया और दयालु हृदय वाले इस ब्राह्मण ने उसे एक गर्म कपड़े में लपेट दिया। धीरे-धीरे उन्होंने अपने बाग में ही उस सर्प के लिए रहने की एक सुन्दर बाँबी भी बना दी! वही वह नाग का बच्चा धीरे-धीरे बढ़ता रहा और एक नितान्त भयंकर सर्प का रूप धारण कर गया। यद्यपि वह सर्प दूसरों को देखने में बड़ा ही भयंकर प्रतीत होता था किन्तु वृद्ध ब्राह्मण की वस्तुओं पर और उसके हाथों पर बालकों के समान खेलता रहता था। उसी पुष्पवाटिका में रहने वाली सर्पिणियों के सम्पर्क में आने के कारण उसकी संतति भी बढ़ती जा रही थी! ये सभी सर्प बड़ी ही स्वच्छन्दता सहित उपवन में विचरण करते थे और उसके समीप ही स्थित अनाज के भण्डार का रात्रि में पहरा भी देते थे।

एक दिन रात्रि के समय कुछ चोर शास्त्री के घर में धन और धान्य चुराने के लिए जब वे द्वार से भीतर प्रवेश करने लगे तो उस भयंकर नाग ने अपनी तीव्र फुंकारें मारनी आरम्भ कर दीं और अपने विशाल फन को उठाकर वह उनके सामने आकर खड़ा हो गया। उसके सामने आ जाने के कारण चोर कुछ भयभीत हो गये और अभी उन्होंने सर्प को मार्ग से हटाने के लिए शस्त्र उठाया ही था कि आस-पास घूमने वाले सभी सर्पों की भयंकर फुंकारें गूंज उठीं और उन्होंने अपने फणों से चोरों पर प्रहार भी किये। चोर अन्धकार में भाग निकले। अभी वह शास्त्री के द्वार से तीस-चालीस फुट की दूरी पर ही जा पाये होंगे कि सर्पदंश के कारण शरीर में फैले विष से मूर्छित होकर गिर पड़े। प्रात:काल वृद्ध शास्त्री उठे तो उन्होंने देखा कि एक

चोर चोरी के माल की गठरी पर ही मरा हुआ पड़ा है। कोई भयंकर विष की वेदना के कारण मरणासन्न हो गया है। किन्तु किसी कर्तव्य-निष्ठ पुलिस अधिकारी के समान वह नाग उन सब चोरों पर पहरा दे रहा था। शास्त्री महोदय ने बड़ी कौतूहलपूर्ण दृष्टि से यह दृश्य देखा। उनके मन में दया की भावना उमड़ पड़ी और उन्होंने समझा कि चोरी के आरोप में प्राणदण्ड अत्यधिक है अतः सर्पदंश का वह रामबाण उपाय किया, जिसकी जानकारी मलाबार में अनेक लोगों को है। उस रामबाण उपाय द्वारा उन्होंने चोरों को पुनः चैतन्य प्रदान किया और छोड़ दिया। उसी दिन ग्राम में यह किंवदन्ती फैल गयी कि यह नाग शास्त्री महोदय का ही कोई पूर्वज है और उसने उस घर पर पहरा देने के लिए ही जन्म ग्रहण किया है। इस ख्याति के साथ ही साथ एक विशेष बात यह भी थी कि इस नाग को अपनी शैशव अवस्था से ही इस सुन्दर कुमारी से प्रेम था। सर्पों के प्रेम में फंसी कुमारी के जीवन के लिए खतरा होता है ऐसा भी कभी-कभी होता है। परन्तु इस नाग का इस कुमारी से प्रेम ऐसा नहीं था। वह सर्प तो एक चंचल स्नेहीजन के समान उस कन्या के आस-पास घूमता था उसी के हाथ से दिया गया दूध पीता था, उससे गीत सुनता था और दिन में कम से कम एक बार जब यह कन्या अपने कोमल हाथों से उसे सहला देती थी तो वह दिन भर स्वर्गीय आनन्द का अनुभव करता था। किसी-किसी दिन उसके स्पर्शमात्र से ही इस नाग को सन्तोष नहीं हो पाता था और वह उसके मुख पर टक लगाने की उच्छृंखल इच्छा से भी विह्वल हो उठता था और यदि वह इच्छा पूर्ण नहीं हो पाती थी तो वह दूध भी नहीं पीता था। और अन्ततः जब सुमति अपना हाथ उसकी ओर कर देती थी और अपने सुकोमल हाथ से एक नागिन केसमान उसे दुलराती और सहलाती थी तथा उसके नेत्रों को अपनी कुन्दन वदन चन्द्रिका का रसपान करने देती थी, तभी वह नाग दूध पीता था। हरिहर शास्त्री को भी यह दृश्य देखकर आनन्दानुभूति होती थी। इस प्रकार हरिहर शास्त्री और सुमति ही क्या घर

के सभी लोग उस नाग को अपने पारिवारिक जन के तुल्य ही स्नेह करते थे।

उस सर्प के साथ खेलते-खेलते ही सुमति की दृष्टि सामने की ओर गई तो उसे ऐसा लगा कि दूर खड़ा कोई हाथ के इशारे से बुला रहा है। वह बोल उठी, "बाबा ! देखो तो वह कौन है ? आप यहाँ खड़े हैं, यह उसे पता है, किन्तु वह यहीं क्यों खड़ा हुआ है ?" हरिहर शास्त्री ने उस ओर दृष्टिपात किया और बोले, "वह थिय्यों का नेता कम्बु है।" सुमति कई बार अपने पिता के मुख से कम्बु की प्रशंसा सुन चुकी थी अतः बोली, "बाबा, ऐसे विद्वान मनुष्य को यहीं क्यों नहीं बुला लेते ?" शास्त्री बोले, "अरे ! यदि मैंने थिय्या को यहाँ बुला लिया तो कल ये सारे ब्राह्मण मुझे ही यहाँ से निकाल कर बाहर कर देंगे, अतः मैं ही उसके पास चला जाता हूँ।"

सुमति तत्काल हँसती हुई बोल उठी, "बाबा क्या यह अच्छी बात है ! ब्राह्मणों की इस बस्ती में घूमने वाले इन गन्दे कुत्तों और सर्पों से भी थिय्या लोग अधिक मलीन और भयंकर हैं क्या ?" ऐसा तीखा प्रश्न करने के उपरान्त बालिका अपने सहज बाल सुलभ स्वभाव के अनुसार पुनः खेलने लगी। बालिका घर वापस लौट गई और शास्त्री अपने तरुण पुत्र को साथ लेकर उस थिय्या की ओर चल पड़े। सुमति भी मार्ग के समीप में ही स्थित एक घर की ओर चली गई और वहाँ जाकर अपने पिता और उस थिय्या के बीच कैसे वार्तालाप होता है, यह देखने के लिए खड़ी हो गई।

हरिहर शास्त्री भी तपोवन के समान शान्त और निर्भय प्रतीत होने वाले ब्राह्मणागार से चल पड़े। उधर कोकिला की सुमधुर कूक गूंज रही थी, गाएं रम्भा रही थीं और साथ ही साथ वेदमन्त्रों की पावन ध्वनि की गूंज भी सुनाई दे रही थी। एक स्थान पर दो-तीन शास्त्री बड़ी गम्भीरता सहित प्रदक्षिणा के समय दोनों पैरों में कितना अन्तर होना चाहिए इस सम्बन्ध में स्मृति में कोई सुनिश्चित और स्पष्ट व्यवस्था की गई है अथवा नहीं, इस महत्त्वपूर्ण विषय पर चर्चा

करने में तल्लीन थे। शास्त्री अन्ततः वहाँ जा पहुँचे जहा कम्बु खड़ा हुआ था और पर्याप्त दूरी पर खड़े होकर उससे वार्ता करने लगे। कभी कुछ मन्द और कभी थोड़ी तेज आवाज़ में उनकी वार्ता होने लगी। बातचीत करते-करते कम्बु ने कहा, "आप इस सम्बन्ध में कोई शंका न कीजिए महाराजा! जिस घर में सुरंग लगाई जाती है, उसमें सुरंग लगते ही कोई गड़बड़ दृष्टिगोचर नहीं होती। परन्तु यदि उस घर में निश्चित रूप से निवास करने वाले लोगों को कोई व्यक्ति यह कहे कि इस घर में सुरंग लगाए जाने की बात ही गलत है तो यह एक खोटी बात होगी। किन्तु जब घर के नीचे लगी हुई सुरंग में सहसा ही विस्फोट होता है, तभी उस घर में निवास करने वालों को सत्य का साक्षात्कार, हो जाता है, और उस समय सुरंग लगाए जाने की बात को गलत कहने वाले के भुलावा डालने वाले प्रपंच का पता लगता है। आज आपकी ब्राह्मण बस्ती की स्थिति भी ऐसी ही है। उस मौलवी ने मुझे कई बार कहा है कि तुम्हें व तुम्हारे थिय्या बन्धुबान्धवों को उस मार्ग से भी अनिष्ट होने की आशंका से जाने नहीं दिया जाता जिस पर कुत्ते स्वच्छन्द घूमते हैं। यदि इन्हीं ब्राह्मणों और मराठों की पुत्रियों को लाकर उन्हें तुम्हारे साथ न रख दूँ तो मैं मौल्वी नहीं! जो भी थिय्या आज मुसलमान बनेंगे तथा शीघ्र ही होने वाले विद्रोह में भाग लेंगे उनमें से प्रत्येक को उसकी मन पसन्द ब्राह्मण कन्या एक मास की अवधि के भीतर ही सौंप दी जाएगी। महाराज क्रोध न कीजिए! मलाबार में आज यों तो कोई गड़बड़ नहीं दिखाई देती, आज आपके इस शान्त तपोवन में जहाँ कोकिला की मधुर तान सुनाई पड़ती है वहाँ ही मोपले मुसलमानों द्वारा राक्षसी युद्ध की भयंकर सुरंग बिछाई जा रही है।"

उस थिय्या के इस कथन का शास्त्री महोदय पर भी थोड़ा-सा प्रभाव हुआ और उन्होंने कुछ चिन्तायुक्त आवाज में कहा, "उस मौलवी सरीखे दस-पाँच धर्मोन्मत्त लोगों की मार-धाड़ से भयभीत हो जाए, ब्रिटिश राज्य इतना दुर्बल है क्या?'

"दस-पाँच धर्मोन्मत्त मौलवी ही नहीं, किन्तु प्रत्येक मोपला इस विद्रोह में शस्त्र धारण कर खिलाफत के लिए उठ खड़ा होगा। इस बात के साथ-ही-साथ मुझे उस मौलवी ने यह भी बताया है कि 'अरबस्थान से गोलाबारूद समुद्र मार्ग से उनके पास पहुँचेगा और इसके साथ ही साथ अफगानिस्तान का अमीर भी ५०-६० हजार सैनिकों सहित हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने वाला है। हमारे विद्रोह करने में अभी कुछ देर है। हम ज्योंही विद्रोह करेंगे उसके तीन-मास के उपरान्त ही तुर्कस्थान का ध्वज फहराते हुए अनवर बेग भी हमसे आकर मिलने वाला है।' यह बात वह मौलवी मुझसे बारम्बार कहता है।"

"यह अनवर बेग कौन है?"

"वह तुर्क है और उसे हिन्दुस्तान के मुसलमान सम्पूर्ण विश्व के मुसलमानों को स्वतन्त्र करने के लिए जन्म ग्रहण करने वाला ईश्वरीय वीर समझते हैं।"

"अरे किन्तु, यदि वह अनवर तुर्क है तो यह तो बताओ कि वह इन मोपलों का कौन लगता है? ये मोपले तो हमी हिन्दुओं के वंशज हैं न।"

"महाराज आप भूल कर रहे हैं। वे तो अपने-आपको अरबस्थान के मुहम्मद के कुरैशी वंश का समझने लगे हैं। एक बार अरबी अथवा किसी कुरैशी द्वारा तो हिन्दू के प्रति किसी ममत्व-भावना का प्रदर्शन किया जाना संभव है; परन्तु ये मोपले—हम हिन्दुओं के ही वंशज, हिन्दुओं के प्रति उतनी ममता का प्रदर्शन नहीं करेंगे। दस-पन्द्रह वर्ष पूर्व भी एक बार मोपलों ने दंगा किया था। क्या उन दिनों इन्होंने अरनाड तालुका में अनेक हिन्दुओं को बलात् मुसलमान नहीं बनाया था, क्या उन्होंने मुसलमान न होने वालों की हत्याएँ नहीं की थीं? उस समय का आपको स्मरण होगा ही!"

"क्या कहते हो। वह दंगा करने वाले ये मोपले ही थे?" किसी मर्मभेदक जानकारी के उपलब्ध होने पर मानव मन में चिन्ता का

उद्भव होना स्वाभाविक ही है। अतः शास्त्री महोदय भी चिन्तामग्न हो गए। यों तो उस दंगे में क्या कुछ हुआ था इसका विचार भी कुटुम ग्रामवासी ब्राह्मणों तथा अन्य हिन्दुओं ने कभी नहीं किया था। क्योंकि यह घटना उनके ग्राम में नहीं हुई थी और दूसरे ग्राम में क्या होता है उसके संबंध में विचार करने की सजगता यदि हिन्दू समाज में होती तो वह दुर्दिन ही क्यों उपस्थित होता। किन्तु हरिहर शास्त्री को इस दंगे की इतनी तीव्र स्मृति हो आने का कारण भी इतना ही तीव्र था। वह कारण यह था कि उनकी अपनी नानी को उस दंगे के समय पास के ग्राम के मुसलमानों ने उनके घर से उठा कर बलात् एक वर्ष तक एक मुसलमान के घर में रखा था, और अन्ततः उस साध्वी ने अन्न जल का परित्याग कर अपने प्राण समर्पित कर दिए थे। यह स्मृति आते ही कि उसके साथ मोपलों ने क्या किया था। शास्त्री महोदय के हृदय पर एक तीव्र आघात-सा लगा। कम्बु थिय्या ने जो कुछ कहा था उससे उनके मन पर भयंकर आघात लगा था किन्तु वे पुनः विचारने लगे और बोले, "क्या कहते हो? ये मोपले पुनः उपद्रव करने वाले हैं? किन्तु क्यों भाई, अपने इस कुटुम ग्राम में तो कभी ऐसा नहीं हुआ। उसका कारण भी है और वह यह कि इस ग्राम में मोपलों के पांच-छह ही तो घर हैं; और फिर ये तो हैं भी निर्धन। साथ ही ये धर्मान्ध भी तो नहीं। ये अपने ही ग्राम के अस्पृश्य हिन्दुओं के तो वंशज हैं। जो कुछ होगा वह तो अरनाड तालुका में होगा अपने ग्राम में तो ऐसा कोई खतरा दिखाई नहीं देता।"

"महाराज, क्या कहा कि इस ग्राम पर कोई संकट नहीं आएगा? अहो! हिन्दू अस्पृश्यों के ही वंशज जो चार-पांच मोपला कुटुम्ब आपको गरीब दिखाई देते हैं, उन्हीं के साथ वह मौलवी भी है न। वही मौलवी जिसने मुझे तथा मुसलमान होने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक थिय्या को उसकी मन पसन्द ब्राह्मण व नायर कन्या अर्पित करने की घोषणा की है। इस बार सभी मोपले एक साथ ही विद्रोह आरम्भ करने वाले हैं। यदि यह मान भी लिया जाए कि अरनाड

तालुका में निवास करने वाले हिन्दुओं के समक्ष भले ही भयंकर संकट उपस्थित हो जाए, किन्तु आपके इस कुटुम्ब-ग्राम में शान्ति ही बनी रहेगी तो भी मैं सोचता हूँ कि क्या अरनाड तालुका के हिन्दुओं के समक्ष उपस्थित होने वाले भयंकर संकट में हम भागीदार नहीं बनेंगे ? उनकी स्त्रियों और बच्चों पर जो संकट आएगा वह संकट अपने ही परिवार पर आया है, क्या ऐसा समझकर आप उनकी सहायतार्थ नहीं दौड़ेंगे ? क्या वहाँ के हिन्दुओं की बहिनें आपकी बहिनें नहीं हैं ? क्या उनके देवालय आपके देवालय नहीं हैं ? यदि उनका नाश हुआ तो भी तो अपना ही नाश होगा। जहाँ सर्व हिन्दू जाति के सुख-दुख का प्रश्न है वहाँ तो हमें पेशावर से महारवाड़े के हिन्दू की झोंपड़ी को रामेश्वरम् नगर की सीमा तक स्थित हिन्दू घर के समान ही समझना चाहिए। क्या आज अरनाड के हिन्दू पर आया संकट कुटुम्ब के लोगों के लिए संकट नहीं होगा? अरनाड के मुसलमानों ने तुम हिन्दुओं की पुत्रियों का अपहरण किया है, तुम्हारी मूर्तियाँ भ्रष्ट की हैं, यह बात जब कोई मुसलमान कहता है तो क्या हमारे मुख पर लज्जा से कालिमा नहीं पुत जाती ? वस्तुतः वह हमारे ही मुख पर जड़ा गया तमाचा है। किन्तु ये सब बातें छोड़िए, मुझे क्षमा करना, मैं आपको स्पष्ट शब्दों में कह देना चाहता हूँ, मुझे निष्ठुर कर्तव्य के कारण यह कठोर बात कहने पर विवश होना पड़ रहा है कि एकाध कांचनलता के समान मोहक तथा प्राणों सरीखी प्रिय, ऐसी जो आपकी कन्या अभी पुष्पवाटिका से आपके घर की ओर गई है, महाराज ! उसके पवित्र सम्मान और जीवन की होली न जलने पाए यदि आपकी ऐसी इच्छा हो तो आप समय रहते सावधान हो जाइए।"

हरिहर शास्त्री का मस्तिष्क ही चकरा उठा। परन्तु मानव स्वभाव बड़ा ही चमत्कारिक है कि अपना अपमान हो तो वह सहन कर पाता है। किन्तु यदि उसका कोई नाम लेकर अपमान करे तो वह सहन नहीं कर पाता। अपनी प्रिय, सुन्दर तथा सुशिक्षित कन्या का नाम लेकर इस कम्बु थिय्या ने जो इतनी भयंकर भविष्यवाणी की थी उससे उन्हें

अत्यधिक विषाद का अनुभव हुआ। वह हतप्रभ से हो गए थे। अब उनके मुख पर चिन्ता की रेखाएं उभर आई थीं। किन्तु उन्होंने पुनः अपने विवेक को सँवारा और बोले, "कम्बु! तो बता इस अन्याय के प्रतिकार का उपाय क्या है? बोल क्या किया जाए? आजकल क्या हिन्दु मुसलमानों में एकता स्थापित नहीं हो गई है? खिलाफत को हिन्दुओं ने अपने धर्म के समान ही अपना प्रश्न बना लिया है। मुसलमान भी अपने वचनों का पालन करेंगे, क्या ऐसा नहीं होगा? परन्तु तुम कहते हो कि विद्रोह होगा, भला यह विद्रोह हिन्दुओं के विरुद्ध किसलिए किया जाएगा, बता न?"

"महाराज! इस भावी अनर्थ का प्रतिकार किस प्रकार किया जाए, यदि इस सम्बन्ध में विचार करना है तो उसका प्रथम उपाय यह है कि हम इस विचार का परित्याग करें कि हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य स्थापित हुई यह एकता हिन्दुओं की सुरक्षा की पोषक है। आपने जो वाक्य कहा है, उसका पूर्वार्द्ध ही सत्य है कि हिन्दुओं ने खिलाफत के प्रश्न को अपने धार्मिक प्रश्न के समान ही समझा है, किन्तु आपके वाक्य का उत्तरार्ध अवास्तविक है, "कि हिन्दुओं ने खिलाफत का प्रश्न अपना लिया है अतः मुसलमान भी हिन्दुओं के किसी शब्द की उपेक्षा नहीं करेंगे, आप ऐसा न मानकर यह समझ लीजिए कि हिन्दु अपने वचनों से कदापि विमुख नहीं होंगे, परन्तु मुसलमानों के बारे मे यही कहना उपयुक्त प्रतीत नहीं होता है। इस सत्य स्थिति से हिन्दुओं को परिचित कराना आवश्यक है जिससे वे असावधानी का परित्याग कर आने वाले संकट का सामना करने के लिए सन्नद्ध हो सकें। प्रतिकार का पहला उपाय यही है। किन्तु यह उपाय ही अन्तिम उपाय नहीं। क्योंकि हिन्दुओं के आधार पर मुसलमानों ने इस विद्रोह की सिद्धता नहीं की है। वे साथ आएं अथवा न आएं खिलाफत आन्दोलन चलाया ही जाएगा, यही उनकी युद्धगर्जना है! अतः दूसरा त्वरित उपायजिस को अपनाया जाना आवश्यक है, वह यह है कि हिन्दुओं को स्वसंरक्षणार्थ तत्काल पृथक्

निर्णय करना होगा। यह काम तत्काल आरम्भ कर दिया जाना चाहिए। वह मौलवी दो-तीन दिन में ही अरनाड होकर वहाँ होने वाली मुख्य सभा में यह प्रतिवेदन देगा कि कुट्टम ग्राम के थिय्या लोग स्वेच्छा सहित मुसलमान होने को तैयार नहीं हैं। अन्य जातियों से तो यह बात कही ही नहीं जाएगी। कुट्टम ग्राम का नाम भी उनके द्वारा उस सूची में सम्मिलित कर लिया जाएगा जिनकी सूची इस दृष्टि से बनाई गई है कि विजय के उपरान्त यहां की जनता को बलात् मुस्लिम धर्म स्वीकार कराया जाएगा और उनकी सम्पूर्ण सम्पत्ति को काफिरों की समझकर लूट लिया जाएगा। इस व्यवस्था के अनुसार हिन्दू स्त्रियाँ भी धर्मवीरों की न्याय सिद्ध लूट का माल बनेंगी। यह भी सुनिश्चित है कि इस लूट में इस पवित्र, निरपराध व लावण्यवती कन्या को वह नीच मौलवी अपने हिस्से में लेगा! महाराज, क्रोध न कीजिएगा! मुझ पर क्रोधित न हों, यदि क्रोध करना ही है तो उन नीचों के प्रति कीजिए जो पापकर्म की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं। मैंने तो समय से पूर्व ही एक दुष्टतापूर्ण कृत्य की सूचना और उसके परिणामों और उनसे बचने के सम्बन्ध में आपको सूचित कर दिया है। मेरी बातों की उपेक्षा न कीजिएगा अपितु उन पर विचार करके इस संकट का सामना करने और अन्यायियों से प्रतिशोध लेने की तैयारी कीजिए!"

"कम्बु! जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा! चल, बता कि किस प्रकार से कार्य आरम्भ किया जाए।"

"ठीक है महाराज, सर्वप्रथम मैं अरनाड जाऊँगा जहाँ मुसलमानों का मुख्य केन्द्र है। और वहां के मुस्लिम नेताओं ने कतिपय हिन्दू नेताओं को भी 'स्वराज्य' और 'एकता' का झांसा देकर चीनी में विष मिलाकर खिलाने जैसा उपक्रम किया है। सर्वप्रथम मैं उन भ्रमित हिन्दुओं को वस्तुस्थिति से अवगत कराने का यत्न करूँगा। यदि वे सही मार्ग पर आ गए तो बहुत अच्छा, अन्यथा आपको कुट्टम ग्राम के हिन्दू तरुणों को धर्मरक्षणार्थ सुसज्जित करना होगा। थिय्याओं में से भी अनेक तरुण इस कार्य के लिए तैयार हैं।"

इसी बीच कम्बु के साथ आया थिय्या युवक बोल उठा, "हाँ, हाँ, हम हिन्दू धर्म की रक्षार्थ आत्मबलिदान देने को भी सन्नद्ध हैं।"

"आप पाण्डव शिविर के समान इस ब्राह्मणागार में निश्चिन्त पड़े बन्धु-बान्धवों को सावधान कीजिए। मैं भी अरनाड से वापस आने के उपरान्त आपसे पुनः भेंट करूंगा!"

इधर इनकी यह वार्ता चल रही थी, तो दूसरी ओर सुमति जो अपने घर के मार्ग में कुछ समय तक खड़ी रही थी, धीरे-धीरे शास्त्री की दृष्टि उस पर न पड़े, इस संबंध में पूर्ण सर्तकता बरतती हुई आगे बढ़ती आ रही थी। और ऐसे स्थान पर आकर खड़ी हो गई थी जहाँ से उसे उनकी पूरी वार्ता तो सुनाई नहीं पड़ रही थी, किन्तु अस्पष्ट रूप में वह उसे सुन पा रही थी। वह ऐसे स्थान पर एक नारियल वृक्ष की आड़ लेकर चुपचाप खड़ी हो गई थी जहाँ से वह उन थिय्यों को स्पष्टतः देख सकती थी। उसे धीरे-धीरे आगे आते हुए उस तरुण ने भी देख लिया था। उसने भी उसे अपनी ओर निहारते हुए देखा था। उसने उसके निर्भीक शब्दों को भी सुना था। उसके मन में सहसा ही यह विचार कौंध गया था कि शरीर-रचना की दृष्टि से तो इस थिय्या तरुण की तुलना में कोई ब्राह्मण तरुण भी ठहर पाना कठिन है। किन्तु भला इसे अस्पृश्य समझे जानेवाली कौन सी बात है? जाति रूप में ऐसी क्या भिन्नता है? परन्तु जो ब्राह्मण और क्षत्रिय सर्पों तक को भी पालते हैं वे इनके प्रति इतनी निष्ठुरता का व्यवहार क्यों करते हैं? अपने हृदय में ऐसे सहानुभूतिपूर्ण विचार रमाए सुमति ने बड़ी ही सावधानी सहित उस थिय्या तरुण पर दृष्टिपात किया और उस तरुण की दृष्टि भी उसकी ओर मुड़ गई। उस तरुण के मन में भी यह विचार आया कि उसके साथ वार्तालाप करे। उसकी दृष्टि में ऐसी ही सहानुभूति की रेखा को पुनः देख पाने के लिए उसने मन ही मन यह भी निश्चय किया कि वह किसी भी महान कार्य के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर कर देगा।

इधर कम्बु और शास्त्री महोदय में चल रहा वार्तालाप समाप्त

हो गया और कम्बु ने साष्टांग दंडवत कर शास्त्री महोदय से विदाई ली। उस थिय्या तरुण ने भी चलते-चलते पीछे की ओर निहारा तो उस ब्राह्मण कन्या की वही सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि पुनः उस पर पड़ी। वह भी वृक्ष की आड़ लेकर खड़ी हुई थी। उसके मन में भी सान्निध्य की इच्छा थी और वह युवक आशा के अनुरूप ही सुन्दर थी।

हरिहर शास्त्री भी धीमी गति से अपने घर की ओर चल पड़े। उनके मन को यही विचार परेशान कर रहा था कि उनकी नानी के साथ जितना भयंकर अत्याचार हुआ था, क्या उनकी अपनी प्रिय पुत्री भी उसी प्रकार के अत्याचार की भेंट चढ़ जाएगी! छीः! इन सब विचारों को अपने हृदय में घुलाते रखने का धैर्य वे अब नहीं सँजो पा रहे थे। उस वन से वापस जाते हुए वह पुनः उस स्थान से होते हुए अपने घर की ओर जा रहे थे जहाँ स्मृति-शास्त्रों में प्रदक्षिणा में दो पैरों में कितने अन्तर की व्यवस्था की गई है इस सम्बन्ध में शास्त्री मंडली में विवाद चल रहा था। उस वाद-विवाद में अब बड़ी गर्मी आ चुकी थी। किन्तु शास्त्री महोदय को वह वाद-विवाद अब बड़ा कर्कश लग रहा था। और अब इस वाद-विवाद ने उनके भय को मानो द्विगुणित कर दिया था। और उन्हें लग रहा था कि कहीं कम्बु ने जो कुछ कहा है वही तो सही सिद्ध नहीं होगा।

☐ ३

कालीकट के एक विस्तीर्ण बँगले में खिलाफत मंडल की हिन्दू शाखा की सभा आयोजित की गई थी। पंजाब से खिलाफत-आन्दोलन के एक प्रमुख सूत्रधार अल्लाबख्श मलाबार के दौरे पर आए हुए थे। ग्राम के हिन्दू-मुसलमानों ने उनका प्रचण्ड स्वागत भी किया था। उस सभा में हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए हिन्दुओं को क्या करना चाहिए, इस विषय पर अल्लाबख्श का बड़ा ही प्रभावशाली भाषण हुआ। इतना अधिक प्रभावशाली था वह कि यहाँ उसकी शोभायात्रा निकाले जाते समय हिन्दुओं ने उसकी गाड़ी में से घोड़ों को हटाकर स्वयं उसके स्थान पर लग कर गाड़ी को खींचा। इस शोभायात्रा में सहसा ही किसी ने 'वन्देमातरम्' का जयघोष लगा दिया, किन्तु उस भले आदमी को ऐसा एक भी मूर्ख तथा अनुदार हिन्दू नहीं मिल पाया जो उसकी इस ध्वनि में अपनी ध्वनि मिला पाता। मुसलमानों ने इस शब्द का उच्चारण ही क्यों किया गया है, ऐसी आपत्ति उठाकर अपनी शान्तवृत्ति का परिचय दिया। उसी समय हिन्दू नेताओं ने ही यह आज्ञा दी कि सभी को 'अल्ला हो अकबर' का जयघोष लगाना चाहिए, जिससे कि संसार को यह दिखाया जा सके कि हिन्दू-मुसलमानों की एकता किस प्रकार सुदृढ़ होती जा रही है।

शोभायात्रा की समाप्ति पर रामनारायण नम्बूद्री, माधव नायर, सीताराम चेट्टी—इत्यादि हिन्दू नेता अल्लाबख्श सहित बँगले पर एकत्रित हुए। कालीकट में खिलाफत-आन्दोलन के प्रमुख पुरस्कर्ता

महानन्दी अय्यर भी वहाँ उपस्थित थे। अतः उन्हें सभा का अध्यक्षीय आसन प्रदान किया गया। उन्होंने कहा कि आज के व्याख्यान का कालीकट नगर के निवासियों पर जो प्रभाव हुआ है उसका त्वरित लाभ प्राप्त करने की दृष्टि से खिलाफत-आन्दोलन को बढ़ाने के लिए हिन्दुओं को किस प्रकार और क्या प्रयत्न आरम्भ करने होंगे इस विषय पर ही विचारार्थ इस सभा का आयोजन किया गया है।

माधव नायर ने कहा, "स्वराज्य और खिलाफत-आन्दोलन के लिए यह वाक्य प्रस्ताव में सम्मिलित किया जाना चाहिए।"

उनकी इस सहेतुक उद्दण्डता से चिढ़कर मौलाना एटखान बोले, "स्वराज्य खिलाफत से पहले ! हिन्दू को मुसलमान पर प्रमुखता। यदि इस प्रस्ताव में ऐसा ही उल्लेख किया जाना है तो मैं इस सभा से उठकर चला जाता हूँ।"

माधव नायर ने अत्यधिक लज्जित होते हुए कहा, "क्षमा कीजिए, मौलवी जी ! मेरा आपकी धार्मिक भावना पर ठेस लगाने का किंचित मात्र भी इरादा नहीं था, यदि आपकी धार्मिक भावना पर ठेस लगती है तो प्रस्ताव में आप खिलाफत व स्वराज्य का आन्दोलन ऐसा उल्लेख कर दीजिए।" मौलवी ऐटखान बोला, "कदापि नहीं ! यह स्वराज्य का अड़ंगा तुम केवल इसीलिए प्रस्ताव में लगाना चाहते हो, क्योंकि हमारी खिलाफत तहरीक पर तुम्हारा विश्वास नहीं। यह मुसलमानी धर्म तथा जाति का अपमान है।"

उसी समय बड़ी ढिठाई का प्रदर्शन करता हुआ एक तेजस्वी महापुरुष उठा और बोला, "परन्तु मौलाना साहब ! खिलाफत यह संस्था और आन्दोलन मुसलमानों का है, फिर भी हिन्दू लोग उसको अपना समर्थन प्रदान कर रहे हैं तो भला हिन्दुओं के स्वराज्य-आन्दोलन को मुसलमान इतना अपमानजनक क्यों मानते हैं ?"

"तू मूर्ख है !" ऐटखान ने बड़ी अकड़ के साथ कहा, "खिलाफत, यह हमारा धर्म भी है। उमर से पहले, अब्बास से पहले प्रत्यक्ष पैगम्बर के साथ-ही-साथ खिलाफत का भी जन्म हुआ था। परन्तु तुम

हिन्दुओं का यह स्वराज्य का आन्दोलन तो आजकल ही पैदा हुआ है, नवीन है, इसलिए इनकी समानता करना अपमानजनक है।"

"स्वराज्य का आन्दोलन नवीन ही" एक व्यक्ति ने कहा, "मुहम्मद पैग़म्बर से भी पूर्व इसे विक्रम ने चलाया था, कृष्ण ने संचालित किया था, रामचन्द्र···"

"बस ! बस! उस काफ़िर का नाम न लो। पैग़म्बर व कृष्ण ! एक ही श्वास में इन दोनों के नाम का उच्चारण ! यह पैग़म्बर का अपमान है ? चुप ! नहीं तो तेरी जीभ खींच लूंगा !" यह कहते हुए मौलवी ऐटखान उस हिन्दू की ओर बढ़ने लगा।

"हाँ, हाँ," कहते हुए उपस्थित मण्डली के अनेक लोग बीच में आ गए। अध्यक्ष महानन्दी उठकर बोले, "मौलवी जी, शान्त हो जाइए। मैं सभी हिन्दुओं की ओर से उस मनुष्य की उद्दंडता के लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ ! हे उद्दण्ड मनुष्य ! यह सभा अनत्याचारी असहकारवादी लोगों की है, इस बात को तू क्यों विस्मृत कर रहा है ? यहाँ तूने अपने मुसलमान बन्धु से ऐसा अत्याचार का व्यवहार किया है यह बात हिन्दू धर्म के लिए लांछनास्पद है। मैं यह निर्णय देता हूं कि प्रस्ताव में "खिलाफत-आन्दोलन" इन्हीं शब्दों का उल्लेख किया जाएगा।

"ठीक-ठीक" हाथों में माला लिए शान्तिपूर्वक बैठा हुआ एक मौलवी बोल उठा, "यह ठीक है। अपने प्रिय हिन्दू बन्धु के लिए हम अपने प्राण दे देंगे। दोनों का उद्देश्य एक ही शब्द में व्यक्त हो गया है, यही आपकी एकता को भी शोभा देता है। फिर खिलाफ़त में स्वराज्य भी है परन्तु स्वराज्य में खिलाफत भी है, ऐसा नहीं है अतः महानंदी ने योग्य निर्णय दिया है। वस्तुतः महानन्दी एक महापुरुष हैं।"

"वे एक बड़े ही सच्चे हिन्दू हैं।" सभा में एक स्वर से ये वाक्य गूंज उठा।

"खाली आशीर्वाद किसी काम का नहीं। खिलाफ़त के लिए हिन्दू लोग क्या कभी प्रत्यक्ष सहायता देते हैं, उसी से मुसलमान यह परखेंगे कि एकता की इस भाषा में कितनी सत्यता है।" मौलाना ऐटखान ने

आक्रोश सहित अपनी फरफराती हुई दाढ़ी को हाथ से सँवारते हुए कहा, "हमने खिलाफत के लिए मोपला लोगों के पथक संगठित किए हैं। परन्तु मोपले निर्धन हैं और उनके धन का हरण हिन्दू जमींदारों ने किया है, अतः मैं यह कहना चाहता हूँ कि इन स्वयंसेवकों पर किए जाने वाले सम्पूर्ण व्यय का भार हिन्दुओं को अपने ऊपर लेना पड़ेगा।"

"उचित ही तो है।" महानन्दी बोल उठे।

"मेरा ऐसा सुझाव है कि इन स्वयंसेवकों का अधिकारी कोई हिन्दू गृहस्थ होना चाहिए।" माधव नायर ने कहा।

"क्यों, क्या तुम्हें मुसलमानों पर अविश्वास है? मुसलमानों के ऊपर हिन्दू अधिकारी? यह तो मुसलमानों के धर्म का अपमान है। मुसलमान गुलाम बनने के लिए नहीं पैदा हुए! उनका जन्म तो राज्य करने के लिए ही हुआ है!"

"क्षमा कीजिए! मौलाना साहेब मेरे कथन का यह तात्पर्य नहीं था।" किसी पिटे हुए व्यक्ति के समान घिघियाते हुए माधव नायर ने कहा। वह बोले, "यदि आपकी धार्मिक भावना को चोट लगती है तो मैं यह सुझाव देता हूँ कि उन स्वयंसेवकों अथवा सैनिक मुसलमान अधिकारियों के नेतृत्व में हिन्दू स्वयंसेवक भी सम्मिलित हों।"

ऐटखान ने कहा, "कदापि नहीं; खिलाफत-आन्दोलन का संचालन मुसलमान स्वयंसेवकों द्वारा ही किया जाए, यही हमारा धर्म है। उमर से पहले, अब्बास से भी पहले, पैगम्बर के ही समय से मुसलमानी खिलाफत रक्षण का कार्य मुसलमान ही करते आए हैं, ऐसा ही हुकुम है। काफिरों से केवल जज़िया लिया जाए किन्तु प्रत्यक्षतः स्वयंसेवक के रूप में उन्हें कदापि सम्मिलित न किया जाए।"

"परन्तु!" माधव नायर तनिक आग्रह करते हुए बीच में ही बोल उठे। उन्हें पुनः डांटते हुए ऐटखान गरजा, "चुप, तू मूर्ख है।"

"खिलाफत का रक्षण करने के लिए मुसलमान ही स्वयंसेवक होंगे, यही हमारा धर्म कहता है, तूने सुना नहीं क्या! तेरा सुझाव नवीन है,

साथ ही हमारा इससे अपमान भी होता है। हमारे धर्म के विरुद्ध कोई भी कुछ कहेगा तो हम उसकी जीभ खींच लेंगे।" ऐसा कहते हुए मौलाना इस मंडली में से उठकर जाने लगा। उसी समय "आप क्यों जाते हैं, आप क्यों जा रहे हैं" की गुहार लगाते मण्डली के कई व्यक्ति खड़े हो गए। अध्यक्ष महानन्दी ने खड़े होकर कहा, "शान्त हों मौलवी जी! माधव नायर का सुझाव निश्चित रूप से ही अपने मुसलमान बन्धुओं पर हिन्दुओं का अविश्वास व्यक्त करने वाला है। मुसलमान तो गुलाम होने के लिए जन्म ही नहीं लेता। यह मुसलमान का बाणा निश्चय ही अभिनन्दनीय है। माधव नायर! यहां जो लोग एकत्रित हुए हैं वे सभी अनत्याचारी और असहकारितावादी हैं। इस पर भी तुमने अपने शब्दों से मौलवी साहब का दिल दुखाया है, क्या यह बात तुम्हारे लिए शोभा देती है? मैं यह निर्णय देता हूँ कि हमारे मुसलमान बन्धुओं को खिलाफत रक्षण के लिए स्वयंसेवक पथकों का गठन करने का पूर्ण अधिकार है और इन पर होने वाला वह सम्पूर्ण खर्च, जिसे इन मौलवी साहेब ने 'जज़िया' कहा है, हिन्दू ही वहन करेंगे।"

'ठीक! ठीक!" हाथ में माला लेकर बैठे हुए उस शान्त मौलवी ने कहा, "यह ठीक है, परन्तु मैं अपने परम प्रिय हिन्दू बन्धुओं के इस प्रेम से मोहित हो गया हूँ। मैं यह सुझाव देता हूँ कि हिन्दुओं द्वारा मुसलमानों को जो धन दिया जाएगा उसे जज़िया न कहते हुए 'वर्गणी' कहे जाने की उदारता प्रदर्शित की जानी चाहिए।"

"मौलवी एक महान पुरुष हैं! मौलवी हम हिन्दुओं के हितैषी हैं।" सभा में उपस्थित हिन्दू एकस्वर से बोल उठे।

"मौलवी मेरे सगे भाई हैं।" महानन्दी बोला, "और उनकी इस नितान्त उदारता से उऋण होने के लिए मैं यह निर्णय देता हूँ कि यदि हिन्दुओं से मोपला स्वयंसेवकों के लिए खर्च किए जाने वाले पर्याप्त धन की प्राप्ति न हो पाए तो हमारे मुसलमान बन्धुओं को धन की वसूली के लिए प्रत्येक शक्य उपाय व्यवहार में लाने का अधिकार है।"

"स्वीकार है, स्वीकार है।" उपस्थित हिन्दू-जनों के कंठों से

समवेत स्वर गूंज उठा।

"महानन्दी, निश्चय ही महापुरुष हैं।" मुसलमान बोल उठे।

उस शान्त मौलवी ने भी कहा, "महानन्दी मेरे बड़े भाई हैं।"

"परन्तु मेरा यह निवेदन है कि इस निर्णय पर हिन्दुओं को भली-भांति विचार कर लेना चाहिए। प्रत्येक शक्य उपाय द्वारा मुसलमानों को हिन्दुओं से धन वसूल करने का अधिकार होगा, इसका तात्पर्य क्या है? क्या उनके घर लूटे जायेंगे? क्या उनकी देव-मूर्तियां भी···"

"ये काफिर है! पकड़ो साले को! गिरा दो!" ऐसा कहते हुए मौलवी ऐटखान ने अपने साथियों को उस व्यक्ति पर भूखे सिंह के समान टूट पड़ने को कहा। महानन्दी यह दृश्य देखकर चिढ़ गया और उस तेजस्वी महापुरुष की ओर देखते हुए बोला, "यह अनत्याचारी लोगों की सभा है। यहां लूटमार का नाम भी अपने मुख से न निकालना! हमारा अपने मुसलमान बन्धुओं पर विश्वास है, वे जो भी करेंगे ठीक ही करेंगे।" इस प्रकार के वाक्य सुनते हुए भी उस गड़बड़ से किंचित् मात्र भी न घबराते हुए वह व्यक्ति बोला, "अहा, जो लूटमार शब्द का उल्लेख करता हो वह तो अत्याचारी है, किन्तु जो लूटमार करता है वह क्या है?" इस वाक्य को सुनकर तो वह शान्ति सहित बैठा हुआ मौलवी भी खौल उठा। सीताराम चेट्टी उस मौलवी के पास पहुँचा और उस व्यक्ति से कहने लगा, "नीच, तुम हिन्दू-मुसलमान एकता को बिगाड़ रहे हो। लूटमार का नाम और इस सभा में?" उसने उस व्यक्ति को जोर का एक आघात लगाते हुए कहा, "क्या तुझे विदित नहीं है कि हम अनत्याचारी असहकारितावादी हैं?"

उसी समय नारायण नम्बूद्री ने भी उस व्यक्ति पर एक लात ठोक दी और बोला, "क्या तुझे पता नहीं है कि सीताराम चेट्टी अनत्याचारी हैं?"

वह मौलाना ऐटखान भी वहां पहुंच गया और उसने उस व्यक्ति की गर्दन को अपने हाथ से पकड़ लिया तथा बोला, "काफिर! क्या तुझे पता नहीं है कि नारायण नम्बूद्री अनत्याचारी असहकारवादी है?"

अब उस व्यक्ति की सहनशीलता की अति हो गई। उसने दाव लगाकर अपनी गर्दन मौलाना की पकड़ से छुड़ा ली और उसकी आक्रोश से फड़फड़ाती हुई दाढ़ी को एक हाथ से दबा लिया और दूसरे हाथ से उसके श्रीमुख पर चपत जड़ने आरंभ कर दिए। उसी समय उसके साथ खड़े हुए तरुण ने भी उछलकर उस मौलवी को उठाकर धरती पर पटक दिया। तभी उस सभा में उपस्थित अनेक हिन्दू उन दोनों व्यक्तियों पर टूट पड़े तथा उन पर लात-घूंसे बरसाने लगे और प्रहार करने लगे। वे दोनों रक्त से लथपथ हो गए, परन्तु उन्होंने उस मौलवी को अपनी पकड़ से मुक्त नहीं होने दिया। थोड़ी देर बाद उन दोनों तथा अन्य लोगों के खड़े हो जाने से जिनमें महानन्दी भी सम्मिलित था, सभा में कुछ शान्ति हुई। महानन्दी ने आज्ञा दी कि उन दोनों व्यक्तियों को उनके अत्याचारी व्यवहार के कारण सभा से बाहर निकाल दिया जाए।

माधव नायर ने कुछ धीमी आवाज में कहा, "परन्तु वस्तुतः पहले तो उन पर मौलवी ने ही हाथ उठाया था।"

"चुप रहो!" मौलाना चीखता हुआ बोला, "किसी भी नास्तिक अथवा मूर्ति-पूजक पर प्रहार करना हमारा धर्म है। उमर से पहले, अब्बास से भी पहले, प्रत्यक्ष पैगम्बर ने कुरान में यह हुकुम दिया है कि पैगम्बर पर ईमान न लाने वाले मूर्ति-पूजकों से कभी प्रेम न करना। आघात करना यह तो मुसलमानों का कर्त्तव्य है, किन्तु प्रत्याघात करने की जिस नवीन रूढ़ि को हिन्दुओं ने अपनाया है, यह मुसलमानी धर्म का अपमान है। यह सभा काफिरों की है अतः मैं इससे बहिर्गमन करता हूं। कारण यह है कि तुम सभी इन्हीं दोनों के धर्म को मानते हो। इनको जान से क्यों नहीं मार डालते?"

"रुकिए मौलवीजी! मैं इन्हें जान से मारे देता हूँ।" रामचन्द्र, चेट्टी बोला, "पाजी कहीं के! हिन्दू मुसलमानों की एकता में विघ्न डाल रहे हो। हम अनत्याचारी असहकारवादियों पर कलंक लगाते हो?"

परन्तु मौलाना इतना अधिक आतंकित हो गया था कि अब उसका

साहस पुनः उन दोनों के समीप जाकर अपनी ढिठाई प्रदर्शित करने का नहीं हो पा रहा था। वह धीरे-धीरे उस सभा से निकल कर चल पड़ा। उसी के साथ-साथ ही माला हाथ में लेकर बैठा हुआ मौलवी भी सभा से खिसकता दिखाई दिया। किन्तु उस व्यक्ति ने मौलवी को द्वार में ही रोक लिया और अपने बदले हुए वेश का परित्याग कर उससे बोला, "मुझे पहचाना कि नहीं ? मौलवी आश्चर्यचकित हुआ बोला, "अरे क्या तू कम्बु है ?" कम्बु बोला, "हाँ ! और तू तो वही मौलवी है न जो हम बिल्लाओं को मुसलमान हो जाने पर ब्राह्मणों, क्षत्रियों और नायरों की कन्याएं बांटकर देने का दावा करता है।"

तिरूरंगाड़ी नामक ग्राम की मुख्य मस्जिद में अली मुसेलियर बैठा हुआ था। उसके आस-पास हाथों में भाले और तलवार आदि लिए हुए सैकड़ों मोपलों का समूह भी विद्यमान था, जिनमें से कुछ के पास बन्दूकें भी थीं। उनसे कुछ ही दूरी पर मोपलों की स्त्रियाँ, बालक तथा अन्य लोग एकत्रित थे। वे सभी बीच-बीच में "अल्ला हो अकबर" की गर्जनाएँ कर रहे थे। उनमें से कई को घाव भी लगे हुए थे जिनसे रक्तस्राव हो रहा था तो कई विह्वल भी पड़े थे। अली मुसेलियर के समीप ही रक्त से सराबोर हुए तीन लोगों के शव पड़े हुए थे। बड़ी ही उतावली सहित अली मुसेलियर बोला, "कासिम, तुम उन काफिरों को अभी तक लाए कि नहीं ? अल्ला तू यशस्वी है, तूने हम मुसलमानों को पहली विजय प्रदान की है, मैं तेरा अनन्त उपकार मानता हूँ ! इस अंग्रेजी राज्य की बोटियाँ उड़ा दी गई हैं ! इस अरनाड तालुके में आज कोई कचहरी अछूती नहीं बची, कोई गोरा चेहरा भी अब दिखाई नहीं देता ! बस, यारो अंग्रेजी राज्य खत्म हो गया है ! अल्ला हो अकबर।"

"अल्ला हो अकबर ! यारो, परन्तु अभी भी काफी काम करना बाकी है।" वह मौलवी, जिससे आप पहले से ही परिचित हो चुके हैं, बोल उठा। उसने यह भी कहा, "आप किस कारण इस अंग्रेजी पुलिस के रक्त से स्नान कर पाने में सफल हो पाए हैं ? तो खिलाफत के कारण ! परन्तु यह अंग्रेजों की पुलिस में हैं कौन ? देखो ये हैं

काफिरों के शव—" ऐसा कहते हुए उस मौलवी ने अली मुसेलियर के पैरों के समीप पड़े हुए सिपाहियों के शव में से एक पर से सिर काट लिया और चोटी से पकड़ कर लटकाए हुए बोल उठा, "यह देखो, इन अंग्रेजों के सिपाही कौन हैं ! यह है काफिरों द्वारा स्त्रियों के समान रखी जाने वाली चोटी ! यह दूसरा सिपाही, हाँ, देखो इसकी भी चोटी है ! यह तीसरा काफिर है और देखो इसके सिर पर भी चोटी है !" किन्तु जब उसने उस तीसरे शव का शिरच्छेदन किया और उसकी चोटी खोजने का प्रयत्न किया तो उसे नरमुण्ड में चोटी कहीं दिखाई ही नहीं दी। कारण यह था कि वह तीसरा सिपाही मुसलमान था। किन्तु फिर भी मौलवी खीजता हुआ बोल उठा, "यह भी हिन्दू ही है ! ये हिन्दू लोग भी अंग्रेजों के समान ही हमारे शत्रु हैं। ये अंग्रेजों के आदेशानुसार ही मोपलों पर गोलियाँ बरसाते हैं। कोई मुसलमान अंग्रेजों के देवताओं के कहने पर भी मुसलमानों पर गोली वर्षा नहीं कर सकता, उनके विरुद्ध नहीं लड़ सकता।" सभा में एक जोरदार आवाज गूँज उठी "कभी नहीं ! सभी मुसलमान एक हैं। मुसलमान मुसलमान के विरुद्ध कभी नहीं लड़ सकता, लड़ता भी नहीं है और लड़ेगा भी नहीं।"

सभा में हुए इस शोरगुल से और अधिक प्रोत्साहित होकर मौलवी बोला, "कभी नहीं ! खलीफा के जर्मनी के साथ मिल जाने के कारण ही सभी मुसलमान अंग्रेजों के विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं। अंग्रेजों को एक भी मुसलमान सिपाही तुर्कों के विरुद्ध लड़ने के लिए नहीं मिल पाया।"

"एक भी नहीं मिलेगा।" सभा में गर्जना हुई।

"अंग्रेजों ने जो हजारों पठान हिन्दुस्तानी मुसलमानों से लड़ने के लिए भेजे थे, उन सबने लड़ने से इन्कार कर दिया है।"

"सभी ने" लोग चिल्ला उठे।

"जो मुसलमान तुर्कों के विरुद्ध लड़ रहे थे वे भी सब के सब तुर्कों के साथ मिल गए हैं।"

"सभी तुर्कों के साथ मिल गए हैं" सभा में स्वर गूंज उठा।

"इस प्रकार अंग्रेजों के शिविर में अब औषधिमात्र के लिए भी एक मुसलमान ढूंढ़ा नहीं मिल पाता है ! अन्ततः अंग्रेज की पराजय हुई। खलीफा इंगलैण्ड तक जा पहुँचे हैं।"

"लन्दन तक" सभा में गर्जना हुई।

जर्मन तुर्कों का मित्र हो गया, परन्तु वह ईसाई था। उसे अनवर पाशा ने कहा, "आज तक हमने तुम्हारी सहायता की है, परन्तु अब यदि तू मुसलमान होगा तो दोस्ती कायम रहेगी। नहीं तो आधे मिनट में ही तेरे बर्लिन नगर को धूल में मिला दिया जाएगा।" तब कैसर बोला, "तुम जो कह रहे हो, वही बात सत्य है। परमेश्वर ने यही आज्ञा दी है कि मुसलमान सभी गैर-मुसलमानों से अधिक बलशाली हैं। सुरतुल-मुजादिक इस अध्याय में कुरान में यही कहा गया है। अतः तुम बर्लिन का नाश न करो; मैं मुसलमान बनता हूं।" ऐसा कहते हुए कैसर मुसलमान हो गया।

"कैसर मुसलमान हो गया है।" सभा में नारा गूंज उठा !

"और कैसर का अनुकरण करते हुए अमरीका का जार भी मुसलमान हो गया है।"

"अमरीका का जार भी मुसलमान हो गया है," एकत्रित जनसमुदाय गरज उठा।

"और अमरीका के जार तथा कैसर इनको अपने दांए-बांए हाथ की ओर खड़ा करके अनवर पाशा ने फ्रांस की मस्जिद में नमाज पढ़ी।"

"अनवरपाशा ने नमाज पढ़ी ! अनवर पाशा बड़ा पक्का मुसलमान है। वह रोज दारू पीता है तो इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं।" सभा में लोग गरज उठे।

"अब जितने भी टोपी वाले हैं, सभी मुसलमान हो चुके हैं। अब केवल अंग्रेज तथा इन अंग्रेजों का अन्न खाने वाले उनकी सेना में भर्ती होकर हम से लड़ने वाले हिन्दू ही अपना काफिरपना त्यागने के लिए तैयार नहीं हैं।"

"उन्हें काफिरपना छोड़ना ही होगा। वे अमरीका के जार से अधिक शक्तिशाली तो नहीं हैं। उनके दांत तोड़ दिए जाएंगे!" सभा गरज उठी।

"मलाबार में अंग्रेजों का राज्य उलट देने वाले वीरो! अब यह कार्य तुम्हें अपने हाथों में लेना होगा।"

इस वाक्य के सुनते ही एक तुमुल गर्जना सभा में हुई 'अल्ला हो अकबर! पकड़ो हिन्दू को! मारो हिन्दू को! मुसलमान बनाओ काफिर को!" उसी समय कासिम ने अली मुसेलियर से कहा, "हुजूर! ये देखिए, वे काफिर पकड़ कर लाए गए हैं।" अली मुसेलियर उत्तावली सहित बोले, "उनको इधर ले आओ।" उसी समय छः सशस्त्र मोपलों के पहरे में चार हिन्दू गृहस्थ अली मुसेलियर के समक्ष लाकर खड़े कर दिए गए। ये कौन थे?

इनमें से पहला गृहस्थ था महानन्दी, दूसरा माधव नायर, तीसरा राम चेट्टी और चौथा नंदीदत्त! कालीकट में खिलाफत संबंधी सभा में किए गए निश्चय के अनुसार ये चारों ही हिन्दू नेता अरनाड तालुके के हिन्दुओं से आन्दोलन के लिए चन्दा एकत्रित करते हुए घूम रहे थे; तभी तिरूरंगाड़ी में दंगा आरम्भ हो गया और मुसेलियर को बन्दी बनाने के लिए सरकार द्वारा सिपाहियों की एक टुकड़ी भेजी गई। परन्तु मोपले सहसा ही तलवारें खींचकर इन सिपाहियों पर टूट पड़े। उनमें से कुछ मारे गए और कुछ वापस लौट गए। इस वार्ता के विजय के समान प्रचारित होते ही यत्र-तत्र मोपलों ने विद्रोह आरम्भ कर दिया। एक अठवाड़े की अवधि में ही एक प्रकार से सम्पूर्ण अरनाड तालुके पर मोपलों का अधिकार हो गया। उस तालुका में एक भी अंग्रेज अधिकारी नहीं रह गया। कोई भी तारघर अथवा सरकारी थाना वहां नहीं रहा। अली मुसेलियर ने अपने आपको मोपलों का सरदार समझते हुए इस बात का निर्णय करने के लिए यह सभा बुलाई थी कि अब विद्रोह का स्वरूप क्या होगा तथा विद्रोह के लिए शस्त्रों आदि के हेतु धन की व्यवस्था कैसे की जाएगी।

हिन्दुओं ने जो धन देना था वह अभी तक प्राप्त हुआ है अथवा नहीं, इस संबंध में पूछ-ताछ करने के लिए हिन्दुओं से चन्दा एकत्रित करने का दायित्व अपने ऊपर वहन करने वाले इन चारों हिन्दू नेताओं को बन्दी बनाकर अली मुसेलियर के समक्ष उपस्थित किया गया। वह महानन्दी से बोला, "क्यों वे ! तुम्हारे हिन्दुओं ने अब तक खिलाफत के लिए कितने पैसे जमा किए हैं ? सुनो, मोपलों के इस धर्मयुद्ध में होने वाला सब खर्च तुम हिन्दुओं को देना है, समझ गए हो !"

थरथर कांपते हुए महानन्दी गुप-चुप खड़ा रहा, परन्तु माधव नायर ने कहा, "खान साहेब !" तभी उसे एक जोरदार धक्का देते हुए एक पहरेदार ने कहा, "सरकार ! मैं पहले आपकी इस विजय के लिए आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। हिन्दुस्तान में एक वर्ष में स्वराज्य ! इसके लिए हजारों लोगों ने प्रतिज्ञा की, सभाएँ आयोजित हुईं, मैले और जर्जरित कपड़ों की होलियां जलाई गईं, परन्तु दिखाई देता है कि हिन्दुस्तान में एक वर्ष में जो कोई भी सही अर्थों में स्वराज्य स्थापित कर पाने में सफलता प्राप्त कर पाए हैं, वे मोपले ही हैं। आज इन दो-तीन तालुकों में वस्तुत: अंग्रेजी सत्ता नष्ट ही हो गई है। अब हिन्दु-मुसलमानों की एकता सुदृढ़ तथा विस्तृत आधार पर किस प्रकार की जा सकती है, इस प्रश्न पर आप पहले विचार कीजिएगा।"

"इस प्रश्न पर विचार करने की ऐसी जल्दी तुम्हें क्या पड़ी हुई है।" मौलवी बीच में ही बोल उठा, "छी: छी:, यह ऐसा कैसे कहते हो ? आपको अपने हिन्दू बन्धुओं को साथ लिए बिना यश प्राप्त नहीं हो सकता। स्वराज्य में हिन्दू भी साझीदार हैं। खिलाफत-आन्दोलन में हिन्दुओं ने सहायता दी है, यह उनकी खरी उदारता ही है। वे यद्यपि काफिर हैं किन्तु उन्हें भी आप मुसलमानों को न्याय देना ही होगा। क्या स्वयं पैगम्बर ने भी मूर्ति-पूजकों के साथ किए गए स्नेहमय करार का पालन नहीं किया था ?" इस प्रकार गम्भीरता सहित विचार करते हुए एक सुशिक्षित प्रतीत होने वाले मुसलमान ने कहा। उसने पुन: कहा, "हे मुसलमानो ! हिन्दुओं पर सख्ती करके उनसे

यदि तुम वैर मोल लोगे तो तुम्हें अंग्रेजों के विरुद्ध विजय कदापि प्राप्त नहीं हो सकेगी। यह बात ध्यान में रखो कि मोपले हैं ही कितने। मुट्ठी भर ही तो हैं।"

यह सुनते ही उस सुशिक्षित मुसलमान पर क्रोधित होकर बड़-बड़ाते हुए मौलवी बोला, "पर यह पढ़ो, मेरे पास यह पत्र आया है। अफगानिस्तान का अमीर साठ हजार सैनिकों को लेकर कल ही पेशावर पहुँचा है, आजकल वह लाहौर में है!"

"अल्ला हो अकबर! अमीर ने दिल्ली को घेर लिया है।" सभा में यह घोषणा हुई और उत्साह से जयध्वनियाँ भी उठने लगीं।

मौलवी पुनः बोला, "तुम पैगम्बर का उल्लेख करते हो, तो मैं तुमसे पूछता हूँ कि सुरतुल तौबा इस अध्याय की ७३वीं आयत में क्या बात कही गई है? क्या उसमें ऐसे ईश्वरीय वचन नहीं हैं कि हे मुसलमानो, तुम नास्तिकों, मूर्ति-पूजकों तथा दम्भियों के विरुद्ध जिहाद करो और उन पर सख्ती करो! कारण यह है कि वे सख्ती किए जाने के ही पात्र हैं! दम्भियों में से ही एक तू है, इसीलिए ऐसी बात कह रहा है, तू मुसलमान भी नहीं है; अरे इसकी तो दाढ़ी भी नहीं है!"

"इसकी दाढ़ी दिखाई नहीं देती! यह मुसलमान नहीं है। यह तो हिन्दू है! पकड़ लो इसको! मारो इसको! ले जाओ यहाँ से इस हिन्दू को!" इस प्रकार के अतिशय उत्क्षोभक उद्‌गार व्यक्त करते हुए सभा में उपस्थित लोग पुनः आगे बढ़ने लगे!

माधव नायर साहस सँजोकर बोला, "स्वराज्य तथा हिन्दू-मुसलमानों की एकता के लिए आप सबने अनेक बार प्रतिज्ञाएँ ग्रहण की हैं। साथ ही हिन्दुओं ने भी मुसलमानों पर विश्वास रखकर चन्दा एकत्रित करना आरम्भ किया है। इस विद्रोह के अनेक नेता हिन्दुओं पर अत्याचार किए जाने की भी बातें कहते हैं। इस विद्रोह से पूर्व ही हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की गुप्त योजना बनाए जाने की भी चर्चा होती है। इन्हीं सब बातों को देखकर ये हिन्दू-जन इस विद्रोह में सहायता देने में कुछ संकोच प्रदर्शित करते हैं, इसमें तो कोई सन्देह

नहीं! फिर भी हमने 10 हजार रुपया खिलाफत के कार्य के लिए दिया है। और भी अधिक धन-संग्रह का कार्य जारी है। परन्तु स्वराज्य और हिन्दू-मुसलमानों की एकता-

"बस कर! काफिर!" अली मुसेलियर ने बड़े ही उतावलेपन का प्रदर्शन करते हुए कहा, "इन हिन्दुओं का यह किन्तु और परन्तु तो आमरण समाप्त नहीं होगा। यह व्याख्यान देने और सुनने वालों की सभा नहीं है। यहाँ तो मरने और मारने का बाजार खुला है। यहाँ तो तुम्हें एक शब्द में ही उत्तर देना होगा। एक आज्ञा होगी और तुम पर प्रहार हो जाएगा!" उसने सभा में उपस्थित सभी लोगों पर एक बार दृष्टिपात किया और सभा में यह आवाज गूंज उठी, "देखो! सभी मुसलमान बनो, एक ही शब्द में इस विद्रोह का स्वरूप स्पष्ट हो जाएगा। ये हिन्दू लोग स्वराज्य और एकता की बातें करते रहते हैं। मैं समस्त संसार को यह बता देना चाहता हूँ कि 'स्वराज्य का अर्थ है खिलाफत राज्य और हिन्दू मुसलमान की एकता का तात्पर्य है सभी हिन्दूओं का मुसलमान हो जाना।' बस, अब किसी ने भी वाद-विवाद किया और एक भी शब्द मुख से निकाला तो उसका सिर धड से पृथक् कर दिया जाएगा।"

"स्वराज्य का तात्पर्य है खिलाफत राज्य! एकता का तात्पर्य सभी की एक मुसलमान जाति बना देना!- - अली मुसेलियर की जय! अली मुसेलियर गाजी है!" सभा में सभी दिशाओं से यह ध्वनि-कल्लोल आरम्भ हो गया।

"हाँ चल," अली मुसेलियर पुन: बोला, "ऐ महानन्दी, बोल तू एकता के लिए मुसलमान होता है अथवा नहीं?"

थरथर काँपते हुए महानन्दी ने कहा, "सभी धर्म एक समान हैं। मुख्य धर्म है अहिंसा..." रक्त से सनी तलवार को झटका देते हुए अली मुसेलियर ने कहा, "यह धरी अहिंसा! व्याख्यान बन्द करो! बोलो मुसलमान होते हो अथवा नहीं?"

महानन्दी बोला, "होता हूँ--मुझे मारिएगा नहीं! मैं मुसलमान

हो गया हूँ। मुसलमान नहीं बनूंगा, ऐसा कहने से तुम्हारे मन को कष्ट होगा और ऐसा करना अहिंसा तत्व के सर्वथा विरुद्ध है। अतः मैं मुसलमान हो जाता हूं।"

"हाँ चल, तू माधव नायर ! होता है कि नहीं मुसलमान ?"

अपनी सम्पूर्ण शक्ति को एकत्रित कर साहस सँजोते हुए माधव नायर ने कहा "जा, जा, मैं मुसलमान बनने को तैयार नहीं हूँ।"

"मारो ! मारो !" एकदम कोलाहल गूंज उठा। जिस किसी भी मोपले ने देखा वही काफिर को सर्वप्रथम मारने का पुण्य प्राप्त करने की इच्छा से प्रभावित होकर तलवार लेकर नायर पर टूट पड़ा। माधव नायर के शरीर पर एक साथ ही २०-२५ तलवारों से प्रहार हुए और उसके शरीर की बोटी-बोटी बिखर गई। रक्त के फव्वारे छूट पड़े और हत्यारों के शरीर भी रक्त से भर गए।

अली मुसेलियर बोल उठा, "हे अल्ला ! तूने जो विजय हमें प्रदान की है, उसके प्रति आभार व्यक्त करने के किसी काफिर के रक्त का यह प्रथम बलिदान तुझे समर्पित है।"

"पहला नहीं, पहला नहीं" कहते हुए लगभग दस मोपलों की एक टोली जो वहाँ आई हुई थी बोल उठी।

"हम मलापुर के निवासी हैं, हमने ग्राम के सभी हिन्दुओं को धर्मान्तरित करा लिया है और जो मुसलमान नहीं बने उनकी हमने हत्याएँ करके उन्हें ठिकाने लगा दिया है। तुम्हारे द्वारा विद्रोह का आह्वान किए जाने से भी पहले ही, हमने गुप्त रूप से इस संबंध में योजना बना ली थी।"

"अल्ला हो अकबर ! मलापुर ग्राम का ग्राम मुसलमान हो गया।" सभा में गर्जना हुई। "अब मलापुर में काफिरों का समूल सफाया हो गया है। और वेगरा में और कन्ना में भी यही हुआ।" एक के बाद एक टोली वहाँ अपने-अपने पराक्रम की घोषणा कर रही थी और उनकी घोषणाओं की प्रतिध्वनियों से सम्पूर्ण सभा में कोलाहल मच गया था।

"बस !" मौलवी बोला, "बस ! अब यह राजसभा विसर्जित की जाती है। बाकी बात व कामों पर कल विचार किया जाएगा ! तब तक हे ईमानदारो ! तुम दसों दिशाओं में प्रयाण करो। ग्राम-ग्राम में जाओ और देखो ! वहाँ जितने हिन्दू मुसलमान बनाए जा सकते हैं, उन्हें मुसलमान बनाओ और जो मुसलमान होने को तैयार न हों उन्हें पकड़कर मेरे पास ले आओ और यदि वे यहाँ आने के लिए तैयार न होते हों, तो उन्हें वहीं जान से मार डालो। आज के पश्चात् अपने मलाबार के इस खिलाफती राज्य में कोई भी अन्याय व अधर्म का कार्य नहीं कर सकता। मैं यह कठोर आज्ञा प्रसारित कर रहा हूँ। जो कोई भी मूर्ति-पूजा करे, कुरान को न माने तथा मोपलों ने जिसे धर्मयुद्ध कहा है, उसमें सर्वस्व समर्पित न करे, ऐसे तीन महा-पाप जो भी व्यक्ति करें उन सभी लोगों के तत्काल वध और परलोक में नरकाग्नि में झोंके जाने की व्यवस्था की गई है। मलाबार में मुसलमानी राज्य स्थापित हो गया है। इस राज्य में केवल पापभीरु लोगों को ही निवास करने का अधिकार है। अतः जाओ ! काफिरों को धड़ाधड़ मुसलमान बनाओ ! नहीं तो उन्हें मार डालो ! उनकी सम्पत्ति तुम्हारी है। उनकी स्त्रियाँ तुम्हारी हैं। वे यदि स्वेच्छा से देते हैं तो उन्हें ग्रहण करो अन्यथा उन्हें लूटो और बलात् अधिकार कर लो।"

"मारो ! लूटो ! बलात् अधिकार करो ! इस राज्य में केवल पुण्यवान और पापभीरु लोग ही रह सकते हैं।" सभा में सहस्रों कंठों से यही समवेत ध्वनि गूँज उठी।

सायंकाल था, किसी ने दीपक तो किसी ने मशाल जलाई। कोई पूर्व दिशा में बढ़ चला तो किसी ने पश्चिम की ओर प्रयाण कर दिया। इन हजारों लोगों के शरीरों में तो मानो शैतान ही प्रविष्ट हो चुका था और वे हिन्दुओं का शिकार करने के लिए दौड़ चले थे। "जाओ ! दसों दिशाओं में जाओ !" मौलवी उन्हें निर्देश दे रहा था।

यह थे वे शब्द ! एक समय इसी भारत भूमि में बोधिवृक्ष की

शीतल छाया तले बुद्धत्व प्राप्त करके गौतम ने अखिल विश्व के प्राणी-मात्र के प्रति दया की भावना से द्रवित होकर इन्हीं शब्दों का उच्चारण किया था—"भिक्षुओ ! जाओ, दसों दिशाओं में जाओ, अमृतत्व का यह संदेश देकर भयतप्त जीवों को शान्ति प्रदान करो !"

उनके यही शब्द मौलवी आज अपने मुसलमानों से कह रहा था।

परन्तु वे 'भिक्षु' वे किस लक्ष्य से गए थे और ये 'ईमानदार' किस लक्ष्य को लेकर चारों ओर बढ़ चले थे !

रात्रि के बारह बजे थे अथवा नहीं, यह निश्चय सहित नहीं कहा जा सकता। कुट्टम ग्राम के नारियल और पोफली के सुन्दर वन-प्रान्तर में सर्वत्र शान्ति व्याप्त थी। उस शान्त वायुमण्डल के पालने में किसी अल्हड़ शिशु के समान ही सुमति गहन निद्रा में पड़ी सो रही थी। उसके केशों की कोई लट कभी-कभी वायु के झोंकों के साथ उसके मस्तक पर खेलती-सी प्रतीत होती थी। जब वह बीच-बीच में रुक-कर श्वास छोड़ती थी तो उसकी धोती का पल्ला उसके मत्त गज के गंडस्थल के समान सुशोभित होने वाले वक्षस्थल पर से हिल-डुल जाता था। मौलश्री के वृक्षों की छाया को चीरती हुई-सी चन्द्रमा की एक चंचल किरण उसके कमल समान सुन्दर प्रतीत होने वाले सुन्दर मुखमण्डल पर पड़कर उसकी कान्ति को और भी अधिक द्युतिमान कर रही थी।

श्रीरंग के देव मन्दिर में भी सर्वत्र शान्ति व्याप्त थी। एक पत्ता तक भी खड़कने का स्वर सुनाई नहीं पड़ रहा था। बारह बजते ही अर्धनिद्रित अवस्था से चौंकते हुए प्रहरी ने देवालय के घड़ियाल को बजाया और पुनः निद्रा देवी की गोद में चला गया।

अभी एकाध घण्टा ही हुआ होगा कि उस देवालय की सीढ़ियों से लगभग एक सौ फुट की दूरी पर खड़े एक तरुण ने एक विशाल वट-वृक्ष के नीचे सोए हुए लोगों की टोली में से एक को उठाने का प्रयास

करते हुए कहा, "कम्बु ! वे आ गए हैं, उठो !" कम्बु चौंककर उठ बैठा और तत्काल संभलते हुए बोला, "कहाँ आए हैं ? कितने आए हैं ? कौन हैं रे ये हत्यारे, दामू ?"

"सौ के लगभग लोग हैं, हत्यारे स्पष्टतः तो नहीं पहचाने जा सके। किन्तु वे ब्राह्मणों की बस्ती की ओर ही गए हैं।" "चल फिर। श्रीरंग तुम ही हम हिन्दुओं की रक्षा करो।" यह कहते हुए कम्बु ने अपने उन बीस के लगभग साथियों को भी जगा लिया जो वहाँ सोए हुए थे। वे सभी अपनी लाठियां, तलवारें और भाले आदि उठाकर ब्राह्मणों की बस्ती की ओर बढ़ चले। जब यह टोली ब्राह्मणों की बस्ती की ओर जा रही थी उसी समय उन्हें तीन-चार ब्राह्मण युवकों के साथ खड़े हुए हरिहर शास्त्री दिखाई दिए।

उन्हें देखकर खिन्न-सा होते हुए कम्बु ने कहा, "यह क्या है शास्त्री महोदय ! तीन-चार लोग ही हैं क्या आपके साथ ?" शास्त्री महोदय ने उत्तर दिया, "बता, मैं अधिक लोग कहाँ से लाता ? पहले तो मेरे इस कथन पर ही किसी ब्राह्मण अथवा नायर को विश्वास नहीं होता कि मोपलों द्वारा विद्रोह किया जाना है। और उनमें से कई तो यह कहते हैं कि भला हमारे घर पर कोई क्यों धावा बोलेगा। और यदि उन्होंने देवालय पर आक्रमण कर ही दिया तो फिर श्रीरंग तो स्वयं ही म्लेच्छों को दण्ड देने में सक्षम हैं ! भला देवताओं की रक्षा हम मानव क्या करेंगे ? ऐसे लोगों को समझाने में अधिक समय न लगाते हुए, मुझे जो चार-पाँच स्वयंसेवक मिल पाए हैं, उन्हीं को लेकर मैं आ गया हूँ।"

अपनी निराशा को व्यक्त न होने देते हुए कम्बु ने कहा, "ठीक है। जो आए हैं, बहुत हैं। वे शत्रु भी चंद आए हैं। उनका मुख्य दांव आपकी कन्या पर ही है। मौलवी ने उसे स्वयं अपने उपभोग के लिए चुना है। फिर भी आप किंचित् मात्र अधीर न हों। मैं जब तक जीवित हूँ उसकी रक्षा करूँगा।"

"और मैं भी," दामोदर, वह थिय्या युवक बोल उठा। उसी

समय दबे-दबे पाँव रखती मोपलों की टोली भी उनके समीप ही आ पहुँची। मोपलों का यह दल थोड़ा-सा रुका और मौलवी ने उनसे कहा, "मुसलमानो ! आज तीन दिन ही हुए हैं, किन्तु आप लोगों ने बड़ी तत्परतासहित दस ग्राम निर्वीर कर दिए हैं; जहाँ-जहाँ भी आप लोग पहुँचे और आपके कंठों से 'अल्ला हो अकबर' का समवेत स्वर गूँजा वहीं काफिरों में भगदड़ मच गयी। इसका कारण यह है कि सभी अनंगठित थे। ईश्वर ने तुम सबके सारे पाप क्षमा कर दिए हैं। क्योंकि तुम विगत तीन दिनों से महान् पुनीत कर्म करते हुए घूम रहे हो। कम से कम छः सौ घरों को तुमने आग लगा दी है; सैकड़ों काफिरों को मुसलमान बना लिया है। देव-प्रतिमाओं को उल्टा करके उन पर लघुशंका की है, थूका है। ईश्वर ने भी तुम्हें इन कार्यों का साथ के साथ परिणाम दिया है। कुरान शरीफ में ऐसा लिखा है कि जन्नत में बड़े-बड़े नेत्रों वाली अप्सराएँ मिलेंगी। वह तो एक अलग बात है। परन्तु इसी लोक में आज तीन दिनों में ही हमारी भोग-विलास की शक्ति समाप्त-सी ही हो गई है। क्योंकि हमें अत्यधिक संख्या में सुन्दरी स्त्रियाँ उपभोग के लिए प्राप्त हो चुकी हैं। प्रत्येक धर्म-योद्धा को इतना अधिक धन बँटवारे के फलस्वरूप मिला है कि उसके लिये उस धन को पीठ पर लादना भी कठिन हो गया है। परन्तु इस सम्पूर्ण सुख देने के बदले में हम वस्तुतः खुदा के शुक्रगुजार हैं अथवा नहीं यह सिद्ध करने का समय तो अब आया है ! इस ग्राम में तुम्हें अन्य सभी ग्रामों की अपेक्षा अधिक संघर्ष करना पड़ेगा। इसका कारण यह है कि शैतान ने स्वयमेव कम्बु थिय्या नामक इस ग्राम के एक व्यक्ति के शरीर में प्रवेश पा लिया है। मैंने स्वयं शैतान को उसके शरीर में प्रवेश करते हुए देखा है ! हे अल्लाह ! तू तो सभी कुछ जानता है ! अल्लाह तू समर्थ है। इस ग्राम में तुम्हें गुप-चुप छापा मारना होगा ! हे धर्मवीरो ! ध्यान सहित सुनो कि इस ब्राह्मण बस्ती में प्रत्येक घर में ऐसी पाँच-पाँच दस-दस सुन्दरी कुमारियां हैं, जैसी तुम्हें मलाबार में अन्यत्र कहीं भी मिलनी दुर्लभ हैं। इस

ग्राम में मोपलों के भी चार घर हैं, उनसे भी तुम्हें सहायता प्राप्त होगी। कम्बु की टोली को फँसाने की भी मैंने एक युक्ति खोज ली है। वह यह है कि यदि ब्राह्मणों की बस्ती में आप लोगों का कुछ प्रतिरोध किया जाए तो तुरन्त थिय्यों के महारवाड़ में आग लगा दी जाए। तब कम्बु और उसके अन्य सहयोगी अपनी बस्ती में लगी हुई आग को बुझाने के लिए दौड़ पड़ेंगे और फिर ये ब्राह्मण और नायर अकेले पड़ जाएँगे और इनसे निबटना सरल हो जाएगा !"

"परन्तु जब इस ग्राम में इतना अधिक प्रतिरोध होने की आशंका है तो फिर अन्य ग्रामों में क्यों न चलें। सहज ही धर्म का प्रचार, धन तथा यशलाभ की सुसन्धि यदि उपलब्ध हो तो फिर हमें इस विपत्ति को मोल लेने की क्या आवश्यकता है।" दो-चार 'धर्मवीरों' ने तनिक जोरदार आवाज में कहा।

"परन्तु इस ग्राम के ब्राह्मणों और नायरों की स्त्रियों के समान सुन्दर महिलाएँ तुम्हें अन्यत्र कहीं मिल पाएँगी क्या ? मुसलमानों को धर्म के लिए संकट तो झेलना ही पड़ेगा।" मौलवी ने क्रोधपूर्ण मुद्रा में उन्हें उत्तर दिया !

अभी उनमें यह वार्ता चल ही रही थी कि कम्बु थिय्या की टोली ने इन पर धावा बोल दिया। सहसा ही एक भयंकर कोलाहल गूंज उठा ; यद्यपि कम्बु को इन लोगों की संख्या के सम्बन्ध में जो सूचना मिली थी, ये उससे कहीं अधिक २०० के लगभग थी। किन्तु कम्बु ने यह पहला प्रहार ही इतना जोरदार किया था कि मौलवी की मंडली पर एक धाक बैठ गयी और उसमें भगदड़ मच गयी। किन्तु उसी समय मौलवी के संकेतानुसार उसकी मंडली के कतिपय व्यक्तियों ने महारवाड़े में आग लगा दी। अग्नि की प्रचण्ड लपटों और निद्रा की गोदी में निश्चिन्त सोए हुए महारों के घरों से उठने वाले कोलाहल को सुनकर कम्बु की टोली में सम्मिलित थिय्या भी अपने-अपने घरों की ओर भागने लगे। मौलवी ने भी उस समय सहसा ही ऐसा प्रदर्शित किया कि मानो उनकी मण्डली का लक्ष्य अब ब्राह्मणों के घर-

द्वार नहीं अपितु देवालय ही है। मुसलमानों की एक बड़ी भीड़ श्रीरंग के पावन देवालय पर टूट पड़ी। उस समय कम्बु ने यह आह्वान भी किया कि अपने गृहों की रक्षा करने की अपेक्षा अपने देवालय की रक्षा करना श्रेयस्कर है। किन्तु यह सुनने पर भी जो धिय्या कम्बु का साथ छोड़ कर अपने घरों की ओर भाग निकले थे उनकी चिन्ता न करते हुए कम्बु अपने उन १०-१५ विश्वस्त सहयोगियों को साथ लेकर देवालय के द्वार पर जा पहुँचा। परन्तु अब उसके साथ उसका नितान्त ही विश्वासप्राप्त तरुण दामोदर नहीं था। उसने दामोदर को उस निष्पाप और निष्कलंक सुन्दर कुमारी की रक्षा करने के लिए भेज दिया था।

चारों ओर हुंकारें गूँज उठी थीं और कुट्टम ग्राम में साक्षात् प्रलय-काल-सा दृश्य उपस्थित हो गया था। उस ग्राम में रहने वाले चार-पाँच मोपलों के घरों में जो हथियार छिपा कर रखे गए थे, मोपला स्त्रियाँ उन्हें मुसलमानों में वितरित करती हुई दृष्टिगोचर हो रही थीं। एक वृद्ध मोपला स्त्री एक हाथ में चिराग और दूसरे हाथ में फूंस लिए हुए हिन्दुओं के घरों में आग लगाती हुई इधर-उधर त्वरित गति से घूम रही थी। हिन्दुओं से में अनेक भाग निकले थे तो कई काल के कराल गाल में भी चले गए थे। कम्बु ही अपने मुट्ठी-भर सहयोगियों सहित श्रीरंग देवालय के द्वार पर जूझ रहा था। यत्र-तत्र अग्निशिखाएँ उभर रही थीं। असावधानी के कारण इस संकट की विकरालता और भी बढ़ गई थी। विपन्न जनता त्राहि-त्राहि कर उठी थी। अब मुसलमानों ने देवालय पर भी प्रबल आक्रमण कर दिया था, किन्तु इन आक्रमणकारियों की भीड़ में मौलवी कहीं दिखाई नहीं दे रहा था।

इसका कारण यह था कि वह अपने कतिपय चुने हुए व्यक्तियों को साथ लेकर श्रीरंग की मूर्ति की अपेक्षा भी अपने नेत्रों को अधिक रमणीय दिखने वाली तथा हृदय को मोह लेने वाली उस दूसरी देव-मूर्ति को मग्न करने के लिए उस ब्राह्मण बस्ती की ओर उस कुमारी

के शय्या-गृह की ओर ताक लगाए बढ़ता जा रहा था।

उसके वहाँ पहुँच पाने से पूर्व ही दामोदर थिय्या ब्राह्मण बस्ती में आ पहुँचा था। उस बस्ती के समीप हिन्दुओं और मुसलमानों में जो प्रथम मुठभेड़ हुई थी और जिसमें मुसलमानों को पीछे हटने पर विवश होना पड़ा था, उसके कारण हुए शोरगुल से उस ब्राह्मण बस्ती के अनेक लोग भी निद्रा से चौंककर उठ बैठे थे। मुसलमानों के पीछे हटने के कारण जो कुछ समय मिल गया था उसका लाभ उठाते हुए हरिहर शास्त्री तथा दानू इन लोगों को एकत्रित कर बस्ती की रक्षार्थ संगठित प्रयत्न करने के प्रयास में लग गए थे। वे इन लोगों को आत्मरक्षार्थ सिद्ध होने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। रामशास्त्री, चिन्तामणी तथा अन्य ब्राह्मण अपने घरों में प्रविष्ट हुए हत्यारों को निष्कासित करने में जुट गए थे। उनमें से अनेकों को कम्बु द्वारा सावधान होने के सम्बन्ध में पहले से ही दी गई चेतावनी स्मरण हो आई थी, और वे उस चेतावनी की उपेक्षा करने पर पश्चात्ताप भी व्यक्त कर रहे थे।

परन्तु स्थूलेश्वर शास्त्री अभी भी शंका से नहीं उभर पाया था। इतना ही नहीं उसके मन में तो एक और भी भयंकर संशय उत्पन्न हो गया था। उसको संशय था कि कौन जाने, यह कम्बु थिय्या ही मुसलमानों से मिलकर यह उपद्रव करा रहा हो! उसने अपनी इस शंका को जब अन्य लोगों के समक्ष व्यक्त किया तो उनमें से अनेक क्षुब्ध हो उठे और बोले—"ऐसा समझते हो तो ऐसा ही सही। किन्तु अब तो ये मोपले आक्रमण कर रहे हैं। तुम्हारे ग्रह-कक्षों में स्थित देवगण, ये तुम्हारी महिलाएँ, तुम्हारा धर्म, चाहे किसी के भी द्वारा क्यों न हो भ्रष्ट किया जा रहा है, उसके संरक्षण का तो प्रयास करो, बस?"

"संरक्षण!" स्थूलेश्वर शास्त्री ने चिढ़कर कहा, "महार ब्राह्मणों की गलियों में आ गए, उनकी छाया तुम पर पड़ रही है, उनके कन्धों से तुम्हारे कन्धे भिड़ रहे हैं! तो अब तुम्हारा धर्म रह ही कहाँ गया

है, जिसकी मैं रक्षा करूँ ? परन्तु यह कौन है ? अरे यह तो महारों का लड़का है ! दाम्या ! तू यहाँ मेरे घर के आंगन में घुस आया है ? धर्म का सत्यानाश हो गया ! तेरी अपेक्षा मुसलमान ही यहाँ आ जाते तो कौन-सा बड़ा भ्रष्ट-कार्य हो जाता ?"

"शान्त हो जाओ ! स्थूलेश्वर !" चिन्तामणी ने कहा, "स्मृति में भी लिखा है कि आपत्काल में छुआछूत का भेद नहीं किया जाना चाहिए, और फिर यह शूरवीर थिय्या युवक तो केवल हिन्दुत्व का अभिमान लेकर ही संघर्ष कर रहा है।"

"परन्तु उस आपत् प्रसंग को तो तुम पुराणों में ही रहने दो !" हरिहर शास्त्री ने क्रुद्ध होते हुए कहा, "वह हिन्दू है अतः उसे हमारे घरों में आने का पूर्ण अधिकार है ! उसने धर्मवीरों के समान संग्राम किया है अतः मैं उसकी चरण-वन्दना करता हूँ। उसका आना तथा मुसलमानों का ब्राह्मण बस्ती में घुस आना, क्या यह दोनों ही समान रूप से भ्रष्ट कार्य हैं ? हाय, हाय ! अब थोड़ी देर बाद ही यह सिद्ध हो जाएगा ! ये थिय्या, महार और मांग अपने हाथों में तलवारें सँभालकर हिन्दू धर्म की रक्षार्थ यहाँ आए हैं। वे जब तक तुम्हारे प्रांगणों में खड़े हैं, तभी तक तुम्हारे देवता तुम्हारे घरों के देव कक्षों में हैं, अग्नि अग्निकुण्डों में प्रज्ज्वलित हो रही है। तुम्हारे गले में यज्ञोपवीत लटके हुए हैं, प्राण शरीर में विद्यमान हैं। थोड़ा ठहरो, संगठित न होते हुए कुछ और क्षण यूं ही खड़े रहो, और फिर देखो वे मुसलमान यहाँ आ पहुँचेंगे। देखना फिर तुम्हारे देवता, अग्नि, यज्ञोपवीत, तुम्हारी महिलाओं और वेदों की पावन पोथियों का क्या हाल होता है। और फिर यह भी देख लेना कि महार और मुसलमान एक-से ही हैं, चलो तुम्हारी इस शंका का भी निवारण हो जाएगा !"

क्रोध और क्षोभ के कारण हरिहर शास्त्री के मुख से अभी यह शब्द निकले ही थे कि उस मौलवी की टोली भी वहाँ आ धमकी। अब उन्हें इस ग्राम के मोपलों के घरों में पहले से ही छिपाकर रखी गई कुछ बन्दूकें और दो पिस्तौल भी मिल गए थे। और कम्बु की

टोली के कुछ लोग देवालय की रक्षार्थ चले गए थे तो कुछ लोग अपने महारवाड़े की रक्षार्थ चले गए थे और इस प्रकार वह टोली तितर-बितर हो चुकी थी। उसी समय मौलवी भी ब्राह्मण बस्ती में आ पहुँचा और उसने अपनी पूर्ण शक्ति-सहित आवाज लगाई—"मारो काफ़िरों को।" एक भयंकर गर्जन हुआ और मौलवी की टोली के साथ ही साथ दौड़ने वाली वह वृद्धा भी वहाँ आ गई और उसने अपनी मसाल से ब्राह्मणों की बस्ती के समीप स्थित नायरों के दो-तीन घरों में और फूंस के ढेरों में आग लगा दी। उसी समय एक ढोल से भी भयंकर ध्वनि गूंज उठी और उसके साथ ही साथ ये स्वर भी गूंज उठे—"मारो काफिरों को!"

हरिहर शास्त्री को कम्बु ने जो कुछ बतलाया था उससे शास्त्री महोदय ने अपनी पुत्री सुमति को पूर्णतः अवगत नहीं कराया था। वह तो आज भी प्रतिदिन के समान ही प्रगाढ़ निद्रा की गोदी में पड़ी सो रही थी। चन्द्रमा की एक किरण भी उसके सुन्दर शरीर का दर्शन निर्भयता सहित करने के लिए वृक्षों की ओट से सरकती हुई-सी शंख के समान मनोहर उसके कंठ पर पड़ रही थी और उसके कंठहार के समान सुसोभित हो रही थी। उधर वायु के मन्द-मन्द झोंकों से उड़ता हुआ उसकी साड़ी का पल्ला चन्द्रमा की इस चंचल किरण को चन्द्रहार के समान ही मनोहर दिखाई देने वाले उसके वक्षस्थल पर पड़ने से मानो रोकने का प्रयास कर रहा था। जिस समय सुमति गहरी नींद में सोई पड़ी थी, उसी समय ब्राह्मणों की इस बस्ती से दूर हिन्दुओं और मुसलमानों में पहली मुठभेड़ हुई थी। इस गड़बड़ के कारण सुमति ने देखा था कि संस्कृत श्लोकों की अन्त्याक्षरी में आज पुनः उसके भाई ने कालिदास के श्लोक के नाम पर उपनिषद् का एक श्लोक बोल दिया था और वह उल्टा उसे ही खिजाने लगा था। उसे अब पुनः झपकी लग गई थी! कुछ ही समय पश्चात् पुनः एक भयंकर कोलाहल हुआ और वह सहसा ही चौंक उठी। उसकी आंखें खुलीं तो उसने देखा कि उसके सम्मुख वही थिय्या युवक खड़ा हुआ था। क्षण-

भर तो वह यही समझती रही कि मैं स्वप्न ही देख रही हूँ। उस दिन जब वह उपवन में पुष्प तोड़ रही थी, उसी दिन का दृश्य ही आज स्वप्न में दिखाई दे रहा है। परन्तु क्षण-भर में ही उस दृश्य का भयंकर स्वरूप उसके समक्ष स्पष्ट हो गया। उसके पिता ने बड़ी ही चिन्ताग्रस्त मुद्रा में उससे कहा—"बालिका सुमति, जाग; घबराना नहीं; देख अपनी इस ब्राह्मण बस्ती में भारी संख्या में क्रूर लुटेरे घुस आए हैं।" इस वाक्य को सुनते ही सुमति सहसा ही सन्तप्त हो उठी। उसके मन में यह शंका उत्पन्न हो गई कि क्या यह भी उसी टोली का कोई लुटेरा है। उसने उस थिय्या तरुण की ओर ऐसी दृष्टि से निहारा जिस प्रकार कोई दीन-हीन व्यक्ति किसी दोषी की ओर निहारता है! उसका पिता पुनः बोल उठा—"ऐसी स्थिति में तेरी रक्षा का एक ही उपाय मुझे दिखाई देता है कि तू जितना शीघ्र हो सके उतना शीघ्र तुझे जिस किसी भी मार्ग से हो तेरे मामा के घर पहुँचा दिया जाए। तेरी रक्षा के लिए तेरा भाई तथा मेरा यह विश्वासपात्र थिय्या युवक दामोदर तेरे साथ जाएगा।" यह सुनते ही इस संकटमय स्थिति में भी उस कुमारी के मुख पर सन्तोष की एक रेखा उभर आई। इसका कारण यह था कि उसे अब विश्वास हो गया था कि इस सुशील और सुन्दर आकृति वाले थिय्या युवक के द्वारा कोई दुष्टतापूर्ण कृत्य नहीं होगा। युवक दामोदर चोर नहीं अपितु उसका रक्षक है, उसका यह विश्वास आज सत्य सिद्ध हो गया था। उस समय की भयंकर स्थिति से अपनी पुत्री को पूर्णतः अवगत कराने के लिए शास्त्री महोदय पुनः बोल उठे, "हाँ, उठ बाले उठ! पगली कहीं की! तू अभी भी जाने को तैयार नहीं हुई।"

उधर ढोल की आवाज बढ़ रही थी, अग्नि-ज्वालाएँ फैलती जा रही थीं और विनाशकारी कोलाहल भी अधिकाधिक प्रचण्ड होता जा रहा था। उसी समय शत्रुओं के पहुँचने के पूर्व ही सुमति को वहाँ से हटा देने की दृष्टि से उसके पिता, भाई और उस थिय्या तरुण ने सुमति को एक पुरुष का पायजामा-अंगरखा पहना दिया। तभी उसके

सिर पर टोपी भी लगा दी। बड़ी ही तत्परता-सहित वे उसे जंगल की ओर अपने साथ ले गए। हरिहर शास्त्री अपनी कन्या को वन की ओर भेजकर पुनः अपने द्वार के समीप पहुँचे ही थे कि मौलवी के साथी भी उनके घर से दस फुट की दूरी तक आ पहुँचे। शास्त्री को उनके घर पहुँचते देख मौलवी चीख उठा, "यही···यही वह काफ़िर है, पकड़ो, मारो मत, पकड़ो।" मोपलों ने अपनी बन्दूकों से हवा में फायर किए, वे शास्त्री के घर की ओर बढ़ चले। बन्दूकों की धाँय-धाँय सुनते ही आस-पास के घरों में निःशस्त्र और घायल लोग जाकर छिपने लगे। हरिहर शास्त्री ने भी घर में प्रविष्ट होकर भीतर से द्वार बन्द कर लिया और बोले, "मौलवी, तुम्हें मुझसे क्या लेना है? मुझ निरपराध ब्राह्मण के घर पर तुमने धावा क्यों बोल दिया है? मोपलों ने तो अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया है, फिर नाहक तुम लोगों ने हमारे विरुद्ध क्यों शस्त्र उठा लिए हैं?" मौलवी बोला, "तू यदि अपने पास का सारा धन हमें दे देगा, और सम्पूर्ण परिवारसहित मुसलमान बन जाएगा तो फिर हम तुझे अपना ही समझेंगे। इतना ही नहीं अपितु तेरी उस सुन्दर कन्या से मैं विवाह भी करूँगा, और इस खिलाफत राज्य में तेरा अत्यधिक सम्मान भी किया जाएगा।" उसके इन विषबुझे तीरों जैसे तीक्ष्ण शब्दों को ज्यों-त्यों सहन करते हुए शास्त्री ने कहा, "आज का दिन तुम मुझे इस सुझाव पर विचार करने के लिए दे दो, कल ही मैं तुम्हारी बात स्वीकार कर लूँगा। मेरी पुत्री रुग्ण है। वह तुम्हारे इस उपद्रव से घबरा जाएगी, इससे उसका रोग असह्य रूप भी धारण कर सकता है।" मौलवी बोला, "मैं अकेला ही भीतर आ जाता हूँ, तू द्वार खोल दे।"

"पर तुम मुझे धोखा नहीं दोगे, मैं इस बात का विश्वास कैसे कर लूँ।"

"मेरी शक्ति के कारण! तू यदि द्वार नहीं खोलेगा तो भी मैं उसे तोड़ कर भीतर प्रविष्ट हो सकता हूँ! परन्तु जो व्यक्ति मुसलमान हो जाता है, उसे हम कष्ट नहीं देते, यही हमारा धर्म है। और

फिर जब तू अपनी कन्या भी मुझे देगा तो मैं तेरे साथ धोखा भला क्यों करूँगा।" "परन्तु आज यदि तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं कल ही सब ब्राह्मणों से आग्रह तथा मुसलमान होने की विनती करूँगा और वे उसे स्वीकार कर लेंगे। अतः तुम आज वापस चले जाओ।" "छिः ! छिः ! ऐसा नहीं हो सकता। तू राजी-खुशी से द्वार खोलता है कि घर को आग लगा दी जाए ? मूर्ख, यह विचार करने का अवसर भी मैं तुझे तेरे लिए नहीं, अपितु तेरी उस कोमल अप्सरा के लिए दे रहा हूँ।"

"और अप्सरा-सी अपनी पुत्री की रक्षार्थ मैं अपने जीवित रहने तक संघर्ष किए बिना नहीं रहूँगा ! बेटी सुमति, द्वार खोल दूँ क्या ! नहीं-नहीं ! अच्छा बस; मैं द्वार नहीं खोलता !" हरिहर शास्त्री ने इस ढंग से और जोर से यह वाक्य कहा। और उसके इतने जोर से कहने का इष्ट परिणाम भी हुआ। मौलवी ने यह समझकर कि सुमति घर के भीतर ही है, मकान को आग न लगाते हुए अपना कार्य पूर्ण करने का विचार किया। और उसके द्वार तोड़ देने का आदेश अपने साथियों को दे दिया। क्षण-भर में ही उनमें से कोई खिड़की पर तो कोई दीवार पर चढ़ गया और उनमें से कई द्वार पर आघात करने लग गए। सुमति को दूर निकल जाने के लिए जितना समय आवश्यक था उतना समय बिता देने के उपरान्त अब हरिहर शास्त्री ने भी अपने अग्न्यागार के द्वार के भीतर घुसकर तलवार निकाल कर अपने हाथ में सँभाल ली और द्वार बन्द करके भीतर बैठ गए। अब उस द्वार पर कुल्हाड़ियाँ बरसने लगी थीं। जो मुसलमान सबसे पहले द्वार के भीतर घुसा उसका सिर उस वीर ब्राह्मण ने अपनी तलवार के एक ही प्रहार से काट लिया। जब दूसरे मोपले ने भीतर घुसने के लिए गर्दन झुकाई तो उसे भी हरिहर शास्त्री की तलवार भवानी बनकर चाट गई। अब मोपलों में भी चीत्कार मच गया और वे भयभीत हो उठे। अब वह मोपला वृद्धा पुनः आगे बढ़ी और बोली, "मैं इस मकान को अभी आग लगाए देती हूँ ! फिर तड़प कर ये स्वयं ही बाहर निकल आएँगे।" परन्तु मौलवी बोला, "नहीं बूढ़ी, ऐसा नहीं करना ! इन

हिन्दुओं में कभी-कभी सिंह के समान शौर्य का संचार हो जाता है। यह ब्राह्मण अपनी पुत्री को साथ में लेकर लड़ रहा है। यदि तुमने आग लगा दी तो ये घर के भीतर ही जल कर भस्म हो जाएँगे, परन्तु हमारे हाथों में नहीं पड़ेंगे। अतः घर को छोड़ ही दिया जाना चाहिए।"

उस समय इस ब्राह्मण के घर पर मोपले चारों ओर से टूट पड़े थे और वह ढहता जा रहा था। वे हाथों में मशाल लिये लूट-मार कर रहे थे। केवल घर में स्थित वह अग्न्यागार ही अभी पूर्णतः नहीं टूट पाया था। किन्तु अब वह भी गिर पड़ा। दीवार से मोपले भीतर घुस आए थे। अँधेरे में ही दो अक्रान्ताओं को ठिकाने लगा देने के उपरान्त हरिहर शास्त्री पिछले द्वार से निकल ही रहे थे कि अपने दुर्भाग्य से मौलवी ही सामने खड़ा हुआ दिखाई पड़ा। बड़े ही उतावलेपन से मौलवी उनकी ओर दौड़ा और तलवार खींचकर गरज उठा, "लड़की कहाँ है ?"

"यह देख, यह है मेरी पुत्री !" कहते हुए वीर ब्राह्मण ने अपनी तलवार ऐसी सफाई से चलाई और इतने जोर का प्रहार किया कि मौलवी के कन्धे पर भरपूर वार हुआ। मौलवी चीं-चीं करता हुआ पीछे हट गया। अब वह ब्राह्मण भी अपनी मन्त्राग्नि से तथा अपने शस्त्र और बल से जितना भी संरक्षण कर सकता था उतना करते हुए ब्राह्मणों के जो घर सामने दिखाई दे रहे थे उनकी रक्षार्थ बढ़ चला। परन्तु चलते-चलते ही बोला—"सुमति ! तुम उस घर में चली आओ, मैं आता हूँ।"

उस घर में जो भयंकर घटना घट रही थी उसकी तुलना में हरिहर शास्त्री के घर में घटित हुई घटना तो कुछ भी नहीं थी। तीन-चार मोपले उस घर में घुसे हुए थे, उनके पास ही मशाल हाथ में लिए वह बुढ़िया भी खड़ी हुई थी। पहले ही हल्ले में उन मोपलों ने उस परिवार के प्रमुख को घायल कर दिया था और वह भूमि पर गिर पड़ा था। उसे इस प्रकार गिरते हुए देखकर उस व्यक्ति की पत्नी और दोनों पुत्रियाँ तथा परिवार की दो अन्य स्त्रियाँ रोती हुई

उसके शरीर पर होने वाले प्रहारों को रोकने के लिए उसके ऊपर गिर पड़ी। तब तक उस घर में प्राप्त हुए सोने-चाँदी के आभूषण तथा अन्य सम्पत्ति को मोपले लूट चुके थे। अब वे मोपले उन बेसहारा, विह्वल, भयभीत और निःशस्त्र महिलाओं से बोले—"ऐ, औरतो, यह काफ़िर अभी तक मरा नहीं है। यह ठीक हो सकता, शोक मत करो, हम इसकी सम्पूर्ण व्यवस्था कर देंगे। केवल हे प्यारी! तुम हमें अपना मान लो।" "नहीं, तू मुझे अपना मान ले।" ऐसा कहते हुए दो मोपलों ने उन युवतियों को तथा एक तीसरे ने मध्यम आयु की महिला को अपनी ओर खींच लिया? वे दोनों शोकाकुल और भयभीत महिलाएँ भला उन उपद्रवियों की भीड़ का कैसे प्रतिरोध करतीं। फिर भी उनमें जो बड़ी लड़की थी वह उस वासना से अन्धे हुए मोपले की पकड़ से मुक्त होने के लिए छटपटाने लगी! वह अपनी प्रथम सन्तानोत्पत्ति के लिए अपनी ससुराल से अपनी माता के यहाँ आई थी। उसे कसमसाते हुए और छूटने का प्रयत्न करते हुए देखकर मोपले क्रुद्ध हो उठे। तब उन्होंने उन तीनों ही स्त्रियों के वस्त्र उतार कर उन्हें नग्न कर दिया। उस समय वह बड़ी लड़की रोती हुई पुकारने लगी—"इन दुष्ट पशुओं के हाथों से हमारे जीवन और सम्मान की रक्षा करो!" वह चीखती जाती थी और अपना सिर धड़ाधड़ घर की दीवारों और फर्श पर पटक रही थी। किन्तु उसका आर्तनाद सुनकर न तो कोई मनुष्य ही उसकी सहायतार्थ आया और न ही किसी देवता ने उसकी करुण गुहार पर ध्यान दिया। बारम्बार दीवारों और भूमि पर सिर पटकने पर भी न तो कोई दीवार ही टूटी और न ही भूमि फटी। तब अन्य कोई उपाय न पाकर उस कोमल सुन्दरी ने उस वृद्धा मोपला नारी के पैरों में सिर पटक दिया और इस प्रकार गिर पड़ी जिस प्रकार 'मरी माता' के चरणों में कोई कमल पुष्प समर्पित हो जाता है, और बोली, "तू मुसलमान है, किन्तु स्त्री है। स्त्रियों की भावनाओं को तू समझ सकती है। यह मेरा पिता है और ये उसके हत्यारे हैं। उनके नेत्रों के सामने ही

मैं यह कृत्य कैसे सहन कर सकती हूँ।" वह मोपला वृद्धा विकट हँसी हँसते हुए बोली, "लड़की, एक दिन मैंने भी ऐसा ही कहा था; परन्तु किसी ने भी मेरी पुकार नहीं सुनी थी। यदि कोई मेरी पुकार सुनता तो सम्भवतः आज मैं भी तेरी बात सुन लेती। परन्तु अब तो जितनी भी मेरे समान हो उतनी होनी ही चाहिए। चल पड़···" उसके इन दुष्ट अपशब्दों से वह तरुणी दग्ध हो उठी और उसने पुनः अपना सिर धड़ाधड़ भूमि पर पटकना आरम्भ कर दिया। उसका कपाल फट गया और रक्त की धारा प्रवाहित हो उठी। अब वृद्ध वृद्धा और भी अधिक चिढ़ गई थी! वह बोली, "मरे कहीं के, तुम नपुंसक हो क्या?" तभी वे तीनों कामोन्मत्त पशु उन स्त्रियों को लिपट गए। उनमें से दो चुप रहीं, किन्तु वह रक्त से लथपथ गर्भवती सुन्दरी अभी भी छटपटा रही थी। इतने में ही और एक-दो मोपले भीतर घुस आए। अच्छा, "यह क्यों छटपटा रही है, तुम जानते हो क्या?" उनमें से हुसेन नामक एक व्यक्ति बोला, "समझ गया; समझ गया" ऐसी स्थिति में भी हँसते हुए हसन बोला—"उसका काम एक से नहीं चलेगा।" तब दूसरा उससे लिपट गया। इस पर उस युवती ने जिसके पैर बाँध दिए गए हों ऐसी सिंहनी के समान अपने दाँतों को कटकटाते हुए उसे काट खाया। "हसन मारो साली को" कहते हुए वह छुरी लेकर दौड़ा। तभी हुसेन बोल उठा, "अरे मूर्ख! गन्ध लिए बिना भी कभी फूल को मसल कर कहीं फेंका जाता है क्या? निरा ही अरसिक है तू भी!"

अब इन नराधमों ने उस युवती को नग्न कर दिया। पहला मोपला अपनी पाशविकता का प्रदर्शन कर उससे अलग हुआ। तदुपरान्त हुसेन ने और हुसेन के उपरान्त हसन ने उस घायल गर्भवती सुन्दरी युवती से राक्षसों से भी अधिक क्रूर बलात्कार किया। इतने भयंकर अत्याचार की परिणति बहुधा इस पाप-कृत्य के उपरान्त भयंकर द्वेष का ही रूप धारण करती है। तदनुसार हसन को उठते हुए देख उस क्रुद्ध युवती ने दाँत कटकटाकर काट लिया। हसन ने

छुरी निकाली और उस सुन्दरी निरपराध कन्या के पेट में घोंप दी। उसके पेट को चीरने के पश्चात् उसने छुरी को इतने जोर से निकाला कि उसके उदर में स्थित भ्रूण भी टुकड़े-टुकड़े होकर बाहर निकल पड़ा। यह सभी कुकृत्य उस सुन्दरी के घायल पिता के नेत्रों के समक्ष ही हुआ। हुसेन बोल उठा, "अच्छी तरह देख! ऐ काफिर! अच्छी तरह देख। हिन्दू के रूप में जन्म लेने पर कितनी दुर्दशा होती है। अल्लाह काफ़िरों पर ईमानदारी (कुरान पर आस्था रखने वालों) को विजय प्रदान करता है!"

ऐसा कहते हुए वे सभी मोपले लूट-मार करने के लिए दूसरे मकान में घुसने के लिए बाहर निकलने लगे। उसी समय क्रुद्ध सिंह के समान तलवार चलाते हुए हरिहर शास्त्री वहाँ आ पहुँचे। वे बड़े जोर-जोर से 'सुमति! सुमति!!' की आवाज़ें भी लगा रहे थे।

उनकी इस जोरों से की जाने वाली पुकार को सुनकर मौलवी के साथियों ने समझा कि शास्त्री जिस घर में घुसे हैं, सुमति भी उसी में गई है? अतः वे भी उनके पीछे-पीछे दौड़ते हुए आ रहे थे। परन्तु उनमें से एक व्यक्ति धन की टोह में उनके अग्न्यागार में घुस गया। वह मशाल लिये टटोल ही रहा था कि उसने अपना हाथ हवनकुंड में डाल दिया? प्रज्वलित अग्नि ने उसके हाथ को बैंगन के समान भून दिया और "जल गया, रे, जल गया" का आर्तनाद करते हुए अपना हाथ हवनकुंड से बाहर निकाला किन्तु अग्नि ने उसके कुर्ते की आस्तीन को पकड़ लिया था और निकालते-निकालते भी अग्नि-शिखाओं ने उसका आधा हाथ भून दिया। फिर भी आग बुझी नहीं। ब्राह्मण की यज्ञाग्नि ने एक यज्ञ-विध्वंशक को तो अपना चमत्कार दिखा ही दिया था। यदि भक्तों के सभी देवता इतने भी जाज्वल्यमान होते तो···?

हरिहर शास्त्री के हृदय में भी हवनाग्नि के समान ही प्रतिशोध-अग्नि प्रज्वलित हो रही थी। दूसरे घर से निरपराध ब्राह्मण कन्या पर बलात्कार करके बाहर आने वाले मोपलों में से हसन और हुसैन

को उन्होंने अपनी तलवार से वहीं ढेर कर दिया। अब जब हरिहर शास्त्री उस घर के भीतर प्रविष्ट हुए तो उन्होंने देखा कि उस ब्राह्मण का कुटम्ब नितान्त ही विपन्न और करुणास्पद और बीभत्स स्थिति में है। हरिहर शास्त्री ने गृहपति से कहा, "हाय-हाय! स्थूलेश्वर शास्त्री!" कारण यह था कि यह गृहपति अन्य कोई नहीं अपितु महारों की अपेक्षा मुसलमानों का घर में घुस आना, कम भ्रष्टकारी है, का ज्ञान बघारने वाला स्थूलेश्वर शास्त्री ही था। उसने कराहते हुए कहा, "यह कैसी स्थिति है? ईश्वर का यह कैसा प्रकोप है?" हरिहर शास्त्री बोले, "एक प्रकार से तो अपनी हिन्दू जाति की दुष्ट प्रवृत्ति और पापों का ही यह परिणाम है, यह भयंकर फल है। अतः अब भी मुझे बता दो। मैं तुम्हारी पत्नी और पुत्री को अपनी आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़े हुए-उन दो थिय्यों के साथ किसी सुरक्षित स्थान में भेजने का प्रबन्ध करूँगा।" स्थूलेश्वर शास्त्री अभी भी हाँ कहने को तैयार नहीं था। वह अभी भी अपनी कन्या को किसी थिय्या के साथ भेजने को तैयार नहीं था। भले ही वह कन्या मुसलमानों के हाथों भ्रष्ट हो चुकी हो, किन्तु उसे थिय्यों के हाथों में सौंप देना तो महापाप होगा, यही विचार उसके मन में कौंध रहा था। इस प्रकार की रूढ़ियों ने जब एक बार हृदय को जकड़ लिया हो तो, उस हृदय को तोड़े-फोड़े बिना उनको हृदय से निकालना कठिन ही है।

हरिहर शास्त्री ने एक क्षण घर का दृश्य देखा और वह विकल हो उठे और वे मन ही मन बोल उठे, "गत सायंकाल बड़ी ही शान्ति के साथ यह सारा कुटुम्ब निद्रादेवी के गोद में चला गया था। इन मोपलों के प्रति उनके मन में किंचित् मात्र भी आशंका नहीं थी। स्थूलेश्वर शास्त्री और उनकी यह ब्राह्मण मण्डली कई पीढ़ियों से इस बस्ती में निवास करती आ रही थी। शुचिता सहित और ध्यानमग्न होकर इस बस्ती में ब्राह्मण श्रुति, स्मृति का अभ्यास करते थे। बड़े ही सन्तोष सहित यहाँ दिन व्यतीत करने वाला यह परिवार भी गत सायं-काल प्रेम सहित, हँसते-खेलते सो गया था। और अभी तो सवेरा भी

नहीं हो पाया, उससे पहले ही यह क्या स्थिति उत्पन्न हो गई है। घर-द्वार क्या, उसका धर्म—सभी तो मुसलमानों की तलवार और मदान्धता की अग्नि की भेंट चढ़ गया है! क्या केवल इसलिए कि यह हिन्दुओं का परिवार है? केवल इसीलिए न कि हिन्दू समाज बलहीन और असंगठित है। समाज की शक्ति क्षीण होने का परिणाम व्यक्ति और कुटुम्ब सभी को इतने भयंकर रूप में सहन करना पड़ता है। व्यक्ति व समाज का जीवन ऐसे धागों से बुना हुआ है कि किसी वृक्ष की शाखाओं के समान पारस्परिक एकता उनमें भले ही प्रतिबिम्बित न होती हो, किन्तु जिस प्रकार किसी वृक्ष की जड़ें भूमि में जाल-सी बनकर फैली होती हैं, उसी प्रकार व्यक्ति का जीवन भी समाज-जीवन के साथ संघबद्ध है। फिर तू कोई अपराध करे अथवा न करे, तू हिन्दू समाज का अंग है, अतः तुझ पर समाज के शत्रुओं द्वारा अवश्य ही प्रहार किया जाएगा। अतः फिर तू चाहे थिय्या है अथवा नम्बूद्री, या महार है, तेरे समाज के शत्रु तेरा सिर और आँख फोड़े बिना नहीं रहेंगे। यदि तेरा सामाजिक जीवन संकट में पड़ गया है, तो फिर तेरा जीवन भी उस संकट से मुक्त कैसे रह सकता है? अतः तेरा जीवन व्यक्तिगत ही नहीं वैयक्तिक-सामाजिक दोनों का ही मिश्रण है।"

उपरोक्त विचारों से हरिहर शास्त्री का हृदय उद्वलित हो रहा था। उन्होंने समझ लिया कि स्थूलेश्वर की मूर्खता और हठ अभी भी समाप्त नहीं हुई है। अतः अब चाहे वह अनुमति दे अथवा न दे इन दोनों स्त्रियों की निश्चित रूप से ही मुझे रक्षा करनी होगी। उन्होंने ऐसा निश्चय कर उन दोनों शिष्यों को बुलाया और उन स्त्रियों की रक्षा का दायित्व उन पर सौंपकर स्वयं मौलवी से मोर्चा लेने बढ़ चले।

हरिहर शास्त्री के पीछे-पीछे भागता हुआ मौलवी अभी स्थूलेश्वर शास्त्री के घर में सुमति की तलाश करने पहुँचा ही था कि सहसा ही एक मोपला बड़े जोर से बोला, "सुमति! सुमति!! साली मिल गयी!" मौलवी यह सुनते ही हरिहर शास्त्री को छोड़ कर उस ओर दौड़ पड़ा। बात यह हुई थी कि मोपलों ने दीन-दीन करते हुए चिन्तामणि

शास्त्री के घर पर धावा बोल दिया था। उनकी मारकाट से भय-भीत चिन्तामणि शास्त्री की कन्या लक्ष्मी वहाँ छिपकर बैठी हुई थी। उसकी आयु भी सुमति के बराबर ही थी और वह रूप-रंग में भी उसके मिलती-जुलती थी। उसको एक मोपले ने पकड़ लिया था। मौलवी ने भी उसे देखते ही सुमति समझ कर उस मारकाट और उपद्रव के वातावरण में भी अपनी छाती से चिपटा लिया। मौलवी के कंधे पर हरिहर शास्त्री ने अपनी तलवार से जो प्रहार किया था, उसके कारण होता हुआ रक्तस्राव तो थम गया था किन्तु उस घायल कन्धे में पीड़ा अभी भी कम नहीं हो पाई थी। परन्तु लक्ष्मी को ही सुमति समझकर अपनी छाती से लिपटाते हुए मौलवी अपनी वेदना भी भूल गया था। वह यह समझ कर सन्तोष की सांस ले रहा था कि उसने जिसके लिए यह सब उपद्रव किया है, उसे वह अभीष्ट वस्तु प्राप्त हो गई है। बड़े ही हर्ष सहित उसने अपनी टोली के दो विश्वस्त व्यक्तियों को बुलाया और कहा कि तुम सुमति (लक्ष्मी) को हरिहर शास्त्री के घर पर ले चलो। अब रात्रि के लगभग तीन बज रहे थे। अतः मौलवी ने उस ब्राह्मण वस्ती में ही अपनी इस विश्वासपात्र सेना को कुछ देर विश्राम करने का अवसर देने का निश्चय किया। इस वस्ती में ब्राह्मणों के सभी घर तोड़-फोड़ दिए गए थे। उनमें से एक भी ऐसा नहीं रहा था जिस पर उन्होंने धावा न बोला हो। ब्राह्मणों की सभी कन्याएँ भ्रष्ट की गई थीं। सभी पुरुष घायल थे और कई ने तो अपने प्राणों की भी आहुतियाँ दे दी थीं। मौलवी की आज्ञा नहीं हुई थी, इसलिए वे घर अग्नि की ज्वालाओं में क्षार-क्षार होने से बच गए थे। वह उन सघन वृक्षों की छाया में बने हुए इन घरों को अपना राजमन्दिर बनाना चाहता था! इसीलिए उसने मोपलों की खिलाफत सरकार के आग लगाने वाले विभाग की प्रमुख उस वृद्धा की मशाल से इन घरों को बचा लिया था।

अपने सभी लोगों को बुलाकर मौलवी ने एकत्रित किया और एक आसन पर वह विराजमान हो गया। उसका कंधा अभी भी दुख

रहा था।

"देखो, मैंने जैसा कहा था, वैसा ही हुआ। देख लिया ना? तुम लोगों ने दस ग्राम तहस-नहस किए हैं, किन्तु यहाँ इन ब्राह्मणों के चार घरों को अपने अधिकार में लेने के लिए ही धर्मवीरों को अपना बलिदान देना पड़ा है। यह सब इस हरिहर और कम्बु का ही काम है। दो काफिर इकट्ठे हो गए थे। इसलिए ही इतनी शैतानी करने में सफल हो गए। परन्तु हमारे द्वारा किए गये श्रम का परिणाम हमें मिल गया है।" मौलवी ने कहा।

"वाह खान साहेब! सुमति मिल गई, इसलिए तुम्हारा परिश्रम तो सफल हो गया है, किन्तु हमें क्या मिला? हमें तो अभी तक कुछ भी हाथ नहीं लग पाया। तुम अच्छी तरह समझ लो कि यदि हमें कुछ नहीं मिला तो जो कुछ मिला है वह हम किसी को भी नहीं पचाने देंगे, हाँ!" आँखें तरेरते हुए अब्दुल्ला तिरोला ने कहा।

"अब्दुल्ला! धैर्य धरो भाई! सवेरा होने दो। अल्लाह इनाम-दारों को बरकत देने में समर्थ है। एक नहीं दो, दो—एक-एक को दो-दो मिलेंगी, बस सवेरा होने तक ठहर जाओ। परन्तु जिन काफिरों को बन्दी बनाया गया है उन्हें सामने के मकान में बड़ी सावधानी सहित बन्द कर दो। अरे हाँ, वह तो बताओ कि वह हरिहर अभी तक मिल पाया है कि नहीं। उसको अवश्य ही बन्दी बनाना पड़ेगा!"

"यह रहा हरिहर।" ऐसा कहते हुए सनकी मुहम्मद आगे बढ़ा। हरिहर शास्त्री को तीन मोपलों ने पकड़ रखा था। उनका एक पैर तलवार के प्रहार से उसी प्रकार काट दिया था जिस प्रकार किसी वृक्ष से शाखा काट दी जाती है! परन्तु फिर भी वे उस एक पैर से ही लँगड़ाते हुए चलने वाले हरिहर शास्त्री को घसीटते हुए वहाँ लाए थे। मशाल के प्रकाश में रक्त से सराबोर होकर रक्तमय हुए हरिहर स्पष्टतः दिखाई देने लगे।

मुहम्मद सनकी पुनः बोला, "इस काफिर ने भयंकर घात किया है। उसकी बख्शीश स्वयं इस्लामी वीरों ने ही इसे यह दी है। मौलवी,

तुमने जो कन्या सुमति समझ कर मुझे सौंपी थी, जब मैं लेकर जा रहा था, उस समय इस काफिर ने मुझ पर हल्ला बोल दिया था। अँधेरे में ही मेरे साथ चलने वाले कासम की इसने हत्या कर दी और लड़की को मेरे हाथों से छीनकर यह भागने लगा। अँधेरे में ही वार! अँधेरे में ही पलायन! काफ़िरों से धर्मयुद्ध कैसे किया जाए, यह समझ में ही नहीं आता!"

"परन्तु वह लड़की कहाँ है? वह सुमति नहीं है ऐसा तू कैसे कह रहा है?" मौलवी ने क्रोध से उबलते हुए पूछा।

"वह तो भाग गई? नहीं-नहीं खान साहेब! तनिक सुनिए तो।" घबराते हुए सनकी मुहम्मद ने कहा, "इस काफिर ने उस लड़की को अपनी पीठ पर लाद लिया था। यह आगे था और मैं पीछे। मैं भी इसके पीछे भागता रहा। चाँद की रोशनी में ही मैंने तीन-चार प्रहार अपनी तलवार से कुल्हाड़ी के समान इसके पैर पर किए और इसका पैर काट डाला। परन्तु छोकरी कहीं दिखाई न दी। फिर मैंने इसकी कमर की अच्छी तरह तलाशी ली, किन्तु वह छोकरी तो इसकी पीठ पर भी मुझे नहीं मिली!"

"अरे शैतान! आस-पास ही कहीं छिप गई होगी। क्या वहाँ तूने उसे नहीं ढूँढा?"

"ढूँढा क्या महाराज! उसकी दायीं बगल में खोजा, बाईं बगल में ढूँढा, दूर तक जाकर भी तलाश की परन्तु इसे कौन सँभालता? यह दोनों पैरों से कैसे दौड़ता था, यह तो आपने देखा ही है। उससे आधी गति से यह एक पैर से भी दौड़ता है। अब देख लीजिए मेरा पराक्रम। यह रहा इसका पाँव, अच्छी तरह देख लीजिए।" यह कहते हुए मुहम्मद सनकी ने अपने कंधे पर रखा रक्त से सराबोर उस ब्राह्मण वीर का पांव किसी हाथी की सूंड़ के समान धम्म से धरती पर पटक दिया।

८ | ६

उधर सुमति को लेकर उसका भाई तथा वे दोनों विद्या युवक जहाँ मार्ग निकलता था वहाँ से होते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। थोड़ी देर पश्चात् ही स्थलेश्वर शास्त्री की पुत्री और पत्नी को लेकर दूसरे दोनों विद्या भी, जिनके हाथों हरिहर शास्त्री ने उन दोनों स्त्रियों को सौंपा था भी वहीं आ पहुँचे। अब वे तीन पुरुष और तीन स्त्रियां भी लुकते-छिपते तथा अपने पीछे छूट गए संबंधियों, प्रियजनों का क्या न होगा, इस संबंध में शंका-कुशंकाएँ करते हुए कुट्टम से जितनी दूर निकल सकें उतनी दूर निकलने के प्रयास में चलते जा रहे थे। परन्तु उस प्रलयंकर झंझावात में हरिहर के शौर्य के कारण बच जाने वाली एक चौथी नारी भी थी। वह थी तरुण लक्ष्मी। वह एकाकी वृक्षों के एक झुण्ड के पीछे छिपकर बैठी हुई थी। हरिहर शास्त्री पैर टूट जाने के पश्चात् भी मुहम्मद सनकी को बहुत देर तक अपनी पकड़ में लिए रहे थे। इसी से लक्ष्मी को बचकर निकल जाने का अवसर मिल गया था। वह कुछ दूर तक भागने के उपरान्त उस वृक्षों के समूह के मध्य जा छिपी थी! वह थी तो साहसी परन्तु थी तो स्त्री ही और वह भी युवती। उस सघन वन में उसे दूर से आती हुई गीदड़ों की आवाज और बाघों की गर्जना जब सुनाई देती तो उस युवती के मन में इतनी अधिक घबराहट होती थी कि वह सोचती थी कि भला इस घोर वन से बड़ा और संकटापन्न स्थान कौन-सा हो सकता है! वह यह भी विचार करने लगती थी कि इससे कुट्टम ग्राम में रहना ही

अधिक अच्छा था। साँप और अंधकार दोनों से ही उसे एक समान भय लग रहा था। वह बार-बार यही सोच रही थी कि क्या अच्छा हो यदि कोई मनुष्य वहाँ आ जाए। किन्तु वहाँ जिस कुंज में छिपी हुई थी, वहाँ कोई भी भयंकर जीव-जन्तु भी नहीं आया! मोपलों से अधिक भयानक जन्तु भी भला कोई और हो सकता था क्या? परन्तु किसी भी जीव-जन्तु के समीप न होने से भी उसे इस निर्जीव और निर्जन वन में भय लग रहा था! अपने प्रियजनों की गोदी और कंधे पर चढ़कर वहीं लक्ष्मी यद्यपि बहुत अधिक भयभीत हो गई थी, परन्तु फिर भी किसी प्रकार उसने धीरज धरा और रात वहीं काट दी! अभी पौ फटने को ही थी कि उसने पुनः वहाँ से भाग चलने का निश्चय किया। वह एक-दो मील ही भाग पाई होगी कि उसने अपने ही समान भयभीत होकर बढ़ती हुई दो अन्य स्त्रियों को कुछ दूरी पर देखा। लक्ष्मी के मन में एक बार यह शंका भी उठी कि कहीं ये मोपलों के पक्ष की ही स्त्रियां न हों, किन्तु वह तो निर्जनता से ऊब गई थी अतः किसी प्रकार की आवाज न करती हुई वह उन स्त्रियों के समीप जा पहुँची! उन महिलाओं ने भी वही जिज्ञासा-सहित लक्ष्मी को देखा। उसे देखते ही धीमी सी आवाज में उनमें से एक स्त्री बोल उठी—"अरी बहन! तू यहाँ कहाँ! तुम ब्राह्मणी हो! तुम्हारे तो नाखून भी हमने कभी नहीं देखे। देवताओं का यह कौन-सा प्रकोप है! इन मरे मुसण्डों के दंगे से तुम्हें भी निकलना पड़ा। तुम्हारे द्वार की झूठन हमने अनेक बार खाई होगी! तुम्हारे कुटुम ग्राम की ही हम दोनों मसकुनियां हैं, बहन!"

"बहिनों," लक्ष्मी ने नेत्रों से अश्रु गिराते हुए कहा, "तुम इधर कहाँ जा रही हो!"

"हम पर भी उन मरदूद मोपलों ने अत्याचार किए हैं। भाई हमारे पास तो पैसा-धेला कुछ भी नहीं था। तब भी उन्होंने हमारी झोंपड़ी में आग लगा दी। हमारे पुरुषों की धर-पकड़ की और हम सब से बोले, "मुसलैमान हो जाओ, नहीं तो मार दी जाओगी।" पर बाई;

हम अपनी मसकुनि जाति को कैसे छोड़ दें ? बाई, हमने उनसे कहा, "हम ब्राह्मणी नहीं, हमारे पीछे क्यों लगते हो ?" तभी उनमें से एक बुढ़िया हमारी धोतियों में आग लगाने लगी और बोली, "पर तू हिन्दू तो है ना ! हम कुत्तों से तुम्हें हिन्दू अधिक नीच समझते हैं, परन्तु तुम मसकुनि लोग मुसलमान नहीं होते। तुम्हीं ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों के पैर हो। वे तुम्हारे ऊपर ही खड़े हुए हैं। तुम हटे कि वे धम्म से नीचे आ पड़ेंगे !" उसके द्वारा घर जला दिए जाने से किसी प्रकार हम बचते हुए यहाँ तक भाग आई हैं। परन्तु हमारा क्या ! हम तो मसकुनि हैं। परन्तु बहिन ! तेरा इस जंगल में क्या होगा ?" यह कहते-कहते उस मसकुनि स्त्री के नेत्रों से गंगा-यमुना प्रवाहित उठी। मलाबार में यह मसकुनि जाति अस्पृश्यों से भी अस्पृश्य मानी जाती है। थिय्या भी उनके साथ व्यवहार नहीं करते। जैसे महार डोंबों को अपने से नीचे मानते हैं इसी प्रकार यह मसकुनि जाति थिय्यों से भी वहां नीची समझी जाती है !

लक्ष्मी का भी कंठ भर आया और यह बोल उठी—"बहिनों, तुम अपना दुःख भुला कर मेरी चिन्ता न करो ? देवताओं ने तुम्हें इतना उदार हृदय दिया है। तुम मसकुनियाँ तो मेरे जैसी ब्राह्मणी की अपेक्षा कहीं अधिक उच्च जाति की हिन्दू हो। नहीं, नहीं, बहिन ! तू इस तरह पीछे न हट। यह देख, मैं कितनी देरी से किसी के गले से लिपटकर कुछ देर रो लेने के लिए अकुला रही हूँ। तुम संकोच न करो। क्षण भर मुझे अपनी गोदी में भर लो। तुम्हीं मेरी माता हो !" ऐसा कहती हुई लक्ष्मी उस मसकुनी से लिपट गई। किन्तु वह मसकुनी अपने-आपको मन ही मन यह विचारते हुए दोष देने लगी कि इस ब्राह्मणी से छूकर मैंने भारी पाप किया है। किन्तु फिर भी वह मसकुनी लक्ष्मी को सांत्वना देने लगी। थोड़े समय बाद ही उस दुख की वेला में उन तीनों में उमड़े प्रेम का ज्वार शान्त हो गया और वे फिर भयभीत होतीं, लुकती-छिपती आगे बढ़ने लगीं। थोड़ी दूर पहुँचने पर ही उन्हें अपने ग्राम का विष्णु नायर नामक एक व्यक्ति दूरी पर जाता

हुआ दिखाई दिया। उन भयभीत स्त्रियों को लगा कि परमात्मा ने ही उसे हमारी सहायता के लिए यहाँ भेजा है। वे बड़ी आशा-सहित उसके पास पहुँचीं। उन्हें देखते ही विष्णु नायेर की भृकुटी तन गई। मानो वह अपने-आपसे ही कह उठा मैं तो अपना ही पाप ज्यों-त्यों बचा पाया हूँ, ये कहाँ से गले पड़ गई हैं। वह बोल उठा, "मेरे पास क्या धरा है! यहाँ क्यों आई हो?" "महाराज! वह वृद्ध मसकुनि हाथ जोड़ कर बोली— "महाराज, आप नायर लोग अपने-आपको क्षत्रिय कहलवाते हैं। हम अबला हैं। हमारा दूसरा कोई भी नहीं! इस ब्राह्मणी की मौसी का ग्राम यहाँ से दो कोस की ही दूरी पर है। इसे वहाँ तक पहुँचा दीजिए। मोपलों ने रास्ता रोका हुआ है, इसी-लिए हमें डर लग रहा है।" "परन्तु तुम्हारी जाति क्या है?" नायर बोला। "समकुनि-डोम, बाबा!" और तू मुझ से २०० फुट दूर न रहकर बात कर रही है? राक्षसिनी, मेरा धर्म डूब गया है? जानती नहीं मैं क्षत्रिय हूँ, धर्म के लिए तो हम अपने प्राणों की भी चिन्ता नहीं करते।" ऐसा कहते हुए उस स्त्री की छाया अपने ऊपर पड़ जाने से क्रुद्ध होने वाले उस क्षत्रिय ने उस अस्पृश्य वृद्धा को तड़ाक से धक्का दे दिया। उसकी पुत्री सहसा ही रो पड़ी। तब लक्ष्मी क्रोध और दया से लाल हो गई और गरज उठी—"अरे विष्णु! इस बेचारी अछूत नारी पर तो तू पराक्रम दिखा रहा है और वे तेरे बाप! वे मुसल-मान मोपले तेरे घरों की महिलाओं पर, तेरे देवालयों पर अत्याचार कर रहे हैं, उनको अपना यह पराक्रम क्यों नहीं दिखाता? उनके भय से तो तू किसी नपुंसक के समान अपने प्राण बचाकर भागा जा रहा है। तेरी इस कायरता से तेरा क्षत्रिय धर्म नहीं डूबा। परन्तु इस बेचारी वृद्धा की छायामात्र पड़ जाने से ही तेरा धर्म नष्ट हो गया है। मुसलमान इन्हें हिन्दू कहकर जान से मारते हैं, हिन्दू इन्हें मसकुनि-अस्पृश्य कहकर ठोकर मारते हैं, धक्का देते हैं। तब फिर बता ये जाएँ तो कहाँ जाएँ?" वह नायर जरा सँभलते हुए बोला—"तू चाहती है तो मेरे साथ चल। यद्यपि तेरे समान सुन्दर तरुणी को साथ लेकर चलना

भी मोपलों के संकट को न्यौता देना ही है। फिर भी तू मेरे ग्राम की ब्राह्मणी है, तू चल; मैं तुझे पहुँचा देता हूँ। परन्तु ये मसकुनि स्त्रियाँ मेरे साथ चलीं तो क्षत्रिय मुझे जाति से निष्कासित कर देंगे।"

"क्यों नहीं निकालेंगे।" लक्ष्मी ने तिरस्कार सहित कहा—"अबलाओं की परधर्मियों से तूने रक्षा न की तो भला तेरा क्षत्रियत्व कहाँ से बच जाएगा ? परन्तु तूने तो ऐसा कोई पाप किया नहीं है। हिन्दू धर्म और हिन्दू जाति पर भयंकर अत्याचार हो रहे हैं। और तू इन अत्याचारों के करने वाले विधर्मियों के समक्ष लड़ा भी नहीं है। तू तो भाग निकला है। मुसलमानों ने तेरी बहिन और बेटियों को उठाया है, इससे तेरा धर्म नष्ट हो गया है, यह तू नहीं समझता। परन्तु हिन्दू अस्पृश्यों की छायामात्र पड़ने से ही तेरा धर्म रसातल को चला गया है। वस्तुतः तू सच्चा धर्मज्ञाता क्षत्रिय है, इसमें तो किंचित्मात्र भी शंका नहीं की जा सकती। मैं तेरे साथ नहीं जाती। मैं तो अपनी इन मसकुनि बहिनों के ही साथ रहूँगी। डोम्बों की स्त्रियों का सुख-दुःख मेरा अपना ही सुख-दुःख है! हिन्दुत्व पर संकट आता है तो डोंब, महार, मागे, ब्राह्मण, ये डोंब, महार, मागे नहीं केवल हिन्दू हैं, ऐसा मानने वाली तथा तदनुसार आचरण करने वाली आत्मा ब्राह्मणों में है यह सिद्ध करने के लिए मैं इन मसकुनियों के साथ रहूँगी। तू जा, चला जा!"

लक्ष्मी अभी यह कह ही रही थी कि वह नायर क्षत्रिय कभी का दूर निकल चुका था। थोड़ी देर तक ये स्त्रियाँ आगे बढ़ती रहीं। उन्हें दूर से उठता हुआ शोर सुनाई दिया। वे तीनों ही भयभीत होकर एक वट-वृक्ष के समीप ही लगे हुए करौंदे के झाड़ के पीछे छिप कर कुछ समय काट देने के विचार से वहाँ चली गईं। वहाँ अचानक ही उनको स्थूलेश्वर शास्त्री के परिवार की दोनों स्त्रियों तथा सुमति से भेंट हो गई। दुःख का कितना आवेग! कितना भय! पीछे क्या कुछ हुआ है, यह बताने की आतुरता। किन्तु इन सभी मनोविकारों को दबाए, रखने पर भी सुमति के मुख से यह शब्द निकल ही पड़े—"तेरी मेरे

पिताजी से कहीं भेंट हुई है क्या ?" इसका उत्तर लक्ष्मी केवल यही दे पाई—"उन्होंने ही तो मेरा जीवन और धर्म बचा दिया, परन्तु इस युद्ध में शत्रु ने उनका पैर कुल्हाड़ी से काट कर अलग कर दिया और उन्हें बन्दी भी बना लिया है।"

"हाय बहिन !" कहते हुए सुमति एकदम फूट-फूटकर रो पड़ी। "हे बेटी, धैर्य धर। मत रो मेरी लाडली।" ऐसा कहते हुए स्थूलेश्वर शास्त्री की पत्नी सुमति को सान्त्वना देने लगी। परन्तु भय ने उसका रोना बीच में ही रोक दिया था, कारण यह था कि तीन-चार थिय्या और उसका भाई जब आवाजें कहां से आ रही हैं, यह जानने के लिए गए थे तो उन्होंने इन स्त्रियों को यह चेतावनी भी दे दी थी कि वे चूं-चाँ कुछ भी न करते हुए इसी झाड़ी में छिपे रहें, यह आदेश दे गए थे। मेरे रोने से कहीं कोई नया संकट ही उपस्थित न हो जाए, यह सोचकर ही सुमति भय के कारण चुप हो गई थी।

अब प्रातःकाल हो गया था, दस बज रहे होंगे। रात्रि-भर चलते-चलते, भय से त्रस्त, भागते-भागते दुःखाग्नि में जलते-जलते उन सभी स्त्री-पुरुषों का कण्ठ सूख गया था। आस-पास कहीं पानी की बूंद के भी दर्शन नहीं हो पाये थे। कल दस बजे, इसी समय शान्त और रमणीय कुट्टम ग्राम में हरिहर शास्त्री अग्नि के समक्ष आहुतियां समर्पित कर उठे थे। सुमति अपने द्वारा तोड़े गये पुष्पों की माला गूंथने में व्यस्त थी कि उसके भाई ने चुपचाप अपने हाथों से उसके नेत्र मूंद लिए थे। लक्ष्मी तुलसी की प्रदक्षिणा कर रही थी और उधर पारिजात पर बुल-बुल बैठती और उड़ती तथा वह अपने हाथ की माला से उन्हें उड़ाती हुई मनोरंजन कर रही थी। वे बुलबुल उड़ती थीं और पुनः आ बैठती थीं। वह मसकुनि तरुणी अपनी बहन के समक्ष गीत गाती हुई कह रही थी—

"चोटी कर चोटी कर, वे पी घाल, वे पी छाल।
मालती के फूल डाल, ससुराल चाल॥"

और स्थूलेश्वर शास्त्री की पुत्री ससुराल से पहली बार आई अपनी प्रिय

बहिन से प्रेम के अतरेक में कह रही थी, "क्या करूँ, मैं क्या करूँ, मेरी बहन ?" और वह वृद्ध मसकुनि अपने गृह-आँगन में लगी हुई शाक-सब्जियों में से अपनी मनपसन्द कोई सब्जी तोड़ती हुई कह रही थी, "यह भाजी मेरी बच्ची को बहुत ही पसन्द है, नहीं ! अच्छा इसे तो मैं अब कल ही तोड़ूंगी।"

अभी चौबीस घण्टे ही बीते होंगे, दस ही तो बज रहे हैं, किन्तु ये सब आज क्या कर रहे हैं ? यह कोई भयंकर कल्पना नहीं अपितु एक सत्य अनुभूति है ! उन्हें जो इतना भयंकर अत्याचार सहन करना पड़ रहा है, वे जो इस भयंकर पीड़ा से त्रस्त हैं, भला उन्होंने ऐसा कौन-सा पाप किया है, कौन-सा अपराध हो गया है, उनसे ?"

यही न, कि उन्होंने हिन्दू समाज में जन्म ग्रहण किया है। और वे हिन्दू ही रहने के इच्छुक हैं ! व्यक्तिगत रूप से बस इतनी ही तो उनकी इच्छा है !

किन्तु सामाजिक दृष्टि से स्थिति क्या है। यह कितना बड़ा अपराध है कि उनका अपना हिन्दू समाज इतना असंगठित है और उसमें है परस्पर इतना अधिक असहयोग। यह समाज जो बालू के कणों के ढेर के समान है। जो केवल पूर्वजों के पुण्य-कर्मों के अवशिष्ट अंश के कारण ही एक समाज के रूप में विद्यमान है। परन्तु अवशिष्ट पापों से प्रति क्षण विशृंखलित होता जा रहा है, छिन्न-भिन्न होता जा रहा है।

अब यह शोरगुल कैसा है, यह जानने के लिये गए हुए वे पुरुष वापस लौट आए थे। यह शोर-गुल शत्रुओं द्वारा ही किया जा रहा था। कारण यह था कि जिस मार्ग पर ये सब चले जा रहे थे, उसी मार्ग से मोपलों की एक दूसरी बड़ी टोली हिन्दुओं की मृगया करती हुई आ रही थी। इस संकट को देखते ही वे पुरुष भयभीत हो उठे थे तथा इस चिन्ता से ग्रस्त हो उठे थे कि अब क्या होगा। एक भयंकर संकट का सामना करने और आत्मरक्षा का मार्ग खोजने में ही उनकी सम्पूर्ण शक्ति लग रही थी। उनके कंठ जल के अभाव में सूख गए थे।

स्नायु विश्राम के अभाव में शिथिल हो रहे थे। किन्तु इतने पर भी यदि वह ब्राह्मण कुमार, वे थिय्या युवक यदि अभी तक हाथों में शस्त्र लिए हुए खड़े रह सके थे तो वह अकेले दामू के ही धैर्य और दृढ़ निश्चय के ही भरोसे। "जीवन की अन्तिम घड़ी तक लड़ेंगे, धर्म के लिए मरेंगे, मलाबार का हिन्दू लड़ सकता है। हमने तो अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया, बस!" यह वाक्य उनमें से किसी एक के मुख से निकला ही था कि सुमति आवेश सहित बोल उठी, "मुझे एक छुरी दो, मैं भी एक-न-एक हिन्दू-द्वेषी को मारकर ही मरूँगी।"

दामू ने उसे एक छुरी दी और बोला, "देवी! जब तक मैं जीवित हूँ, तुम्हारे हाथ की छुरी मैं हूं। मेरी मृत्यु के उपरान्त यह।" उस तरुण और तरुणी के उत्साह से प्रेरित होती हुई मसकुनि जाति की वह अस्पृश्य बाला मालती भी आवेश में आकर बोल उठी, "मुझे भी एक छुरी दे दो। मैं भी हिन्दू धर्म के लिए लड़ते-लड़ते ही अपने प्राणों की भेंट चढ़ाऊँगी।" दामू ने उसे एक और छुरी दे दी। परन्तु वह उस छुरी को अपने हाथों में नहीं पकड़ रही थी। "नीचे डाल दो, मैं इसे नीचे से उठा लूंगी। मेरी जाति मसकुनि है। तुम थिय्या हो। मैं ग्राम में सब से तुम से दूर रही। मेरा आपका पर्श हो गया तो आपका अशुभ हो जाएगा न।"

दामू हँसा और बोला, "हमारी इच्छा है कि हम ब्राह्मणों की बराबरी करें। ब्राह्मण भी हमें अपने बराबर का अधिकार दें, यह हम माँग करते हैं। किन्तु ऐसा कहने से पहले महारों को तथा डोम्बों को अपने समान अधिकार देने होंगे। तू मसकुनि है, किन्तु तू हिन्दू भी है न। मैं भी हिन्दू हूँ। अतः मेरे हाथ से यह छुरी ग्रहण कर। जब मुसलमानों से मेरे छू जाने में कोई दोष नहीं होता तो फिर भला तुझ हिन्दू से छू जाने से अनिष्ट क्या होगा! आज तुझमें हिन्दू धर्म के लिए मरने का उत्साह जाग्रत हुआ है, अतः तू मेरे लिए ब्राह्मण की अपेक्षा कहीं अधिक पूज्य है! ले पकड़ यह छुरी अपने हाथ में और जो धर्म का शत्रु पहले दिखाई दे, और जो भी आततायी सामने आए, कर उस पर इसी से

प्रहार कर।"

मालती ने दामू के हाथ से वह छुरी ले ली। दैव की क्या इच्छा है, यही देखने के लिए वे सभी उस झाड़ी के पीछे छिप गए थे।

कुछ ही क्षण बीते होंगे कि 'दीन-दीन' और 'अल्ला हो अकबर' की गर्जना करती हुई डेढ़-सौ दो-सौ मुसलमानों की टोली और आगे बढ़ आई। इस उपद्रव में दस-बारह ग्रामों के मोपले एकत्रित होकर एक हरे कपड़े की पताका बनाए उसे तुर्कों का ध्वज बताते और फहराते हुए हिन्दुओं की लूट-मार करते हुए चले आ रहे थे। जो मुसलमान जितना बड़ा गुण्डा और जितना अधिक अत्याचारी था, वह उतना ही बड़ा धर्मवीर बन गया था। क्योंकि जिहाद-सरीखा कोई अन्य धन्धा मिलना भी तो उनके लिए आसान नहीं था। वे राक्षस आगे बढ़ते इधर-उधर भी टटोलते हुए चल रहे थे। क्योंकि जो हिन्दू अपने प्राण बचाकर इधर-उधर छिपे हुए थे, वे उन्हें भी मृत्यु के मुख में ठेलते आगे बढ़ते आते थे। दुर्दैव से अब वे उस झाड़ी के समीप ही आ पहुँचे और उनमें से किसी ने उधर झाँकते ही चिल्लाना आरम्भ कर दिया 'काफिर,' 'काफिर !' चारों ओर से आवाज़ गूंज उठी, 'काफिर ! काफिर !' पहले जो दस-पाँच मोपले आगे बढ़े उन्हें तो उस तरुण विद्या तथा उसके सहायकों ने अपनी तलवारों की भेंट चढ़ा दिया। किन्तु अब तो यह सारी टोली ही उन पर टूट पड़ी थी। दामू के पास भी छुरियाँ और अधिक नहीं थीं। अन्यथा वह उन महिलाओं को भी एक-एक छुरी दे देता। अब निराशा साक्षात् रूप धारण कर उनके सम्मुख आ खड़ी हुई थी। वह टोली उनकी ओर बढ़ आई थी। युवतियों के हाथ में तलवारें देखकर वे मोपले चीत्कार कर उठे। खटाखट तलवारें एक-दूसरे से टकराने लगीं। तीन-चार मुसलमानों की निर्जीव देह भू-लुंठित हो गईं। इस समय तक हरिहर शास्त्री का वीर पुत्र अपने शौर्य का प्रदर्शन करता हुआ उन स्त्रियों से शत्रुओं को दूर रखे हुए था। किन्तु सहसा ही तीन-चार तलवारें उस पर एक साथ पड़ीं और उसकी देह टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गई। एक पूरा

आघात लगने से उस मसकुनि का सिर भी नारियल के समान कटकर टूट गया था। अपने भाई की हत्या होते हुए देखते ही सुमति क्रुद्ध सिंहनी के समान उसका वध करने वाले मुसलमानों पर टूट पड़ी। उसने अपनी छुरी के प्रहारों से दो के पेट चीर दिए। किन्तु सहसा ही कई मोपलों ने एक साथ उसे पकड़े कर उसके हाथ से छुरी छीन ली। वे अब उसे अपनी-अपनी भुजाओं में भरने का प्रयास ही कर रहे थे कि सहसा ही एक आवाज गूंज उठी, "हाँ, दूर हो जाओ।" इस अधिकारपूर्ण स्वर को सुनते ही वे मोपले उसे छोड़ कर अलग हो हो गए। उसी समय उस टोली के मुखिया ने कहा, "इस छोकरी को जाने मत दो, किन्तु इसके हाथ बाँधकर इसे मेरे साथ-साथ ले चलो।" आँखें मटकाते हुए ये मोपले पुनः सुमति को बन्दी बनाने के लिये आगे बढ़े। वे उसे बन्दी बनाकर ले चले। मार्ग में ले जाते समय सुमति अचेत हो गई थी। उधर वह थिय्या तरुण भी अनेक घावों के लगने के कारण बेचैन हो रहा था और उसे भी मोपले बन्दी बनाकर अपने साथ लिए चल रहे थे। वह मसकुनि मालती, लक्ष्मी और हरिहर शास्त्री की पत्नी, इन्हें मोपलों ने उड़ा लिया था अथवा वे मारी गई थीं। इसका भी किसी को पता नहीं था। थोड़ा आगे बढ़ते ही एक गाड़ी दिखाई दी। उस टोली का मुखिया बोल उठा, "इस छोकरी को उस गाड़ी में बैठा दो।" सुमति को उठाकर उस गाड़ी में पटक दिया गया। और वह मुखिया भी उसी गाड़ी में सवार हो गया। और वह गाड़ी उस दिशा से विपरीत दिशा में बढ़ चली, जिसमें दामू थिय्या को ले जाया जा रहा था। इस प्रकार कठिन-से-कठिनतम और भयंकर-से-भयंकर जो कोई संकट सुमति पर आ सकता था वह उसे झेल रही थी।

उसका धैर्य-मेरु डगमगा उठा और वह दहाड़ें मार कर रो पड़ी! "दामू! दामू!" ही उसके कंठ से निकल रहा था। वह आज इतनी अधिक विह्वल थी कि जीवन में इससे पहले कभी भी नहीं हुई थी। उसने बड़े जोर-जोर से दामू को आवाज लगाई। किन्तु गाड़ी तेजी से

भागती हुई जा रही थी और अब दामू उसकी दृष्टि से पूर्णतः ओझल हो गया था। उस निराधार स्थिति में, उस किशोरी के मन में चुभते हुए वियोग के दंश, उससे फूटती हुई वेदना की लहर का वर्णन भला कोई क्या कर सकेगा ? वह तो उसी भांति तड़प उठी थी, जिस भांति मछली जल से बाहर निकलते ही तड़पती है !

और बेचारा दामू ? विगत दो दिनों से तो उसकी सम्पूर्ण भावनाएं, उसका विचार, उसका विकार उसके रक्त-बिन्दुओं का प्रत्येक स्पन्दन सुमति के लिए ही समर्पित था। और वह आज उसी सुमति की रक्षा कर पाने में असफल रहा था। फिर भी वह जीवित है, यह विचार आते ही दामू—वह अठारह वर्ष का तरुण लड़का—वह भी उस किशोरी का स्मरण कर दाहड़ें मार मारकर रुदन कर उठा।

सुमति को उस मुखिया ने थोड़ा डांटा, कुछ दया का भी प्रदर्शन किया और बोला, "छोकरी ! रोती है ! अरे, रोकर तो तू अपने आपको ही अधिक कष्ट दे रही है ? जितना तू अधिक रोएगी उतना ही अधिक संकट में पड़ेगी। तेरे ऊपर बन्धन उतने ही अधिक कठोर हो जाएँगे। परन्तु तू ऐसी पागल नहीं है। तू मेरे बारे में जानती है न ! देख मैं इस टोली का मुखिया हूं। इस ताल्लुके का कलेक्टर हूं। मेरा नाम क्या तुझे विदित नहीं है। इस खिलाफती राज्य में मैं भी अलीमुसेलियर के समान बराबर का अधिकारी हूँ। उसके समान ही मेरा भी हुक्म चलता है। खलीफा ने मुझे कलेक्टरी दी है और कुट्टम ग्राम का मौलवी भी मेरे ही मातहत है। अब तुझसे मुझे प्रेम हो गया है और तुझ पर मेरा विश्वास भी है। क्या तू नहीं जानती कि मेरा नाम क्या है ? मेरा नाम ऐटखान है।"

अपने-आप ही प्रश्न करने वाला तथा स्वतः ही उनका उत्तर देने वाला यह ऐटखान वही था, जिसका उल्लेख पहले कालीकट की सभा में किया जा चुका है ! वह सुमति का मनोरंजन कर रहा था। हां मनोरंजन, किन्तु ठीक वैसा ही जैसा मनोरंजन उस मछियारे द्वारा जल से निकाल कर अपने जाल में फंस जाने वाली उस तड़फती हुई

मछली का किया जाता है, जिसे पाकर वह झूम उठता है और मस्ती में आकर गाने लग जाता है।

गोपुर ग्राम समीप आ गया था। ऐटखान ने एक मकान में मिट्टी की एक दीवार के सहारे चादर, तान कर, एक पुरानी अलग कोठी बना दी और उसमें सुमति को छोड़ वहां भोजन की भी व्यवस्था कर दी गई थी और बाहर कठोर पहरा बैठा दिया था! सुमति को वहां बैठाकर उसने कहा, "मैत्रिणी! तू शान्त होने तक मेरे इसी बंगले में रह। शान्त हो, तुझे मेरी गर्दन की कसम! मैं यहां के ब्राह्मणों को ठिकाने लगाकर उन्हीं के बंगलों में अपना थाना स्थापित करूंगा। आज का दिन तो यहीं बिता। मैं सायंकाल वापस आऊंगा।" ऐसा कहते हुए वह मोपला वहां से विदा हुआ! इधर सुमति तड़प रही थी! अन्न ग्रहण करना तो दूर रहा, उसने पानी की बूंद तक भी अपने कंठ से नीचे नहीं उतारी। बाबा! दामू! भय्या! कहते-कहते पुनः वह दहाड़ें मारकर रोने लगी! अब वह क्या करेगी। इन नराधमों के बन्दीगृह से मुक्त होने की उसे कोई भी आशा नहीं रह गई थी। वह सायंकाल तक इसी प्रकार तड़पती रही!

परन्तु मन के दुःख की भी नियति ने नैसर्गिक मर्यादा निर्धारित की हुई है! आज असहनीय कष्टों को सहते-सहते दो दिन व्यतीत हो गए थे। उसका शरीर थक चुका और मन भी इतना अधिक थक गया था कि उसका प्रत्येक मज्जापिंड, प्रत्येक रक्तपिंड क्षीण होता जा रहा था और अब उसे नींद नहीं अपितु मूर्छा आ गई थी और वह निश्चल और निर्वेदन होकर पड़ गई थी।

दिन बीता, रात आई। ऐटखान भी पुनः आ धमका। सुमति प्रगाढ़ निद्रा अथवा मूर्च्छा की अवस्था में थी! यह देखकर ऐटखान को एक प्रकार के आनन्द की अनुभूति हुई। क्योंकि उसके रुदन और चीखने-चिल्लाने से तो इस दुराचारी के रंग में भंग ही पड़ता था। उसने उस मूर्च्छित ब्राह्मण कन्या को कस कर पकड़ लिया और मन ही मन सोचने लगा, "यह ब्राह्मण कुल की शुचिमूर्ति, सुन्दर युवती मेरे

जैसा व्यक्ति पीढ़ी-दर-पीढ़ी पुण्य करेगा तब भी उसके पल्ले न पड़ेगी। कनकलतिका आज मेरे हाथों में है।" ऐसा विचारते-विचारते उसने अपने मन की कलुसित वासना को पूर्ण करने का निश्चय किया। वह सोच रहा था कि अच्छा ही है कि इसे नींद आई हुई है, अन्यथा यह प्रतिरोध अवश्य ही करती!" यह सोचते-सोचते ही वह उसके पास लेट गया! उसे उसने अपने और समीप खींच लिया और मन ही मन बोला 'या अल्लाह! तूने मुझे मेरे धर्मवीरत्व का श्रेय प्रदान किया है! अल्लाह! यह परी तुमने मुझे प्रदान की है! निःसंशय कुरान ईश्वर प्रतीत है। उसके वचन सत्य हैं!' 'इनामदार' को परी मिलेगी! यह वचन अल्ला तुमने सत्य ही कहा है! कितनी मृदुल्य है, इसकी देह?' मोपला विचारों में खोया-खोया कामोन्मत्त हो उठा। उसने पुनः उसे अपनी छाती से चिपटा लिया। सुमति कमलिनी-सी मुरझा गई। रात्रि-भर इसी तरह रहना। जागना नहीं छोकरी! ऐसा कहते हुए उसकी साड़ी की ओर हाथ बढ़ाने लगा। इस किशोरी के जिन अंग-प्रत्यंगों को कभी सूर्य की किरणों ने भी स्पर्श नहीं किया था, उत्कट काम में अन्धा होकर वह कामुक लम्पट उन्हें स्पर्श करने ही लगा था कि तोबा! तोबा! कहते हुए चीख उठा। परन्तु उस एकान्त में तो उसकी पुकार सुनने वाला कोई भी नहीं था।

रात्रि बीती! सवेरा हुआ। इस ग्राम में आकर मोपलों की एक अन्य टोली ने आकर उपद्रव करना आरम्भ कर दिया! ऐटखान की टोली के लोग घबराकर उसे इस समाचार से अवगत कराने के लिए आ पहुँचे। उन्होंने आकर द्वार ठकठकाया। भीतर से कोई आवाज़ न आने पर उसे तोड़ दिया तो देखकर हतप्रभ रह गए!

ऐटखान मरा पड़ा था। और एक भयंकर नाग अपने फण को छत्री के समान सुमति के सिर पर फैलाए हुए था। ऐटखान के शरीर पर सर्पदंश के इतने अधिक चिह्न थे कि उसके प्रत्येक रन्ध्र से विष से दूषित रक्त प्रवाहित हो रहा था।

'नाग!' 'नाग।' चारों ओर यही चीत्कार होने लगा! सुमति

भी द्वार पर हुई ठकठक से अपनी नींद से कुछ जाग उठी थी। ज्यों ही वह उठी तो वह नाग उसके पैरों को चाटने लग गया। "फणीन्द्र, मेरा फणीन्द्र" कहते हुए सुमति ने उसके शरीर को सहलाया और सहज में ही उसके कंठ से वह गीत मुखरित हो उठा जो प्रतिदिन गाकर वह नाग को रिझाया करती थी। प्रगाढ़ निद्रा से उठते ही ऐसा लगा कि वह अपनी फूलों की बगिया में ही प्रातःकाल फणीन्द्र के साथ खेल रही हो।

उसी समय उसका ध्यान समीप ही पड़े ऐटखान और उसके समीप पड़ी हुई छुरी की ओर गया। इससे उसे सम्पूर्ण स्थिति समझ में आ गई। वह समझ गई कि मेरी रक्षा के लिए फणीन्द्र इस प्याले में पिलाए गए दूध का उपकार स्मरण कर मेरे मार्ग में आया है। जिस समय मैं बेसहारा हालत में थी, तब इस दुष्ट ऐटखान के स्पर्श से मेरा कौमार्य भंग हो जाएगा यह समझकर फणीन्द्र ने मेरे साथ हुए अत्याचार का प्रतिशोध लेने लिए ऐटखान को डस कर यमलोक भेज दिया। वस्तुतः इस सर्प के रूप में परमात्मा ही मेरे रक्षक बन कर आए। जिसने द्रौपदी की लाज रखी थी, उसी ने मेरी लाज बचाई है। वह सर्वदा भक्तों की लाज इसी प्रकार रखता है! यह विचार सहसा ही सुमति के मन में कौंध उठा।

पर, हे बेचारी लड़की! थोड़ा ठहर, केवल न्याय की इस कल्पना में ही न खो जाना। घटनाक्रम का स्मरण कर। परमेश्वर ने यह न्याय और धर्म, उसकी रक्षा और संरक्षण तो वह सदा करता ही है! किन्तु इसी कल्पनालोक में न खोई रहना! अब परमेश्वर ही तेरी लज्जा की रक्षा करेगा केवल इसी मान्यता के भरोसे न रहते हुए तू अपनी कमर में खोंसी कटार पर अधिक अवलम्बित हो! समय आने पर तेरी इस भावना के स्थान पर शायद यही अधिक उपयोगी सिद्ध होगी! कारण ऐटखान तो मर गया परन्तु मोपले तो अभी जीवित ही हैं।

अभी सुमति इन विचारों के ऊहापोह में ही रमी हुई थी कि

मोपले उस कोठरी में आ घुसे। उस नाग ने किसी निर्भीक वीर के समान उनमें से एक को फुंकारें मारते हुए डस लिया। किन्तु तभी दो तीन तलवारें उस पर पड़ीं और टुकड़े-टुकड़े हो गए। तभी वे मोपले सुमति पर टूट पड़े। सुमति ने भी सहज ही एक आड़ का आश्रय लिया और अपनी छुरी निकाल ली! उसने उन मोपलों में से दो-तीन के पेट को अपनी छुरी के प्रहारों से फाड़ दिया और वे दम तोड़ गए। अब वह छुरी अपने पेट में भोंकने ही वाली थी, उसने हाथ ऊपर ही किया था कि उसका हाथ पकड़ लिया गया। उसने अपने हाथ को छुड़ाने का असफल प्रयास किया, परन्तु भला उसे मरने कौन देता? केवल इस छीना-झपटी में ही उसके सिर पर मोपलों की तलवार का आघात लगा था, जिससे उसके सिर घाव में हो गया था। उस घाव से निकलता हुआ रुधिर उसके कंठ तक बह कर आ रहा था। उन मृत पड़े मोपलों के पेट से बहे रक्त से वह कोठरी भर गई थी। उस रक्त में उस नाग के टुकड़े तड़प रहे थे। जो पांच-छः मोपले कठोरी में घुस आए थे वे सुमति को पकड़े खड़े थे और उन्होंने उसके हाथ से छुरी छीन ली थी। वे इस पुष्प-सी कोमल कन्या को फूल के समान मसलने लग गये थे। ऐसी विकट स्थिति थी और चारों ओर फैले रक्त ने स्थिति की बीभत्सता को और भी अधिक बढ़ा दिया था।

"फ़ज़ल! देखता क्या है!" एक मोपला सुमति के दोनों हाथों को, जो ऊपर की ओर उठे हुए थे, पकड़े खड़ा हुआ अपने साथी से कह रहा था। "अरे कल उस झाड़ी से यही पखेरू अपने साथ आया था। परन्तु ऐटखान ने बीच में ही धोखा दे दिया। अब देखना क्या है? अन्यथा यदि उस मौलवी की टोली के लोग एक बार यहाँ आ पहुँचे तो वे इस छबीली को उठा लेंगे और फिर यह उस मौलवी के कब्जे में पहुँच जाएगी। तुम फिर मक्खियाँ मारते रह जाओगे।" ऐसा कहते हुए उस उन्मत्त ने सुमति के रक्त से सने कपोलों का चुम्बन लिया। "अरे यार मेरे वास्ते भी तो रख!" इस प्रकार उच्छृंखल विनोद करते हुए वे पाँच-छः पशु नितान्त कामोद्दीप्त होकर उस घायल कन्या से लिपट गए।

समाज की सुव्यवस्थित अवस्था में मानव के मनोविकार मर्यादित और दबे रहते हैं। उसमें एक प्रकार का असन्तोष भी निहित होता है। राक्षसी प्रवृत्ति के लोगों में ये मनोविकार जितने उग्र होते हैं, उनमें असन्तोष भी उतना ही अधिक होता है। पाशविक वृत्ति के समाज में जब कभी विप्लव होता है तो यह दुष्ट और तामसी प्रवृत्ति और भी अधिक खुलकर खेलती है। उससे उनके कामुक विकारों की शान्ति नहीं हो पाती अपितु वे और अधिक भड़क उठते हैं। वह कन्या रक्त से सराबोर, बेहाल थी, बिलबिला रही थी। किन्तु इन कामुकता के जीवित पुतलों का इन्द्रियोन्माद और भी अधिक बढ़ गया था—"अरे यार! इस साली ने दो मुसलमानों को यहीं मार डाला है। इसलिए इससे अच्छी तरह प्रतिशोध लेना चाहिए। हाँ, जी भर कर प्रतिशोध लेना चाहिए।" इस प्रकार कहते तथा खों-खों करके हाँफते हुए इन नर-पशुओं ने इस कन्या से भयंकर बलात्कार करना आरम्भ कर दिया था। एक नहीं, दो-दो, तीन-तीन नराधमों ने 'बदला लो' कहते हुए उस बेबस कन्या का शील भंग किया और इस अमानुषिक भीषण अत्याचार द्वारा वे अपनी कामवासना का अमानुषिक ढंग से ही समाधान कर रहे थे। इसी प्रकार ९-१० नराधमों ने इस कन्या के साथ बलात्कार कर अपने इन्द्रियोन्माद की जी भर कर पूर्ति की।

किन्तु यह बलात्कार इस निष्पाप और निरपराध कन्या से नहीं अपितु अब तो इसकी निर्जीव देह से हो रहा था। क्योंकि वह बेचारी तो कभी की इस भयंकर और क्रूर यातना को सहन करने में असमर्थ होकर इस संसार से विदा ले चुकी थी।

हाँ, उसने अपनी बलि दे दी थी। किन्तु एक धर्मवीर के समान ही वह शत्रुओं को मारते-मारते बलि हुई थी। गत दिवस वह इसी समय सुगंधित पुष्पों की माला गूँथ कर भगवान श्रीरंग की मूर्ति को समर्पित करने के लिए स्नान करने के उपरान्त स्तोत्र-पाठ करती हुई जा रही थी और देव-पूजन के लिए जाती हुई इस पुष्प के समान

सुकुमार और कोमल कन्या का स्पर्श करने में वायु को भी संकोच होता था। वायुदेव भी शायद सोचते होंगे कि अनेक जन्मों का संचित पुण्य जिसकी गांठ में है वही सौभाग्यशाली युवक इस कन्या का हाथ पकड़ेगा।

परन्तु एक दिन और रात के पश्चात् ही दैव ने स्थिति कितनी अधिक परिवर्तित कर दी थी। और क्यों? भला क्यों ऐसा था इसका? ऐसा उसने किसी का क्या अनिष्ट किया था? वह तो सर्पों से भी प्रेम करती थी। उसने जिस हिन्दू जाति में जन्म लिया था उसी हिन्दू जाति के समान उसने भी तो सर्पों को दूध पिलाया था।

और हाँ, यही तो था उसका अपराध कि उसने हिन्दू जाति में जन्म ग्रहण किया था। केवल इसीलिए तो उसके समक्ष यह प्रसंग उपस्थित हुआ था। किन्तु इस इस्थिति में ही तो उसने अपनी दृढ़ता का परिचय दिया था। इस भयंकर स्थिति में भी उसने हिन्दुत्व का परित्याग नहीं किया। अपितु एक धर्मवीर हिन्दू के समान हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू धर्म के शत्रुओं को मारते-मारते ही उसका बलिदान किया। उसकी पवित्रता, समधुर कण्ठों से गाए 'स्तोत्रों' और पुष्पों की मालाओं के अर्पित करने से श्रीरंग जितने प्रसन्न नहीं हो पाए उतने वे आज उसकी इस अशुद्ध, घायल और घावों से प्रवाहित होने वाले रक्त से लथपथ और बलात्कार से अपवित्र हुई देह को देखकर सन्तुष्ट थे। देवालयों के शान्त, निर्विघ्न वायुमंडल में, गोमुखी में हाथ डाले जो जप करते रहते हैं केवल घंटे की मंजुल आवाज से जिनकी शान्ति भंग नहीं होती, ऐसे शान्त वातावरण में जो पंच-पकवानों और नैवेद्य को देवमूर्ति के समक्ष प्रस्तुत कर पूजन-वन्दन में तल्लीन रहते हैं, ऐसे भक्तों और पुजारियों की संख्या तो कम नहीं! उनकी पूजा भी परमात्मा स्वीकार करता है जिसने जप करने वाले किसी हिन्दू साधू की अपेक्षा हिन्दू धर्म और हिन्दू राष्ट्र पर भयंकर आपत्ति आने पर और सिर पर संगीनें तने रहने की स्थिति में भी न घबराते हुए हिन्दू धर्म पर एकनिष्ठ रहते हुए लड़ते-लड़ते हुए प्राण विसर्जित कर दिए

और बलात्कार और बीभत्स अत्याचारों में भी अपनी निष्ठा को डग-मग नहीं होने दिया, ऐसी यह हिन्दू कन्या भी तो कम पवित्र नहीं थी। अरे, नहीं-नहीं, उसकी यह अशुद्ध स्थिति में भी की गई पावन पूजा ही अधिक शुद्ध है! देवताओं की दृष्टि में निश्चित ही उसकी पूजा अधिक मान्य है! क्योंकि इस भयंकर आपत्तिकाल, घोर राक्षसी अत्याचारों की घड़ी में देवालय में पद्मासन लगाकर बैठे रहने की अपेक्षा रणांगण में अपने पराक्रम का प्रदर्शन वेद, सती और धर्म का रक्षण करना ही अधिक गौरवास्पद है। हवन में समिधाएँ समर्पित करने की तुलना में हुतात्माओं का प्राण-बलिदान देवताओं की दृष्टि में अधिक श्रेयस्कर है।

७

गत प्रकरण में बताया गया है कि गोपुर ग्राम में सुमति का प्रतिशोध, उसके द्वारा पाले गए भयंकर नाग ने ऐटखान को डस कर और उसके प्राण लेकर लिया था। इधर मौलवी की टोली के लोग सुमति की खोज करते-करते हुए उसी ग्राम में आ पहुँचे थे। ऐटखान और मौलवी में अधिकार के लिए एक-दूसरे से प्रतिद्वन्द्विता चल रही थी। दोनों ही अपने-आपको खलीफा द्वारा नियुक्त कलक्टर कहते हुए कुट्टम तथा गोपुर इन दोनों ही तालुकों में घूम रहे थे। इनमें से एटखान लोगों को शिया पंथ की दीक्षा देता था, तो मौलवी सुन्नी पंथ का अनुयायी था। इसलिए भी इन दोनों में परस्पर भयंकर द्वेष था, क्योंकि मुसलमानों के इन दोनों पक्षों में परम्परागत रूप से यह द्वेष चला आ रहा है। सुन्नी हिन्दुओं को काफिर समझते हुए भी एक बार क्षमादान दे सकते है, शिया तो फूटी आँखें नहीं सुहाते। मौलवी इसीलिए ऐटखान के विरुद्ध यह प्रचार भी करता था कि वह शिया है अतः वह खिलाफत राज्य के प्रति कदापि राज्यनिष्ठ नहीं हो सकता।

स्वराज्य अर्थात् खिलाफत राज्य और एकता का तात्पर्य है सभी हिन्दुओं को एक मुसलमान जाति का अंग बना देना, यह जो व्याख्या की गई थी उसी को मौलवी ने नया रूप दे दिया था। वह कहता था कि खिलाफती राज्य का अर्थ है सुन्नी राज्य और एकता का अर्थ सब हिन्दुओं को ही नहीं अपितु सभी शिया मुसलमानों को काफिर व दाभिक बताते हुए नामशेष कर दिया जाए। कुट्टम ग्राम पर तो उसने

उसी रात्रि को अधिकार कर लिया था और उसे यह भी विदित हो गया था कि सुमति गोपुर ग्राम के मार्ग से निकल गई है। इसीलिए तो वह पहले ही ऐटखान से बहुत अधिक द्वेष करता था किन्तु सुमति के उसके क्षेत्र में चले जाने के समाचार ने तो इस अग्नि में घी का काम कर दिया था। इसलिए उसने अपने शिया प्रतिद्वन्द्वी ऐटखान और उसकी टोली का सर्वनाश ही कर देने का संकल्प कर लिया था। इसीलिए मौलवी की टोली ने अचानक ही गोपुर ग्राम पर धावा बोल दिया था। मौलवी को अभी तक यह विदित नहीं हो पाया था कि ऐटखान को सुमति के प्रिय सर्प ने सदा के लिए मुल्के-अदम भेज दिया है। अतः मौलवी की टोली मार-काट करती, मार्ग बनाती वहाँ आ पहुँची थी जहाँ ऐटखान ने मुख्य थाना बनाकर सुमति को रखा था। जब ऐटखान की टोली के लोगों को मौलवी के दल के वहाँ आ धमकने की सूचना मिली तो वे सुमति की निर्जीव देह को वहीं छोड़कर भाग निकले। देव-पूजा के लिए निर्मित पुष्पमालासरीखी उस पावन, सुकुमार सुन्दर कन्या की पार्थिव देह को वहाँ पड़े हुए पाकर उन पापी मोपलों के मन भी उन्हें कचोटने लगे। मानव स्वभाव का निरीक्षण करने वाली यही बात उल्लेखनीय है कि मानव स्वतः अनेक बार जो पाप बड़ी आसानी सहित करता है वही जब वह दूसरे द्वारा किए जाते हुए देखता है अथवा उसके सम्बन्ध में सुनता है तो वह उस कृत्य के करने वाले को हृदय से धिक्कारता है। यही मानवीय स्वभाव है। अतः फजल इत्यादि मोपलों द्वारा किए गये इस घृणित बलात्कार की मौलवी की टोली द्वारा जो इतनी अधिक भर्त्सना की जा रही थी उसका एक कारण यह भी था कि मौलवी द्वारा इस कुकृत्य का अनुमोदन नहीं किया गया था। और साथ ही इस पाप-कृत्य का शिकार वह सुमति हुई थी जिस पर मौलवी की नजरें बहुत दिनों से गड़ी हुई थीं। जिसकी प्राप्ति की आकांक्षा के कारण ही मौलवी इस मोपला-विद्रोह में भाग लेने के लिए अत्यधिक उत्तेजित हुआ था। अतः मौलवी के क्रोध का वारपार नहीं रहा। उसने अपनी

टोली के एक प्रमुख व्यक्ति हसन को सम्बोधित करते हुए कहा कि "हसन, यह शैतानी मनोवृत्ति का खुला दिग्दर्शन है; और ऐसे नर-राक्षसों को साथ लेकर यह ऐटखान खिलाफती राज्य की पावन कीर्ति को कलंकित करता हुआ घूम रहा था।"

"सरकार इस पावन ब्राह्मण छोकरी के साथ किया गया यह अत्याचार इतना अधिक भयंकर है कि मैं समझता हूँ कि कोई भी सच्चा मुसलमान इतना भयंकर कृत्य कदापि नहीं करेगा।"

और तभी वह वजीर भी बोल उठा—"जिसने कुट्टम ग्राम में हुए दंगे के समय स्थूलेश्वर शास्त्री की पुत्री से उसके माता-पिता की उपस्थिति में ही घोर बलात्कार किया था। उसने कहा, "छी: ! जो इस प्रकार का पापकर्म करता है वह सच्चा मुसलमान ही नहीं।"

तभी वहाँ खड़ा हुआ एक फकीर-सा दिखाई देने वाला मुसलमान बोला, "यह बिलकुल सही है। परन्तु वजीर-जिस रात्रि को कुट्टम ग्राम में दंगा हुआ था, उस समय जो कुछ हुआ उसे स्मरण रखते हुए यदि विचार किया जाए तो यही कहना होगा कि मलाबार में जातिवन्त मुसलमानों की संख्या बहुत ही कम है।"

"यह ऐटखान की टोली का मुसलमान है। पाजी कहाँ से आ टपका ?" बड़े क्रोध-सहित हसन फुंकार उठा।

"यह शिया मुसलमान है।" अब्दुल ने अरोप लगाया।

"यह मुसलमान ही नहीं है।" पागल मुहम्मद ने अपनी तान तोड़ी।

"मैं ऐटखान की टोली का नहीं और न ही मुझे मौलवी के दल से ही कोई सरोकार है। मैं शिया मुसलमान भी नहीं और जिन अर्थों में तुम किसी को सुन्नी कहते हो इन अर्थों में मैं सुन्नी भी नहीं। और तुम लोग इस विद्रोह के आरम्भ होने से अब तक जो कुकृत्य करते आए हो यदि वे मुसलमान धर्म की शिक्षाओं के अनुरूप हैं तो मैं मुसलमान भी नहीं ! मैं तो उस टोली का हूँ, जिसके मुख्य पैगम्बर मुहम्मद थे। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। मैं तो यह

समझता हूँ कि जो कुरान की शिक्षाओं को सही रूप में समझता है वह किसी पर भी बलात्कार को पाप समझता है। वस्तुतः हमें यह देखने से पहले कि कोई व्यक्ति हिन्दू है अथवा मुसलमान यह देखना चाहिए कि वह मनुष्य भी है कि नहीं। हिन्दू लोग भी तो मानव हैं, उनके साथ यह बलात्कार एक भयंकर अत्याचार है।"

"यह तो काफिरों के पक्ष में बोल रहा है। ये काफिर हिन्दू लोग ही अंग्रेजों की नौकरी करते हैं न।"

"अंग्रेजों की नौकरी तो मुसलमान भी करते हैं। तुर्कों के विरुद्ध हजारों मुसलमान लड़े हैं। अतः यदि केवल इसीलिए कि हिन्दू अंग्रेजों की नौकरी करते हैं उनके रक्त से फाग खेल रहे हो और उनके मन्दिर गिरा रहे हो तो मुसलमानों की मस्जिदें भी क्यों नहीं गिराते। हाँ! तनिक यह तो बताओ कि क्या तुम अंग्रेजों की नौकरी करना छुड़ाने के लिए ही उनकी निरपराध कन्याओं का पातिव्रत्य भंग कर अपनी कामाग्नि शान्त कर रहे हो? तुम्हें अल्लाह की शपथ है। बोलो, क्या इन अत्याचारों के लिए खुदा तुम्हें माफी देगा! मैं मुसलमान हूँ अतः मैं तुमसे प्रश्न करता हूँ, क्या तुम्हें कुरान यही शिक्षा देता है?" उस फ़कीर ने उन मोपलों को चुनौती देते हुए कहा।

"अरे बेवकूफ! अल्लाह इनामदारों के हजारों अपराध क्षमा करता है। अल्लाह बड़ा रहमदिल है। परन्तु तू तो कुरान का एक अक्षर भी नहीं पढ़ा। अन्यथा कभी तू जिहाद अथवा धर्मयुद्ध को पाप कहने की मूर्खता कर सकता था। जिहाद की व्यवस्था के अनुसार तो गैर-मुसलमानों का सब माल, घर, लड़कियाँ और लड़के ये सभी मुसलमानों की संपत्ति हैं। चौथे अध्याय की पाँचवीं आयत में क्या कहा गया है? तूने कुरान पढ़ा ही नहीं है। अथवा तू कोई सूफी है अथवा बाबी है या फिर तू कोई शिया है।"

"तू शिया है। तू बाबी है! तू सूफी है।" यह आवाज लगाते हुए मौलवी की टोली के लोगों ने उस पर लाठियाँ चलानी आरम्भ कर दीं। ऐटखान की टोली के जो शिया थे वे इस अपमान को सहन

नहीं कर पाए, अतः वे भी मौलवी के लोगों पर टूट पड़े। कुछ समय तक मुसलमानों के इन दोनों पक्षों में जमकर लड़ाई हुई, जिसके परिणामस्वरूप कई मोपले मारे गए। अनेक घायल होकर चीखने-चिल्लाने लगे। ऐटखान की मृत्यु के कारण विशृंखलित हुई उसकी टोली के लोग इधर-उधर प्राण बचाकर भाग निकले। लाठियों की मार से घायल होकर गिर जाने वाला वह फकीर वहीं पड़ा रह गया। परन्तु इस मारामारी में भी वह एक बार साहस सँजोकर पुनः उठ खड़ा हुआ। उसने बड़ी ही गम्भीर वाणी में कहा, "बन्धुओ! तुम्हारे इन आततायी कृत्यों से मुसलमानी मजहब पर जो कालिख पुत गयी है उसका यथासम्भव प्रतिकार करने के कारण तुम मुझे काफिरों का वकील कह कर मुझ पर प्रहार कर रहे हो! निरपराध हिन्दुओं पर तुम जो तलवारें मेरे मना करने पर भी चला रहे हो वही तलवार एक दिन स्वयं तुम पर भी पड़ेगी। आततायी के रूप में जिस तलवार से दूसरों पर प्रहार किया जाता है वही तलवार आक्रान्ता की भी मृत्यु का कारण बनती है। अभी भी तुम यह समझ लो कि राम और रहीम एक ही हैं। हाँ, अभी भी तुम यह समझ जाओ।"

उस मुसलमान साधु के मुख से ये शब्द निकलते ही कई मोपले एक साथ चिल्ला उठे—"हरामी! हरामी! शैतान और अल्लाह को यह बदमाश एक ही समझता है।"

"अल्लाह रहीम को सरकतदार, जोड़ीदार बनाता है! मारो!" इस गर्जना के साथ ही साथ दो-तीन लाठियाँ उसकी कनपटी पर पड़ीं और उसकी खोपड़ी नारियल के समान तड़क कर फूट गई। उसकी मज्जा और माँस बाहर आ पड़े और वह मुसलमान वहीं दम तोड़ गया।

"अल्ला हो अकबर!" कहता हुआ मौलवी गरजा।

"अल्ला हो अकबर।" का घोष लगाकर मोपले ने उसका साथ दिया।

इस प्रकार ऐटखान की टोली को पराजित कर गोपुर तालुका पर

भी अपना अधिकार जमा लेने के उपरान्त मौलवी कुट्टम ग्राम को वापस लौट चला। उसके मन में रह-रहकर एक ही मलाल उभरता था और वह था सुमति का निधन। उसका हृदय क्षुब्ध था, उदासी बढ़ती जा रही थी। अभी वह आधे मार्ग में ही पहुँच पाया था कि पगले मुहम्मद ने पुनः उसके कन्धे पर आकर हाथ रखा और बोल उठा, "सरकार सुमति जीवित है।"

मौलवी ने दुखी, होते हुए कहा, "मूर्ख, वह मर गई है, यह तो मैं प्रत्यक्षतः देखा है।"

"सरकार, लेकिन वह फिर जीवित हो गई है। अल्लाह की कसम, देख लीजिए वह रही सुमति!"

मौलवी ने मन-ही-मन खिन्न होते हुए कहा, "अच्छा दिखा न जाने किस लड़की को तू सुमति समझ बैठा है।"

कुछ लोग मुहम्मद द्वारा जिस लड़की को सुमति बताया जा रहा था, उसे देखने गए। मौलवी भी वहाँ पहुँचा। उसने उस लड़की को देखा और समझ गया कि यह सुमति नहीं है। किन्तु साथ ही उसे देखते ही मौलवी की निराशा भी पहले के समान तीव्र नहीं रही। वह कन्या भी सुमति के समान ही आकर्षक थी और वह सुमति का विकल्प बन सकती है, मौलवी के मन में यह विचार उदित हुआ।

खी-खी हँसता हुआ मुहम्मद पागल बोल उठा, "सरकार यह तो लक्ष्मी है। इसे ही मैंने हरिहर का पैर तोड़कर पकड़ने का प्रयास किया था और आखिरकार यह पकड़ ही ली गयी।"

"चुप, रे मूर्ख।" इसे तू सुमति बता रहा था, भला इसका भी कोई कारण है?" मौलवी ने क्रोध का प्रदर्शन करते हुए कहा।

थर-थर काँपते हुए मुहम्मद ने उत्तर दिया, "जिस कारण से आपने उस रात्रि में कुट्टम ग्राम में इसे सुमति समझ लिया था बस उसी कारण से मैं भी गोपुर ग्राम में इसे दिन के उजाले में ही सुमति समझ बैठा, हुजूर!"

लक्ष्मी भी वस्तुतः सुमति की ही प्रतिमूर्ति-सी प्रतीत होती थी।

जिस चिन्तामणी शास्त्री को चारों वेद कंठस्थ थे उनी के पवित्र कुल में इस कन्या ने जन्म लिया था। जिस प्रकार कोई बौना मनुष्य वृक्ष पर ऊँचाई से लगे किसी फल को अपनी एक कूद से तोड़ लेने में सफलता प्राप्त कर लेने पर समाधान का अनुभव करता है, उसी भाँति सुमति-सरीखी ब्राह्मण-कन्या को भ्रष्ट कर अपने उपयोग में लाने की मौलवी की इच्छा थी। किन्तु वह अब लक्ष्मी के सहारे ही वह पूर्ण करने पर तुल गया था। 'धर्मवीरत्व' का उत्साह अब पुनः उसके मन पर पागल-पन-सा सवार हो बैठा था। उसने उस दीन, संकटग्रस्त, वनवास और अपमान से कृशकाय हुई कन्या का स्पर्श किया और बोला, "तू निर्भय हो। मैं तेरे मन में जो भी दुःख है, उस सबको दूर कर दूँगा।" यह आश्वासन देते हुए उसने लक्ष्मी को अपनी ही गाड़ी में बैठा लिया। क्षीण शक्ति और दुखों से प्रतिकार की भी क्षमता खो बैठी यह कन्या भी गुपचुप गाड़ी में बैठी रही।

मौलवी अपनी टोली सहित कुट्टम ग्राम में वापस लौट आया। इन तीन-चार दिनों में ही कुट्टम की स्थिति में कितना महान् अन्तर आ गया था। आज नारियल और पोफली के वृक्षों की सघन छाया तले बने हुए इन घरों में जहाँ कभी वेदों के मंजुल घोष गूँजा करते थे वहाँ आज उनमें उस रात्रि में बहा रक्त अभी तक भी नहीं सूख पाया था। हरिहर शास्त्री के निवासस्थान को ही मौलवी ने अपने मुख्यालय में बदल दिया था। अब उसे कलेक्टर का बंगला कहा जाने लगा था। और स्थूलेश्वर शास्त्री का वह आँगन जिसमें उसने अस्पृश्य हिन्दू के आने के स्थान पर मुसलमानों के घुस आने को अच्छा बताया था मौलवी की टोली के अधिकारियों और सैनिकों के लिए मांस पक रहा था। चिंतामणी शास्त्री की वह वेदशाला जहाँ कभी चारों वेदों का सतत् पाठ होता रहता था वहाँ अब कसाई की तलवार के आगे थर-थर काँपती रम्भाती हुई गऊएँ ही दृष्टिगोचर हो रही थीं। जिन पात्रों में जल डालकर ब्राह्मणों ने गत दिवस संध्या की थी उन्हीं पात्रों में आज मोपले दारू भर-भर कर पी रहे थे। सम्पूर्ण रात्रि-भर

लड़ते-लड़ते धर्मवीरों ने जिस श्रीरंग के पावन देवालय की रक्षा की थी और घायल होकर अगले दिन कम्बु थिय्या भयंकर घाव लगने के कारण शत्रुओं द्वारा बन्दी बना लिया गया था उस देवालय पर अब मौलवी का अधिकार था। वहाँ से श्रीरंग की पावन प्रतिमा हटा दी गई थी और मुसलमानी मस्जिद के समान देवालय पर तीन मीनारें खड़ी कर दी गई थीं। देवालय पर लहराता हुआ हिन्दू-ध्वज उतार कर उसके स्थान पर वह तुर्की का हरा झण्डा लहरा दिया गया था। उन भ्रष्ट काफिरों का देवालय "इमानदार" सत्य धर्मियों की प्रार्थना के योग्य हो जाए, इसलिए एक जवान गाय की हत्या कर उसका रक्त इस देवालय में यत्र-तत्र बिखेरा गया था। जिस प्रकार मूर्ख काफिर इसे गंगा-जल छिड़ककर इसे शुद्ध किया करते थे, उसी प्रकार वहां रक्त छिड़ककर उसे पाक किया गया था। इन सब संस्कारों के उपरान्त यह मस्जिद भी अब उतनी ही पवित्र हो गई थी जितना पवित्र वह मौलवी स्वयं था। ग्राम के सभी हिन्दुओं के घरों को तीन दिन तक जी भरकर लूटते रहने के पश्चात् जो सामान इस धर्मयुद्ध के उपहारस्वरूप उपलब्ध हुआ था वह मोपला धर्मवीरों में बाँटा जा रहा था। ब्राह्मणों, नायकों और वैश्यों के अच्छे-अच्छे घरों को चुन-चुनकर मोपला सरदारों को प्रदान कर दिया गया था और ग्राम के सभी धनिकों को, काफिरों को चोरों के समान एक बन्दीगृह में बन्द कर दिया गया था। कभी जिस तालाब से १५० फुट की दूरी पर ही कम्बु-सरीखे हिन्दू धर्मरक्षकों के आने से स्पृश्य हिन्दुओं का धर्म रसातल को चला जाता था अब उसी तालाब में गो-रक्त मिश्रित कर उसी का पानी खिलाफती राज्य के अधिकारी उन हिन्दुओं को पीने के लिए दे रहे थे। और इस पानी के वितरित करने का कार्य कर रहा था वही क्षत्रिय कुलावतंस सीताराम नायर जिसने तालाब से १५० फुट आगे आ जाने के अपराध में कम्बु को लात मारी थी।

कुट्टम की स्थिति इतनी भयंकर हो चुकी थी। किन्तु अभी तो उस की भयंकरता पर कलश चढ़ना था। अभी तो इस स्थिति के परिवर्तन

का मर्म अभिव्यक्त होना बाकी ही रह गया था।

वह मर्म आज व्यक्त होगा ! कारण कि आज इन सभी बन्दियों का फैसला किया जाना है। उनका सबसे घोर अपराध यही था कि वे हिन्दू के रूप में जन्मे थे और मुसलमान मोपलों के खिलाफती राज्य की स्थापना हो जाने के उपरान्त भी अपने घर-बार, महिलाओं और संपत्ति को अपना मानते थे।

जिस उपवन के पुष्पों का चयन कर सुमति देवता की पूजा के लिए माला गूँथा करती थी उसी उद्यान के मैदान में एक उच्चासन पर मौलवी आसीन था। पैर टेकने के लिए भी एक पाँव—पीठ लगी थी। कैसे बनाई थी यह ? तो श्रीरंग की उस सुन्दर प्रतिमा को खण्डित कर उसी से पैर टेकने का यह पैरों का आसन निर्माण किया गया था। उस पर पाँव टेक कर मौलवी ने न्याय आरम्भ करने का आदेश दिया।

इस प्रान्त में न्याय के लिए प्रख्यात मोपलों का पुरोहित-वर्ग थंगल कहा जाता है। उन्हीं में से एक को बुलाया गया था। मौलवी का आदेश होते ही हिन्दू बन्दियों को बन्दीगृह से वहाँ लाकर उपस्थित किया गया और थंगल बोला—"अल्लाह के बन्दों की जय जयकार हो ! मलाबार में खिलाफत राज्य की स्थापना हो गई है, और शीघ्र ही सम्पूर्ण जगत् में होने वाली है। अब इस राज्य से सम्पूर्ण पाखण्ड मूर्ति-पूजा तथा मुहम्मद पैगम्बर (अल्लाह उनकी आत्मा को शान्ति दे) के वचनों को न मानने वाले नास्तिक, इन तीनों का ही बीज भी नहीं रहने देना चाहिए, यह आदेश मुझे कल अल्लाह ने दिया है। हे विश्वास न करने वालो, देखो, तनिक अच्छी तरह देखो। देखो-देखो आकाश के मध्य वह काली-सी रेखा ! वह फटी ! या अल्लाह ! क्या खूबसूरती है।"

यह कहते हुए थंगल आकाश की ओर दृष्टि गड़ाए हँसता-हँसता निश्चल व तन्मय होकर बैठ गया ! सम्पूर्ण सभा आश्चर्यचकित रह गई और सभी लोग आकाश की ओर झाँकने लग गए। इतने में ही वह मुहम्मद नामक पगला बोल उठा—"ओहो ! आकाश के ठीक बीचों-

बीच यह कैसा दृश्य दिखाई दे रहा है।"

आश्चर्य से आँखें फाड़ता हुआ थंगल बोला, "क्या तूने देखा है वह प्रकाश ? मौलवी में यह पुण्यवान् मनुष्य है। इसे एक ओर हटा लो ! अच्छा ! उस आकाश में तुझे कौन-सी सुन्दर चीज तेरी आँखों से दिखाई दे रही है ?"

मुहम्मद ने झटका-सा देते हुए कहा, "अन्धकार !" उसके झटके से अपने को संभालता हुआ थंगल बोला, "मौलवी, यह तो पापी मनुष्य है। इसे बाहर निकाल दो। इसकी प्रथम पुण्याई के कारण इसे थोड़ी-सी दिव्य-दृष्टि मिली थी, परन्तु इतने से ही इसमें अहंकार जागृत हो गया। इसीलिए अल्लाह ने इसकी आँखों पर अंधकार का पर्दा डाल दिया है ! अल्लाह समर्थ है।"

"ओहो ! ओहो ? क्या खूबसूरती है !" थंगल बड़ी ही आनन्द-पूर्ण तन्मय मुद्रा सहित बार-बार आकाश की ओर देखता हुआ बोला, "अल्लाह, तू धर्मवीरों पर कितना अधिक प्रसन्न है।" इस प्रकार बड़ी ही भक्ति और अनुरक्ति प्रदर्शित करते हुए उसने पुनः कहा, "अब तो महान् दृश्य मुझे दिखाई दिया है, हे मुसलमानो, तुम सबको भी उसका दर्शन हो सकता है। तुम जानते हो कि मुझे क्या दिखाई दे रहा है ?"

बड़ी ही उत्सुकता-सहित सैकड़ों विश्वासनिष्ठ मोपले बोल पड़े "नहीं आचार्य !"

"बताऊँ तुम्हें ?"

बड़ी ही व्यग्रता सहित वे चमत्कार-लोलुप मोपले बोले—

"बताइए ! हम आपके पाँव पड़ते हैं, आचार्य बताइए !"

"मुझे परी दिखाई दे रही हैं। उनके हाथों में क्या है ? स्वर्ग के पुष्पों की माला ! अरे उनके नेत्र कैसे हैं ? ठीक वैसे ही जैसा कुरान में विवरण उपलब्ध है। काली-काली और लम्बी भौंहें। वह माला, वह परी मोपला-वीरों के गले में पहनाएगी। धर्मयुद्ध में जो आज मरेंगे उन्हीं के गले में वह परी माला डालेगी। जो धर्मयुद्ध में विजयी होंगे उनके गले में इस संसार के लोगों की माला पड़ेगी और उस जगत् में

वह परी उनका आलिंगन करेगी और उन्हें माला समर्पित करेगी ! यह है धर्मवीरों को मिलने वाला फल और भला काफिरों को क्या मिलेगा ? तौबा ! तौबा !"

"तौबा ! तौबा !" फड़कते हुए वे सभी मोपले बोल उठे।

ईश्वर और पैगम्बर पर जिनको विश्वास नहीं है, वे काफिर हैं। भला उनको क्या फल भोगना पड़ता है ? वे भयंकर नरकाग्नि में दग्ध होते हैं। उन्हें दुर्गन्ध में रहना पड़ता है और सड़ी-गली वस्तुएँ ही उन्हें मिल पाती हैं। उनका अंग-अंग नोंचा जाता है। फिर वे पश्चात्ताप भी व्यक्त करते हैं तो वह भी खुदा को स्वीकार नहीं होता। कुरान शरीफ में यह बात स्पष्ट शब्दों में बता दी गई है ! तौबा ! तौबा ! भली-भाँति समझ लो अरे काफिरो, अरे बन्दिओ ! मैं तुम्हें अल्लाह के हुक्म से ही यह बता रहा हूँ कि यदि तुम नरक की इस आग में जलने से बचना चाहते हो तो शीघ्रातिशीघ्र इस्लाम धर्म स्वीकार कर लो नहीं तो तुम्हें इस संसार में मिलेगी मौत और उस दुनिया में दोजख की आग ! यही है तुम्हारा पारितोषिक—बोलो, तुम क्या चाहते हो ! आज ही फैसले का दिन है। आज सायंकाल तक खिलाफत राज्य में एक भी काफिर जीवित नहीं रह पाएगा। इस खिलाफती राज्य में आज सायंकाल तक सम्पूर्ण देश मुसलमान हो जाना चाहिए। हाँ, तो ले आओ पहली टोली को।"

नंगी तलवारें चमकाते हुए ५० मोपले एक घेरा बनाकर खड़े हो गए थे। वे एक ओर से थोड़े से हटे। उस स्थान से २५ हिन्दू बन्दियों की एक टोली उस घेरे के बीच प्रविष्ट हुई और उन्होंने पुनः घेरा बन्द कर लिया !

दीन-दुखी, फूट-फूटकर रोती-चीखती हुई महिलाएँ, नीच अधर्मियों ने अपनी क्रूरता का प्रदर्शन कर जिनकी साड़ियाँ भी फाड़ दी थीं, ऐसी अर्धनग्न कुमारियाँ कि जिनकी लज्जा का हरण किया गया था; अपने पिताओं के समक्ष इस निर्लज्ज अवस्था और अर्धभ्रष्ट और अर्धनग्न स्थिति में रहने पर विवश पुत्रियाँ जो मरने से भी परे मरने-

सरीखी हो गई थीं तथा अपनी पुत्रियों और स्त्रियों के सम्मान और जीवन का अपनी आखों के समक्ष सर्वनाश होते हुए देखने पर विवश अपने पौरुष को धिक्कारते हुए पिता, अपनी छातियों से बालकों को चिपटाए हुए स्त्रियां और अपने वृद्ध दादा-दादियों के हाथ पकड़े हुए बालक, ये सभी थर-थर काँपते हुए तलवारों से ही बनाए गए उस घेरे में उसी प्रकार रोते और गायों के समान ही डकराते हुए घुसा दिए गए।

उनसे पूछा गया कि "बोलो, मुसलमान होते हो अथवा नहीं।" इन सभी को चार दिन तक बन्दीगृह में खाने-पीने की दृष्टि से त्रास देते-देते सताया गया था। अतः इन क्षीण-शक्ति और क्षीण-भक्ति लोगों ने कोई उत्तर न दिया। पुनः पूछा गया कि बोलो, "मुसलमान होते हो अथवा मरते हो ?" इन बन्दियों में से सबसे पहले एक ने उत्तर दिया, "मरने को तैयार हैं।"

वह कौन था ? वह था वही कम्बु, जो श्रीरंग के देवालय की रक्षार्थ लड़ते-लड़ते घायल होकर गिर पड़ा था और बन्दी बना लिया गया था।

उस टोली में सब से पहले उस अकेले के मुख से निकला था कि "मैं मरने को तैयार हूँ।"

उस टोली में से सर्वप्रथम उसी अकेले की हत्या की गई।

और उसकी हत्या भी इतनी क्रूरता-सहित की गई कि हिन्दू धर्म का परित्याग न करने को तत्पर अन्य लोग भी समझ लें कि उन पर कितना भयंकर अत्याचार किया जाएगा, इसलिए उस थंगल ने उसे उस घेरे से एकदम बाहर निकाल कर उसे कुएँ के पास लाकर खड़ा किया था, जिसके जल से सुमति अपने पुष्पों को पानी दिया करती थी। मैं मुसलमान होने को तैयार नहीं हूँ, जब कम्बु के मुख से पुनः यही गर्जना हुई तो उसके सिर का एक-एक केश खींच कर निकाला गया और फिर उसके शरीर के अनेक टुकड़े कर दिए गए और फिर उसके शव, धड़ और शरीर के टुकड़ों को उस कुएँ में फेंकते हुए धर्मवीरों ने "अल्लाह

हो अकबर" का एक जयघोष लगाया।

कम्बु के जीवन का इस भाँति दुखद अन्त होते हुए देखकर उस टोली में से किसी ने भी हूँ-हाँ तक न की और मूक पशुओं के समान वे उस कुएँ के पास ले जाए गए। वहाँ उनका मुंडन किया गया तथा शिखाएँ काट दी गईं और मुसलमान होने की पुष्टि के रूप में उन्हें गोमांस दिया गया। किन्तु उनमें से किसी ने भी उसे स्पर्श तक न किया। तब थंगल के आदेशोपरान्त उस टोली में से जो पुरुष और बालक थे उनके गुप्तांग उघाड़े गए। एक मौलवी हाथ में कुरान लेकर खड़ा हो गया और दूसरे ने हाथ में छुरी सम्भाली। कुरान का पाठ होता रहा और बड़ी तेजी के साथ छुरी हाथ में लेकर आने वाले मौलवी ने दो-तीन दुबले-पतले हिन्दुओं के गुप्तांगों की थोड़ी-सी खाल कतर दी। 'हाय-हाय' कर अकुलाते और बिलखते हुए उन लोगों को बताया गया "अल्हा के प्रिय पैगम्बर की आज्ञा के अनुरूप अब तुम्हारी सुन्नत कर दी गई है। अब तुम मुसलमान हो गए हो। अब तुम धर्मानुसार आचरण करो। अब स्वर्ग भी तुम्हारे लिए सुरक्षित हो गया। किन्तु यदि तुम पुनः हिन्दुओं में मिले अथवा उनसे किसी प्रकार सम्बन्ध रखा तो तुम मुसलमान धर्म से पथभ्रष्ट हो जाओगे और फिर धर्माज्ञा के अनुसार तुम्हारा वध कर दिया जाएगा। इसके पश्चात् उन सभी को—स्त्रियों और पुरुषों को मोपलों के समान वस्त्र पहनने को दिए गए।

"दूसरी टोली को लाया जाए।" थंगल गरज उठा।

तभी उसी प्रकार तलवार उठाए हुए मोपलों के घेरे में पच्चीस-तीस हिन्दुओं की एक और टोली वहाँ लाई गयी। तभी एक थिय्या ने बड़े क्रोधसहित एक वृद्ध महिला को धक्का देकर अपने से दूर कर दिया और बोला, "बुढ़िया तू जाति की मसकुनि—डोंब है ना! और फिर मुझ महान् को छू रही है। दूर हो जा!" यह देखते ही खो-खो करती हुई हिन्दुओं के घर अपनी मशाल से जलाने वाली वह मोपला वृद्धा गरज उठी, "मरो, तुम्हारी आँखें अब तक भी नहीं खुल

पाई हैं क्या ? अरे तुम हिन्दुओं को कुछ दिखाई देने लगे इसीलिए तो मैंने यह मशाल जला और आग लगाती हुई घूमती रही हूँ। परन्तु तुम्हें तो अभी भी कुछ दिखाई नहीं देता ! मरो मुसलमानों के बन्दी-गृह में, उनके राज्य के तुमने धक्के खाए हैं, हाथ-पैर तुड़वाए हैं। गो-रक्त से सने अपने हाथों को मैंने उस तालाब में धोया है, जिसका पानी तुम्हें पिलाया जा रहा है, परन्तु तुम्हारा अशिष्ट होने और छूआछूत का भूत अभी तक भी नहीं उतर पाया है। डोम्बों से छू जाने से महारे का अनिष्ट हो जाता है ना ? अरे, जीवित रहते हुए तो तुमने कभी हम हिन्दू एक जाति है, इस दृष्टि से इकट्ठे होने का प्रयास किया ही नहीं। मुर्दो, अब हिन्दू होने के कारण जब तुम मृत्यु के द्वार पर आ पहुँचे हो, फिर भी इकट्ठे होने को तैयार नहीं हो ! मरो मुर्दो कहीं के।"

"मुसलमान होते हो कि मरने को तैयार हो ?" थंगल ने पूछा।

"मैं मरने को तैयार हूँ। मैं मरने को तैयार हूँ।"

"मैं भी मृत्यु को गले लगाऊँगा।" दस-बारह कंठों से एक साथ यह स्वर गूँज उठे। थंगल चकित रह गया और बोला इन सबको इस टोली से बाहर निकाल लो। तब एक व्यक्ति जो अपने एक ही पाँव से किसी-न-किसी प्रकार चल रहा था, जिसकी दूसरी टांग कटी हुई थी, और जिसमें चार दिन से निरन्तर रक्त बहते-बहते घाव बन गया था तथा दुर्गन्ध आ रही थी, वह सबसे पहले आगे बढ़ा। यह व्यक्ति था हरिहर शास्त्री। उसके मुख से राम-राम की ध्वनि गूँज रही थी।

उसे देखते ही अपनी मशाल उसके सामने करती हुई वह मोपला-वृद्धा आगे बढ़ी। उसने अपनी मशाल हरिहर शास्त्री के इतना अधिक सामने कर दी कि उनके नेत्र ही जलने लगे। वह बोली, "रे मूर्ख ब्राह्मण देख, तेरी व तेरी हिन्दू जाति की कैसी दुर्दशा हो रही है। देख तू जीवित रहते हुए भी रक्त से सना और घावों से भरा नरक में सड़ रहा है। और मूर्ख तूने तो मेरे सामने किसी पर अत्याचार नहीं

किया, किसी के घर को आग नहीं लगाई। कोई घोर पाप-कर्म नहीं किया। केवल वेदों को ही रटता रहा। सदा पुनीत कर्म किए। फिर भी तू जीवित रहते ही नरक भोग रहा है। तेरे अंगों में कीड़े पड़ रहे हैं। और देख, मुझे देख! इस मौलवी पर दृष्टि डाल, उस थंगल को देख, कैसे स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट हैं। बस केवल अल्लाह पर, पैगम्बर पर हमारा विश्वास है। इतने मात्र से ही हम इस संसार में सुख भोग रहे हैं। और तूने तो केवल पुण्य करते, पोथियाँ पढ़ते हुए जीवन बिता दिया है। न्याय की विजय होगी, आदि की तू रट लगाता रहा है। केवल कल्पनालोक में ही विचरण करता रहा है। पर आज ये तेरी सारी कल्पनाएँ मिट्टी के घरौंदे सिद्ध हुई हैं। क्या अभी भी तुझे यह दिखाई नहीं दिया कि पाप से बचकर इस संसार में रहना मुश्किल है?" यह कहते हुए उस वृद्धा ने पुनः अपनी मशाल हरिहर शास्त्री के नेत्रों की ओर बढ़ा दी और हरिहर शास्त्री ने उसके ताप से झुलसते हुए पुनः उच्चारण किया "राम! राम! राम!"

"अभी भी मरा कहीं का राम-राम ही रट रहा है।" यह कहती हुई इस निष्ठुर वृद्धा का ठहाका पुनः गूँज उठा।

उस वीर ब्राह्मण को अपनी शारीरिक वेदना से भी अधिक यह अपमान और मानसिक वेदना सहन नहीं हो पा रही थी। उसके पीछे ही था चिन्तामणी शास्त्री और शास्त्री के साथ-ही-साथ थे कम्बु की टोली के दो थिय्या नवयुवक! कृष्ण नायर वैद्य जो श्रीरंग के पावन देवालय की रक्षार्थ लड़ते-लड़ते घायल हो गया था। वह उन नवयुवकों के पीछे खड़ा था! उन थिय्या तरुणों को सम्बोधित करते हुए थंगल ने कहा, "हे तरुण! इन ब्राह्मणों और क्षत्रियों के पीछे लगकर भला तुम क्यों बिना कारण ही मौत को बुलावा दे रहे हो! तुम मुसलमान हो जाओ तो इन हिन्दू स्त्रियों में से ही छाँट कर दे दूँगा। और फिर तुम सुख सहित जीवन-यापन करना।"

परन्तु अभी वह थंगल यह वाक्य भी पूरा नहीं कर पाया था कि वे महार तरुण बोल उठे, "चुप रे मूर्ख! हमारा एक बाप है और

वह हिन्दू है। अतः हम भी हिन्दू ही हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, महार और मांग सभी एक हिन्दू पिता की सन्तानें हैं। हमारे पिता का नाम है महादेव ! हम सभी एक ही हिन्दू माता की सन्तानें हैं, और हमारी माता का नाम है हिन्दू जाति !"

और उन सभी ने एक-दूसरे के गले में अपने हाथ डाल लिए। तभी अपने मध्य घायल ब्राह्मण वीर को लेकर वे गरज उठे, "हर, हर महादेव।" ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और महार सभी अपनी-अपनी जाति और गोत्र को बिसार समवेत स्वर में बोल उठे—"हिन्दू जाति की जय ! जय हिन्दू जाति की जय !"

अकस्मात् प्रदीप्त हुई, इस तादात्म्य भावना की इस दीप्ति से ठीक वैसा ही दृश्य उपस्थित हो गया जैसा घटाटोप अन्धकार में सहसा ही बिजली ही बिजली चमकने से होता है। मोपले भी स्तम्भित रह गए। और वह मोपला वृद्धा तनिक तिरस्कारपूर्वक हँसती हुई तथा अपने मन का समाधान करने की कुचेष्टा करती हुई बोली, "सीखा, मरों ने आखिर एकत्रित होकर मरना सीखा ! परन्तु एकत्रित होकर मरने से हिन्दू जाति की जय नहीं होगी ! जैसे आज तुमने एकत्रित होकर मरना सीखा है। जब तुम इसी प्रकार संगठित होकर जीना सीख जाओ, उस दिन हिन्दू जाति की जय की गर्जना करना। मरते हुए जय-गर्जना करना तो अरे मुर्दो कोरी विडम्बना ही है।"

"नहीं," हरिहर शास्त्री गरज उठे—"विडम्बना नहीं, तू जो कहती है, वह राक्षसी सत्य है। परन्तु हमारा यह एकत्रित होकर मरना ही हिन्दू जाति को एकत्रित होकर जीवित रहना तथा संगठित होकर विजय प्राप्त करने का पथ-प्रदर्शित करेगा।"

"जानकी जीवन राम ! राम ! पतितपावन सीताराम !" कहते हुए वीर स्वर-ताल सहित भजन करने लगे। तब उन्हें भी उस कुएं पर ले जाया गया। वे तलवार चमकाते हुए मोपले इन निःशस्त्र बन्दियों पर टूट पड़े। तलवारों के वार खटाखट उन पर हुए। हरिहर शास्त्री का आधा मस्तक कट कर गिर पड़ा। फिर भी यही

ध्वनि गूंजती रही—"जानकी जीवन राम ! राम ! पतितपावन सीता-राम !"

आधा मस्तक कट कर गिर पड़ा, और आधा लटक रहा था। भयंकर रक्तस्राव हो रहा था और अभी भी वायुमण्डल में यही स्वर गुंजित हो रहा था, "जानकी जीवन राम ! राम ! पतित पावन सीता-राम !"

उस थिय्या तरुण का हाथ तलवार का वार पड़ने से कट कर हरिहर के रक्त की तरंग में जा पड़ा। वृद्धा मसकुनि के दो टुकड़े हो गए। उसका एक टुकड़ा कृष्णनायर वैद्य के ऊपर गिरा और दूसरा टुकड़ा एक मोपले ने मनोरंजन करते हुए लाठी के समान नायर पर फेंक दिया। उसके रक्त से कृष्ण नायर का सम्पूर्ण शरीर सराबोर हो गया। तभी कटकटाती हुई तलवार का एक वार उसके नेत्रों में घुस गया। उसके नेत्र बाहर निकल कर गिर पड़े ! कृष्ण नायर पर जो वार पड़ा था उससे तलवार उनके कन्धे को चीरती हुई निकल गई थी और एक चीख के साथ उनकी नश्वर काया को पड़ा छोड़ कर प्राणों ने विदा ले ली थी। चारों ओर चीख-पुकार, कराह और वेदना तथा 'मारो ! मत मारो !' की भयंकर आवाज गूंज रही थी। कोई हिन्दू वीर मारा गया और कोई दम तोड़ रहा है।

पतितपावन राम राम ! जानकी जीवन राम ! राम ! वे सभी मार डाले गए थे। और मरने वालों की देहों के टुकड़े, अस्थि, मज्जा और तड़पते हुए अंग-प्रत्यंगों को मोपलों ने अपनी ठोकरों से धकेल दिया था उस कुएँ में। इस प्रकार ये सभी मृत्यु का ग्रास बन गए थे !

'पतितपावन राम राम ! जानकी जीवन राम ! राम !' यह भजन विलीन हो गया था। बाकी जो हिन्दू डर गए थे उनके सिर मूंड कर तथा सुन्नत करके उन्हें मोपलों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्र पहना दिए गए थे !

"तीसरी टोली" कहते हुए थंगल गरजा।

तीसरी टोली आई, उसे भी पूर्ववत् सशस्त्र मोपला दल ने अपने

घेरे में ले लिया। इनमें से जिन्होंने मुसलमान बनना स्वीकार किया उन्हें छोड़कर जो लोग बाकी बचे उनमें से कुछ की हत्या कर दी गई और कुछ को अधमरा करके ही उस कुएं में ढकेल दिया। केवल तरुण कन्याएँ ही इनकी तलवारों से बच सकीं, किन्तु उन्हें तो हत्या किए जाने से भी अधिक त्रास दिया जाना था, क्योंकि उन्हें दासियों के रूप में जीवन बिताना था!

"चौथी टोली" कहते हुए थंगल गरजा ही था परन्तु तभी वहाँ घोड़े को पूरी गति सहित दौड़ाते हुए वहाँ पहुँचने वाले एक मोपले की आवाज गूंज उठी, "वे आ गए! सरकार वे आ गए!"

बड़े आनन्द का अनुभव करते हुए थंगल बोला, "अल्लाह की क्या तारीफ की जाए! कौन? अनवर पाशा की सेना आ गई है? वे मोपलों की सहायतार्थ दस हजार तुर्क, बीस हजार कुर्द और पच्चीस हजार अरबों को लेकर यहाँ पहुँचने वाले थे।"

"अनवर पाशा गाजी है! बावन हजार अरब लोग आ रहे हैं।" सभा में जयघोष गूंज उठा।

"नहीं, नहीं, अनवर पाशा नहीं।" बीच में ही उन्हें टोकते हुए उस घुड़सवार ने कहा। तभी मौलवी बोला, "फिर कौन आया है? अफगानिस्तान का अमीर? दिल्ली पर तो मुसलमान वीरों का कभी का अधिकार हो चुका है। अमीर इस्लाम की खड्ग है।"

"अमीर इस्लाम की खड्ग है। परन्तु सरकार, अमीर नहीं आया है।"

घुड़सवार अभी इतना ही कह पाया था कि उस वृद्धा ने अपनी मशाल को ऊँचा किया और समुद्र की ओर से उसे चमकाती हुई बोली, "फिर कौन आए हैं? अरबस्थान से समुद्र मार्ग द्वारा खलीफा जी ने शस्त्रास्त्र भेजने थे, जिनके लिए कुट्टम के खिलाफत मंडल ने तीन लाख रुपए भेजे थे, तो क्या उन शस्त्रास्त्रों से लदे जहाज आ रहे हैं?"

"चुप बुढ़िया।" यह कहते हुए उस घुड़सवार ने क्रोध व निराशा से क्षुब्ध होते हुए कहा, "सरकार! वे अनवर पाशा, वह अमीर, और

हथियारों से भरे हुए अरबी जहाज तथा ५२ हजार तुर्क तो जब आएँगे तब आएँगे, परन्तु अभी तो जो आए हैं, वे हैं केवल गोरखे ! हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों व देवमन्दिरों के कलश गिराए जाने और मूर्तियों के खण्डित किए जाने के समाचारों से क्षुब्ध होकर वे प्रतिशोध लेने की शपथ ग्रहण कर भयंकर 'खुकरी' धारण करने वाले गुरखे जो कोई भी सशस्त्र मोपला उन्हें मिलता है उसे बन्दी बनाते हुए खिलाफती राज्य में आगे बढ़ते आ रहे हैं।"

"आने दो ! चिन्ता की कोई बात नहीं।" थंगल ने उठकर दंड थपथपाते हुए किसी भूखे सिंह के समान कहा, "काफिर मुसलमानों का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। हे विश्वासनिष्ठ इस्लामी वीरो! इस आसमान की कसम ! अब ! ओहो ! यह मैं क्या देख रहा हूँ ! रुको, थोड़ा रुको ! कौन हैं ये ? मेरे नेत्र बन्द हुए जा रहे हैं। फिर मैं अपनी आँखें खोलकर देख रहा हूँ! कैसा है ये तेज! कैसी है ये तलवार। हाँ, हाँ, देख लिया, देख लिया ! विश्वासनिष्ठो, जेब्रिल अपने देवदूतों के साथ उतर रहा है। या अल्लाह !"

"या अल्लाह ! जेब्रिल अपने देवदूतों के सहित उतर रहा है।" मोपले उत्तेजित होकर गरजे।

अरे, इन गोरखों की क्या बात कहते हो। उसके मुकुट में तीन तारे लटक रहे हैं। यही है विजय का चिह्न।"

"यही है विजय का चिह्न" सभा में प्रतिध्वनि हुई। थंगल बोला, "बेदर के युद्ध में जब पैगम्बर के लोगों पर काफिरों की सेना ने भारी अनर्थ किया तो इसी सेनापति जेब्रिल के साथ अल्लाह ने केवल दो हजार लोगों की सेना उनकी सहायता के लिए भेजी थी। उस समय भी इसके मुकुट में तीन तारे लटके हुए थे। अभी भी तीन ही तारे लटक रहे हैं। अहा हा, क्या तेज है !"

"अहो, कैसा है ये तेज ? हमें तो यह दिखाई नहीं देता।"

"परन्तु वह तुम्हें—तुम्हें भी दिखाई देगा।"

"किस तरह ? किस तरह आचार्य, किस तरह ?"

"हम पापियों को जेब्रिल के मुकुट के तीन तारे तरह दिखाई देंगे ?"

"जब तुम काफिरों से लड़ते-लड़ते बलिदान हो जाओगे, तभी तुम्हें ये दिखाई देने लगेंगे। और काले-काले तथा बड़े-बड़े नेत्रों वाली वे परियां और सुन्दर किशोर हँसते हुए तुम्हारे साथ खड़े होंगे। 'सुर तुत्तूर' अध्याय में जो कुछ लिखा गया है वह सब सत्य है। तो बोलो, इसमें गोरखों के सम्बन्ध में क्या कहा गया है ?"

"देवदूतों के सामने गोरखे ?" "सिंहों के समक्ष मच्छर के तुल्य हैं ?" सभा में लोग गरज उठे।

"तो फिर आज ही गोरखों पर धावा बोलने के लिए तैयार हो जाओ। मोपले खाली हाथ ही जाएंगे और काफिरों की बन्दूकों से गोलियां ही नहीं दग सकेंगी। काफिरों की गोलियां मोपलों पर नहीं चल सकतीं।

"तो फिर हम आज ही धावा बोल देंगे। अल्लाह हो अकबर ! दीन दीन।"

"तो फिर निश्चय हो गया।" मौलवी बीच में ही बोल पड़ा, "गोरखों पर तो धावा बोलना है परन्तु पहले हमें घर में बैठे इन सर्पों को—इन शत्रुओं को मिट्टी में मिलाना होगा, तभी हम चलेंगे। हे यंगल, अब जो बन्दी बाकी रह गए हैं, उनका फैसला एक साथ ही करते चलो। इस सम्बन्ध में और अधिक सोच-विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। केवल इनमें से जो औरतें पसन्द आएं उन्हें अलग निकाल लो और बाकी सब को कत्ल कर दो। यदि ये शत्रु जीवित रह गए तो उन काफिर गोरखों से मिलकर यही हमारे नाश का कारण बन जाएंगे। मारो, मारो और झटपट इन्हें उसी कुएं में फेंक दो।"

इन क्रूर शब्दों के मौलवी के मुख से निकलते ही वे दो सौ हिन्दू बन्दी सहसा ही दुख के सागर में डूब गए। वृद्ध महिलाएं, अबोध बालक, तरुण बाल-वृद्ध, स्त्रियां और पुरुष सभी के इस क्रूर मौलवी के शब्दों को सुनते ही प्राण सूख गए। "मारो मत ! मेरे पुत्र को, मेरी

माता को, मेरे पिता को, मेरे भाई को, मारो मत ! मुझे मार दो, मैं मुसलमान नहीं बनूंगा। मत मारो मैं मुसलमान हुआ जाता हूं।" अनेक ध्वनियां, अनेक वेदनाएं, एक साथ कुहराम मच गया, उस मौलवी के इन कठोर शब्दों का हुआ यह परिणाम !

उस अत्याचारी मौलवी के इन कठोर शब्दों को सुनकर उत्तेजित हुए मोपला एकदम उन निःशस्त्र, भयभीत दीन-दुःखी बन्दियों पर टूट पड़े। जिसकी तलवार जिधर पड़ी उधर ही काटती चली गई। किसी का हाथ, किसी का पैर, किसी का सिर कटा। रक्त, मांस, मज्जा और अंतड़ियां निकल-निकलकर बाहर आ गईं और इन सैकड़ों मानवों के प्राण ले लिए गए। उनके कटे हुए अंग-प्रत्यंग निर्जीव देह और अनेक तड़पते हुए लोगों को भी उस कुए में धक्का देखकर मिट्टी में मिला दिया गया।

मौलवी ने थंगल से पूछा, "क्यों आचार्य, न्याय-कर्म पूर्ण हो गया ना ?" और थंगल ने उत्तर दिया, "हां सब काम पूरा हो गया है।"

मौलवी वहीं बड़ी गम्भीर मुद्रा सहित खड़ा हुआ और आस-पास जितनी दूरी तक देख सकता था देखकर बोला, "ईमानदारी ! अल्लाह की फतह ! आज, इस क्षण मैं अपनी आयु के अति उच्च शिखर पर आरूढ़ होकर खुदा को अनेकानेक धन्यवाद देकर कहता हूं कि मेरे हाथों से इस कुट्टम व गोपुर ताल्लुका में एक भी हिन्दू जीवित नहीं बच पाया है। मेरे राज्य में इस समय एक भी देवालय अथवा मूर्ति का अस्तित्व नहीं रह गया है। कुछ तो मुसलमान बनाए गए हैं, सैकड़ों काफिरों की हत्या कर दी गई है। अनेकों काफिरों व नास्तिकों का बीज नाश कर दिया गया है। सैकड़ों देवताओं को भू-लुंठित कर दिया गया है। बस ! अब केवल विश्वासी, सत्धर्मी पैगम्बर और अल्लाह का जयघोष ही मेरे राज्य में सुनाई पड़ता है। अब इस खिलाफती राज्य में कोई भी अन्यायी, पापी, मूर्ति-पूजक, अधर्मी और अत्याचारी बाकी नहीं बचा है।"

मौलवी का 'मेरे राज्य में' कहना तथा उस थंगल को कुछ भी

महत्त्व न दिया जाना थंगल के मन को नहीं रुचा। फिर भी प्रकटतः विरोध न करते हुए किन्तु अपना महत्त्व स्पष्ट करने के लिए वह थंगल बीच में ही बोल उठा—

"परन्तु गोरखों के आने का जो समाचार प्रकट हुआ है यदि पहले ही उनका प्रतिकार न किया गया तो सम्भवतः अल्लाह तुमसे यह यश छीन लेगा। वहाँ से जेब्रिल की देवदूतों की सेना भी चल पड़ी है, अल्लाह उसे विजय प्रदान करे। किन्तु जब तक वह यहाँ पहुँचती है तब तक एक आवश्यक कार्य के रूप में जिस-जिसने इस खिलाफती राज्य की स्थापनार्थ कष्ट सहन किए हैं, उनमें से प्रत्येक को यथोचित पारितोषिक दे दिया जाए। और इस कार्य से निवृत्त होते ही जितना शीघ्र हो सके हमें अपने शत्रुओं की सेना को धुएँ में मिला देने के लिए प्रस्थान कर देना है। यह राज्य सभी के प्रयास से प्राप्त हुआ है। यह खिलाफत राज्य है। इसकी सम्पत्ति पर सबको समान रूप से अधिकार प्राप्त है।"

"संपत्ति सबकी है। सम्मिलित है।" सभा में गर्जना हुई।

"और मृत्यु भी सबकी एक साथ ही आएगी।" वह वृद्धा खो-खो करती हुई हँस पड़ी।

मौलवी की छाती में एक आघात-सा लगा, किन्तु मोपलों के मन में तुरन्त उत्तेजना का संचार करने के लिए बोला, "हाँ, चलो और काफ़िरों की उन सब कन्याओं को मेरे पास भेज दो।"

वे सब युवतियाँ और किशोर कन्याएँ जिनकी हत्या नहीं की गई थी, एक स्थान पर एकत्रित कर ली गई थीं। उन्हें लाकर लोगों की इस भीड़ के सामने खड़ा किया गया और थंगल बोला—"छोकरियो, तुममें से जो मुसलमान होना पसन्द करेगी उनसे मुसलमान सरदार विवाह करके उन्हें विधिवत अपनी अर्द्धांगिनियों के रूप में सम्पूर्ण अधिकार देंगे। किन्तु जो मुसलमान बनने को तैयार नहीं होंगी उन्हें बलात् दासियों के रूप में जीवन बिताने के लिए मोपला-सैनिकों में बाँट दिया जाएगा।"

"परन्तु मैं मरने को तत्पर हूँ।" "मैं भी" और "मैं भी" वहीं निर्भयता-सहित पाँच-छः वीर कन्याएं आगे बढ़ कर गरज उठीं। परन्तु तभी वह वृद्धा आगे बढ़ी और उन वीर कन्याओं में से एक के गले में हाथ डाल कर बड़े प्रेम से बोली, "मेरी छकुली, तू तो अभी कली-सी ही है। मरना तो सभी को पड़ेगा। परन्तु लड़की, थोड़े दिनों आनन्द का उपभोग क्यों नहीं करती! जिस मोपले को तू चाहती है उसे चुन ले, मुझे बता दे। हिन्दू की अपेक्षा मोपला कहीं अच्छा है। मैं तुझे अपने अनुभव के आधार पर यह बात बता रही हूँ। परन्तु उस आत्मसम्मानी वीर बाला ने उस मोपला वृद्धा के मुख पर कसकर एक तमाचा जड़ दिया। किन्तु इससे भी उस विक्षिप्त-सी वृद्धा को एक प्रकार से सन्तोष का ही अनुभव हुआ। बोली, "अहा हा, यदि हिन्दू पुरुष इस प्रकार दूसरों के मुख पर तत्काल चाँटा मारना सीख जाते तो मेरी छकुली, मैं भी तेरे साथ ही मरने के लिए तैयार हो जाती। परन्तु इन मुर्दों में तो निरा साधुपना ही भरा है।" इधर इन दोनों में यह चर्चा चल रही थी और उधर मौलवी ने मोपलों को आदेश दे दिया कि वे अपनी-अपनी पसन्द की युवती को चुन लें। पहले तो बड़े सरदार, फिर मध्यम-वर्ग वालों और बाद में सैनिकों को चुनने का अधिकार दिया जाना निश्चित हुआ। सबसे पहले वह पगला मुहम्मद बोला, "मुझे तो लक्ष्मी चाहिए।" यह सुनते ही मौलवी का चेहरा तमतमा उठा। उसे अपने पास खींचते हुए मुहम्मद बोला, "मुझे लक्ष्मी चाहिए! मैंने उसे ले लिया और मैं, हम सब में जो सर्वश्रेष्ठ सम्मान का अधिकारी है उस मौलवी को इसे अर्पित करता हूँ।" "ठीक-ठीक" सभी बोल उठे। किन्तु थंगल को लगा कि उसका मौलवी ने जान-बूझ कर अपमान किया है अतः वह मौन रहा। उसी समय इब्राहीम बोला, "मौलवी के उपरान्त चयन करने का अधिकार मुझे है।" परन्तु अब्दुल आवेश में आकर बोला, "नहीं मेरा है।" तभी इब्राहीम बोला, "मैंने तीन देवालय भूमिसात किए हैं। दस-बीस स्त्रियों और युवतियों को पकड़ कर लाया हूँ। मैंने उनके पिता, भाइयों अथवा पतियों को जान

से मार दिया है, अथवा घायल कर दिया है, अथवा मुसलमान बना दिया है अतः मैं श्रेष्ठ हूँ। इस खिलाफत राज्य में मुझ से अधिक धर्म-प्रचार और शत्रुओं का दमन और किसने किया है ?"

"अब्दुल्ला ने" अब्दुल्ला बोल उठा—"मैंने कुट्टम की ब्राह्मण बस्ती में उनकी सभी पुस्तकों को आग लगाई है। सुमनि का पीछा भी मैंने ही किया। हिन्दू पर दया करो कहने वाले और हम धर्मवीरों के धैर्य और कृत्यों को अत्याचार समझने वाले खिलाफत राज्य के दुष्ट उस शिवः मुसलमान कबीर का सिर मैंने ही अपनी लाठी के प्राणाघातक प्रहार द्वारा फोड़ कर ठंडा किया। अफगानिस्तान के अमीर के दिल्ली आने का शुभ समाचार सब लोगों को मैंने ही दिया। अली मुसेलियर के समक्ष माधव नायर के पेट में इसलिए छुरी भोंकी थी कि उसने खिलाफत के सजीव का काम करते हुए भी दस लाख रुपये के स्थान पर केवल दस हजार रुपये ही जमा किए थे। मैं काफिर के देवों से लड़ा हूँ, मैंने सैकड़ों काफिरों से लड़ाई की है और काफिरों की सैकड़ों स्त्रियों से लोहा लिया है।"

वह उन्मादिनी वृद्धा गरज उठी, "तो फिर तू ही सर्वाधिक शूर और धर्मनिष्ठ है। परन्तु मैं ? मैं लगातार तीन-चार दिन तक अहर्निश काफिरों के घरों को जलाती रही हूँ। यद्यपि मैंने आधा मलाबार जला दिया है। पर अभी भी जला नहीं ! मैंने ही मुस्लिम धर्म के अभियान को हृदय में बसा कर उन काफिरों के बीच में घुसकर उन्हें यह बताया है कि हिन्दू रहने में क्या हानि है ! क्या मेरा धर्माभियान तुम में से किसी से कम है ? अल्लाह की कसम, मैंने दो काफिरों की कन्याओं को···"

यह विवाद रोकने के लिए मौलवी बोला, "वीरो, इब्राहीम, अब्दुला, बूढ़ी अम्मा ! तुम्हारा तथा अनेक अन्य वीरों का यह कार्य निःसंशय ही तुम्हें इस लोक में सुख और परलोक में स्वर्ग प्राप्त होने का कारण बनेगा। तुम्हारे पराक्रम के फलस्वरूप इस राज्य-पीठ पर आरूढ होकर मैं सगर्व यह कह रहा हूँ कि मेरे इस राज्य में आज एक

भी काफिर जीवित नहीं रहा। अब इस खिलाफती राज्य में केवल परमेश्वर और पैग़म्बर की आज्ञा मानने वाले सद्धर्मनिष्ठ, ईमानदार मुसलमान ही रह रहे हैं। यहाँ का राज्य कार्य-भार इस्लामी कायदे के मुताबिक ही चल रहा है अतः यहाँ तो नाम-मात्र के लिए भी अन्याय नहीं हो सकता। तदनुसार मेरी यह आज्ञा है कि इस धर्म-युद्ध में की गई लूट को आप लोगों में पवित्र कुरान की आज्ञानुसार ही बाँट दी जाए। आठवें अध्याय की पहली आयत में कुरान शरीफ में कहा गया है कि "हे विश्वासनिष्ठ मुसलमानो! तुम्हें काफिरों से लड़ते हुए प्राप्त हुई लूट के प्रश्न पर विवाद नहीं करना चाहिए। निःसंशय यह सब लूट की सम्पदा परमेश्वर और पैग़म्बर की है! उसी ने यह सब कुछ प्रदान किया है, इसे सब को मानना चहिए। परमेश्वर जो सातवें आसमान में विराजमान है उसने पृथ्वी पर लूट का अधिकार पैग़म्बर को दिया, 'पैग़म्बर ने वह खलीफा को दिया। अर्थात् खलीफा ने जब इस तालुके के राज्य का मुझे खिलाफत राज्य के प्रतिनिधि के रूप में दे दिया, तभी इस संबंध में मुझे संपूर्ण अधिकार प्राप्त हो गए! अतः सर्वप्रथम इस लूट पर मेरा अधिकार है। इस लूट में से मैं तुम सब धर्मवीरों को हिस्सा बाँट कर देना चाहता हूँ, यह मेरी उदारता और धार्मिक प्रवृत्ति ही है। अतः मैं जिस ढंग से इस लूट का बँटवारा करना चाहता हूँ, तुम्हें वादविवाद न करते हुए उसे स्वीकार करना चाहिए।" ऐसा कहते हुए उसने जो लड़की जिसने चाही उसे दे दी! तदुपरान्त अधेड़ आयु की महिलाओं का बँटवारा किया! उनमें से एक साध्वी ने रोते हुए कहा, "दया करो, मैं विवाहित हूँ, मुझे मेरे पति के पास पहुँचा दीजिए। अन्यथा मुझे जान से मार डालिए।"

थंगल बोला, "हे स्त्री, जब तक तू मुसलमान नहीं हो जाती तब तक तुझे पति मिल पाना असंभव है। कारण यह है कि कुरान शरीफ के चौथे अध्याय की पच्चीसवीं आयत के अनुसार नास्तिकों की जो स्त्रियाँ प्राप्त होती हैं उनके पहले विवाह समाप्त हो जाते हैं। वे मुसलमानों की संपत्ति हो जाती हैं। और कुरान शरीफ की २२०वीं

आयत के अनुसार काफिरों की स्त्री चाहे कितनी ही भली क्यों न हो, उसके मुकाबले मुसलमान दासी भी श्रेष्ठ होती है। काफिर पति को शास्त्र मान्यता नहीं देता। मुसलमान धर्म स्वीकार कर लेने पर ही तुझे मुसलमान पति मिल सकता है, उसके बिना नहीं।"

"परन्तु मुझे जान से मार देना तो शास्त्रविरुद्ध नहीं होगा ? जिस शास्त्र ने अबोध बालकों, वृद्ध पुरुषों को भी मारने की अनुमति दी, अस्पृश्य कुमारियों को भ्रष्ट करने दिया व देवमूर्तियों को भग्न करने दिया, उस शास्त्र में मेरे-सरीखी निरुपयोगी किसी स्त्री को मारना भी अनुचित नहीं होगा ! मुझे मार डालो ! मैं हिन्दू हूँ अतः मुझे मार डालो।"

थंगल, बोला "ऐ स्त्री परन्तु यह समझ···" तभी वह मोपला वृद्धा क्रोध में आकर बोली, "ऐ थंगल, लगता है कि तू मुसलमान ही नहीं ? अध्याय सात १५वीं आयत में भला क्या कहा गया है ? सम्पूर्ण कुरान में से मैंने केवल यही एक आयत पढ़ी है और उसी एक आयत के कारण मेरी आत्मा में प्रकाश हो गया है। मुसलमानों को उस आयत के अनुसार विश्वास करना चाहिए ! निरक्षर ईश-प्रेषित मुहम्मद पर विश्वास लाना चाहिए। तर्क-वितर्क क्यों किया जाए ? जो तर्क-वितर्क करे भला वह मुसलमान काहे का है ?"

इतने में ही एक मोपला एक अन्य स्त्री को पकड़कर ले आया और बोला, "एक काफिरनी स्त्री इस खिलाफत राज्य में अभी भी जीवित है।"

वह वृद्धा बोली—"ले आ उसे आगे।" और उसने पुनः खो-खो करके हँसते हुए कहा, "अरे रे, यह तो मुझसे भी कुरूप है। भला इसे कौन पसन्द करेगा ? भला देखो, कोई एकाध इसे ग्रहण करने को तैयार है क्या ? मोपलों में से अनेक लोग खिलखिलाकर हँस पड़े और बोले, "एकाध क्या, हम सारे ही मिल कर···।" फिर उनमें से जब कोई भी उसका हाथ थामने को तैयार नहीं हुआ तो उस मोपला वृद्धा ने कहा, "तो मर जा रांड।" तब विह्वल और बेचैन होकर वह बोली,

"तुम चाहते हो तो मुझे मार देना, परन्तु आज मुझे मत मारो। मैं पैरों पड़ती हूँ। मैं गर्भवती हूँ। दो महीने बाद मैं सन्तान को जन्म दे दूँ तो सुख-सहित मुझे मार डालना, परन्तु अभी मेरे कारण इस गर्भ में आए निरपराध प्राणी की तो हत्या न करो। मैं गर्भवती हूँ।"

"अरे क्या है ? तू गर्भवती है, बस यही बात है न ! तो फिर नरक में भी सन्तानों को जन्म देने के लिए अलग कोठरियाँ हैं। तू मरेगी तो उन्हीं कोठरियों में से एक तुझे मिल जाएगी ! और इतना ही क्यों, बस मैं भी दो मास पश्चात् ही तेरा प्रसव होने तक तेरे पीछे ही पीछे नरक में पहुँच रही हूँ। अतः मरने का भय न कर।" उसके इस कथन को सुनकर मोपले ठहाका मारकर हँस पड़े। उनके इस भीषण विनोद से उत्तेजित होकर उस विक्षिप्त-सी हुई वृद्धा ने अपनी छुरी उस महिला के पेट में घोंप दी और वह बेचारी दम तोड़ गई तथा उसके उदर में स्थित शिशु भी टुकड़े-टुकड़े हो गया।

खिलाफती राज्य के पहले दिन ही यह डोंडी पीट दी गई थी कि जो भी मोपला नर-नारी किसी भी हिन्दू को पकड़ेगा उसे पारितोषिक दिया जाएगा। अतः मोपले हिन्दुओं का आखेट करते हुए घूम रहे थे। एक मोपला महिला अपने ग्राम की एक जीर्ण-शीर्ण झोंपड़ी में रहने वाली एक हिन्दू स्त्री को पकड़ कर ले आई थी। वह बड़े दिनों से कुट्टम ग्राम की घुड़साल के समीप चुपचाप रह रही थी अतः उसकी ओर किसी का ध्यान भी कभी न जाता था। वह भी किसी से कोई संपर्क न रखती थी। वह यदि किसी से कभी बोलती भी तो दो-चार धीरे से शब्द। इसलिए लोग उसे गंजी के पास रहने वाली औरत के नाम से ही पुकारते थे। इस पगली के समान रहने वाली हिन्दू नारी की भी आज बारी आ गई थी। उसके वहाँ लाए जाते ही उन मोपलों के मुख पर पुनः हास्य की मधुरिमा व्याप्त हो गई। उनमें से कोई बोल उठा, "यह घुड़साल के पास रहने वाली औरत। अरे, यह इतने दिनों तक कैसे बची रह गई है ? अरे, इसे तो मैं प्रेम करता हूँ।" दूसरा बोल उठा, "नहीं मैं इसे चाहता हूँ।"

मोपला सैनिकों में से एक बोला, "इसे पकड़ कर लाने वाली बीबी अम्मा को दो कौड़ी इनाम दे दिया जाए।" दूसरे ने कहा, "इसे पकड़ने के बदले में तो यह मोल बहुत ही कम है। इसके लिए एक कौड़ी तथा एक आधी कौड़ी, १।। कौड़ी पारितोषिक दिया जाना चाहिए।" "मैं तुझे १।। नहीं १५० कौड़ियाँ देने को तैयार हूँ, तू इसे अपनी बना ले।" इस प्रकार नाना प्रकार की गुण्डागर्दी का प्रदर्शन उन मोपलों द्वारा किया जा रहा था। वे मनोरंजन में मग्न थे। उनके विनोद से उत्तेजित होकर वह मोपला वृद्धा अपनी मशाल लेकर उस घुड़सवार के पास फूंस के घर में रहने वाली स्त्री की ओर बड़ी तेजी सहित बढ़ी और उसके पास पहुँच कर बोली, "ऐ अप्सरा, क्या तेरा भी इस संसार में कोई था?"

"तेरा बाप" वह महिला बोली और ठहाका मार कर हँस पड़ी।

"क्या तेरा मूल्य सचमुच मेरी फूटी कौड़ी के बराबर है?"

"नहीं तेरी फूटी कौड़ी जितना नहीं, तेरी फूटी खोपड़ी जितना है।"

"ठीक है फिर।" थोड़ा उचक कर वह पगली सामने से हट गई। उसका उन्माद उतर-सा गया और जिस प्रकार कोई याचक किसी से याचना करते समय अनुनय करता है वैसी मुद्रा का प्रदर्शन करती हुई बोली—

"अच्छा ठीक है। बता तुझे जो कुछ बताना है। देख, अब मैंने अपनी मशाल भी बुझा दी है।"

इस प्रकार विचित्र-सी मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए उस पगली मोपला स्त्री ने अपनी मशाल धूल में डाल कर बुझा दी। उसके इस कृत्य से उसकी उद्दंड विक्षिप्तावस्था का नहीं अपितु अपूर्व आचरण का ही परिचय मिल रहा था। वह पगली पुनः बोली, "बोल, क्या हुआ है बोल।"

परन्तु मौलवी बोल उठा, "यह क्या गड़बड़ शुरू कर दी है, भला

बूढ़ी अम्मा क्या इस बुढ़िया से गप्पें मारने का यह समय है ?"

मौलवी की शेखी से चिढ़ा हुआ थंगल मौलवी का अपमान करना चाहता था। अब उसे आशा हो गई थी कि पगली-बूढ़ी अम्मा द्वारा भी अब उसका साथ दिया जाना संभव है। अतः थंगल ने कहा, "बूढ़ी अम्मा, तुम जो कुछ कहती हो ठीक है। तुम्हारी यह बात उचित ही है कि इस स्त्री से जो कुछ यह कहना चाहती है, उसे सुना जाए। हो सकता है कि इससे कोई महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाए।" और उसने फूंस के घर में रहने वाली उस हिन्दू स्त्री से कहा, "हे फूंस के घर में रहने वाली स्त्री—बता क्या कहना चाहती है ?"

मौलवी बोला, "इस तरह समय नष्ट हो रहा है, क्या तुम्हें यह नहीं दिखाई देता ?"

थंगल बोला, "मैंने तुम्हारी अपेक्षा धर्मशास्त्रों का अधिक अध्ययन किया है, यह स्पष्ट है। अतः मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि समय किस बात में नष्ट होता है और किस में नहीं होता। यह वृद्धा हो गई है, उन्मादिनी है, किन्तु फिर भी इसकी भी तो आत्मा है। अतः इसे मारने अथवा कोई अन्य दण्ड देने से पहले यह आवश्यक है कि इसकी बात पूरी तरह सुनी जाए। इस्लामी कानून किसी को भी अन्याय-पूर्वक दण्ड देने की अनुमति नहीं देता। खिलाफती राज्य में अभियुक्त की बात सुने बिना उसे दण्ड अथवा पारितोषिक नहीं दिया जाता। खिलाफती राज्य न्याय और धर्म का राज्य है।"

थंगल के इस कथन के पश्चात् भीड़ में से सैकड़ों लोग एक साथ बोल उठे, "हे स्त्री बता, तू क्या कहना चाहती है।"

उस स्त्री ने अपने दन्तविहीन मुख से धीमी, धीमी आवाज में कहा, "मैं जो बताऊँगी वह कोई व्यंग नहीं है। मेरी यही इच्छा है कि मैं हिन्दू धर्म के अनुरूप ही आचरण करूँ और हिन्दू के रूप में ही अपनी देह का परित्याग करूँ। मुझे जब इस मोपला नारी ने पकड़ा तो मैंने इसके पैर पकड़कर पूछा था कि मुझे क्यों लिए जा रही हो। यदि तुम देव-मूर्तियाँ तोड़ना चाहती हो तो मैं तुम्हें बताती हूँ

कि मेरे यहाँ एक भी देव-प्रतिमा नहीं है। अगर तुम कुमारी की लज्जा का हरण कराना चाहती है तो मेरी लज्जा तो कभी की राख की ढेरी बन चुकी है। अगर तुम किसी पुत्रवती के उस स्तन पर तलवार चलाना चाहती हो कि जिससे दूध की धारा प्रवाहित होती है तो मेरी छाती का दूध तो सांप पी गया है। अब तो किसी लता-विहीन वृक्ष के समान ही मेरी छाती शुष्क दिखाई देती है। सारांश यह है कि धर्मयुद्ध करने वाले इन मोपला वीरों के किसी भी धार्मिक कृत्य के लिए उपयोगी सामग्री अब मेरे पास नहीं रही। यह सब बताते हुए मैंने पुनः यही पूछा था कि भला मुझे क्यों पकड़े लिए जाती हो। परन्तु इतने पर भी यह मोपला मुसलमानी मुझे यहाँ पकड़ कर ले ही आई है। मैं अब भी अपना हिन्दू धर्म नहीं छोड़ना चाहती। साथ ही मेरी यह भी इच्छा है कि मुझे भली भाँति देखने दो। जिसके स्तन का दूध पीकर मनुष्य भी साँप बन गया। सम्पूर्ण मलाबार में मैं ही तो एकमात्र स्त्री हूँ। मैंने अपने इन स्तनों से जिन बालकों को दूध पिलाया है उनमें से एक तो साँप बन गया, उसे मैंने घर से निकाल दिया और जो मनुष्य ही रहा उसे मैंने अपने घर से १५० फुट की दूरी से आगे नहीं आने दिया।"

"ऐ बुढ़िया, ये क्या बकवास कर रही है।" थंगल की आज्ञा को निष्फल करने तथा उसे बोलना बन्द कराने के लिए मौलवी गरजा, "कौन ? मानुष कौन ? बहकती क्यों है ? बता साँप कौन ?"

"साँप तू ? और मनुष्य वह कम्बु, वह थिय्या जिसे जान से मार दिया गया है। और देख ! मैं भी मर रही हूँ परन्तु इतना कहकर मर रही हूँ कि मेरे स्तनों की धारा तेरी माता के स्तनों की धारा के माध्यम से तेरे पेट में गई है। मेरे गर्भ से ही तेरी माता ने जीवन पाया था, जिसके गर्भ से तुझे जन्म मिला था।"

"चुप रहो ! साली क्या बकती है। मौलवी की नसों में पैग़म्बर मुहम्मद का रक्त प्रवाहित हो रहा है। पैग़म्बर की मौसी की बहन का जो सगा पड़ोसी था उसकी भानजी का जो लड़का था, वही मेरा

पूर्वज है, समझी ! रांड कहीं की ! मैं सैय्यद हूँ। अरब हूँ। मैं कुरेश हूँ।"

मौलवी के रुष्ट होने का कारण स्पष्ट था। खिलाफती राज्य का मुख्य अधिकार अरबों को और उनमें से भी जो पैग़म्बर की जाति में उत्पन्न हुए थे ऐसे असली मुसलमानों के हाथों में ही रहने की परम्परा के कारण वह मौलवी अपने-आपको असली कुरेश बता रहा था। परन्तु उस स्त्री के उपरोक्त वाक्यों ने उसके मर्मस्थल पर जो घाव लगाया था उससे वह तिलमिला उठा था। किन्तु मौलवी को उस वृद्धा के शब्दों पर जितना क्रोध आया था, उतना ही उसके वाक्यों से थंगल को सन्तोष प्राप्त हुआ था। अतः उसकी उत्सुकता बढ़ी थी। वह समझा रहा था कि इस वृद्धा के द्वारा निश्चित रूप से ही कोई-न-कोई रहस्य प्रकट किया जाएगा और फिर मौलवी का दर्प एक क्षण में चूर्ण हो जाएगा, इस आशय-सहित बना थंगल बोला, "हे स्त्री, तू तनिक भी न घबरा, जो कहना चाहती है वह कह दे, निर्भयता सहित जो भी सत्य है, उसे स्पष्ट शब्दों में बता दे।"

"तो फिर सुनो ! ! स्पष्ट शब्दों में सुनो ! मैं तालपुत्तर ग्राम की रत्तन कनीसन की पत्नी हूँ। मेरी कोख से तीन बालकों ने जन्म लिया, उनमें से दो लड़के थे और सबसे छोटी सन्तान थी एक लड़की ! हम कनीसनों की जाति थिय्यों से भी छोटी समझी जाती है। अतः हम ग्राम से दूर एक छोटे से घर में रहते थे। हमारे पड़ोस में ही खेतों में काम करने वाले एक मोपला-परिवार की झोंपड़ी थी। उस वर्ष बड़ा भयंकर अकाल पड़ा था। परन्तु हमने उस मोपला कुटुम्ब के सब लोगों को अपनी रोटी में से रोटी और सब्जी में से सब्जी देकर उस परिवार के प्रति दया प्रदर्शित की। वह मोपला भी कहता था, "अल्लाह तेरा भला करे। तू हमारी माँ है।" वह जब आँखों में अश्रुकण छलका कर यह शब्द कहता था तो मैं भी मन-ही-मन कहती थी कि यह भी तो मेरे पुत्र के समान ही है। इसके मन में भी हमारे प्रति कभी अन्तर नहीं आएगा। किन्तु यह दुष्काल समाप्त हुआ। वह मोपला-परिवार भी

खा-पीकर पल गया। इन्हीं दिनों अखाड तालुका में मोपला द्वारा उपद्रव किए जाने का समाचार प्राप्त हुआ। उसके साथ-ही-साथ दीन-दीन करते हुए एक दिन उपद्रवियों की टोली हमारे ग्राम में आ पहुँची। मैं तथा मेरा पति रतन थर-थर काँपते हुए अपनी सन्तानों सहित वहाँ से भागकर दूर जंगल में जाकर छिप गए। किन्तु वे उपद्रवी भी हमारा सुराग लगाते-लगाते वहीं आ पहुँचे। और उन्हें हमारा पता बताने का काम उसी मोपला परिवार ने किया, जिसकी हमने दुष्काल में प्राणरक्षा की थी। उन्होंने मेरे पति के प्राण ले लिए और मुझे नंगा कर मेरी लज्जा का हरण किया, तो किसने? उन्हीं मोपला मुसलमानों ने जो हमारे यहाँ पले थे। किन्तु इस विपत्ति के आने पर भी मेरी छोटी लड़की को साथ लेकर मेरा बड़ा लड़का लुकता-छिपता तालापुत्तर ग्राम में आश्रय लेने की प्रार्थना करता हुआ घूमने लगा। चारों ओर ही उपद्रवी थे। परन्तु मेरी सन्तानों को कोई गाँव वाला अपने पास भी नहीं फटकने देता था। मेरा पुत्र एक दिन एक ब्राह्मण के पैरों में पड़ कर बोला, "महाराज! मुसलमान हमें बलात मुसलमान बनाना चाहते हैं, आप सभी हिन्दुओं के गुरु हैं। हमारी रक्षा कीजिए! किन्तु उस ब्राह्मण ने कहा कि "होजा न फिर मुसलमान, इससे मेरा क्या जाता है?" तब मेरा लड़का भयभीत होकर रात्रि में एक मन्दिर में जा छिपा। परन्तु वहाँ भी उसे एक नायर क्षत्रिय ने देख लिया और चीख उठा। उस देवालय के प्रांगण में कुत्ते सुख से सोए हुए थे। किन्तु मेरे पुत्र को मार-मार कर उस क्षत्रिय ने देवालय से बाहर धक्का दे दिया। मेरे पुत्र ने उसकी बड़ी अनुनय-विनय की और बोला, "महाराज आप क्षत्रिय हैं, सभी हिन्दुओं के रक्षक हैं। हमें मुसलमान बलात् मुसलमान बनाना चाहते हैं। तो क्या आप हमें हिन्दू धर्म से च्युत होते हुए चुपचाप देखते रहेंगे?" वह बोला, "मुसलमान तुम्हें भ्रष्ट बनाना चाहते हैं, तो क्या तुम इस देवालय को ही भ्रष्ट करोगे। भाग नहीं तो मारा जाएगा। तेरा धर्म तेरे साथ है, मेरा मेरे साथ, मुझे तुझसे क्या लेना-देना है?" तब मेरा पुत्र दुःखी होकर थिय्या लोगों के द्वारा अपनी बस्ती के पास बनाए फूंस

के ढेरों के कूप में जाकर छिप गया। तब वहाँ उसे देखते ही थिय्या भी भड़क उठे। कनीसन जाति के बालक फूंस में आकर छिप गए हैं। हम महारों का अनिष्ट हो गया है।" मेरा पुत्र बोला, "मैं हाथ जोड़ता हूँ, महाराज! तुम महान् हो और हम कनीसन-डोंब। आप से भी हम नीचे हैं। परन्तु मुसलमान हमारे पीछे पड़े हुए हैं और वे कहते हैं कि तुम हिन्दू धर्म छोड़ दो अन्यथा मारे जाओगे। आप हमें आश्रय दीजिए। आप महार-थिय्या हैं, वापी, सतार, तेली आदि जब आप लोगों को अपने से दूर रहने को कहते हुए झिड़कियाँ देते हैं तो आपको वह अन्याय प्रतीत होता है। अहो—महार महाराज! पर वही अन्याय आज तुम हम पर कर रहे हो। आप हमें आश्रय दीजिए, यदि हम हिन्दू से मुसलमान बना लिए गए तो क्या तुम्हारे हिन्दू धर्म का क्षय नहीं होगा? ?" वे महार थिय्ये क्रुद्ध हो उठे और बोले, "क्या हिन्दू धर्म तुम लोगों के सहारे ही जिन्दा है? और तुम मुसलमान भी हो गए तो क्या वह नष्ट हो जाएगा? तुम कनीसन हिन्दुओं को हम महार छूते नहीं है, परन्तु तुम मुसलमान हो जाओ तो हमसे स्पर्श कर सकते हो। जो नहीं हुआ तो हो जा; हमें इससे क्या मतलब है?" अभी महार ये शब्द कह ही रहे थे कि उस ग्राम पर भी मोपले टूट पड़े। परन्तु पुलिस के आ जाने के कारण मोपले भाग खड़े हुए। हाँ केवल मेरी पुत्री को वापस जाते समय उन्होंने उठा लिया। वह दीन गाय के समान रंभाती और चीखती रही परन्तु किसी हिन्दू ने भी उसके उठाकर लाए जाने की चिन्ता नहीं की। वे तो सभी अपने-अपने मन में यही सोचते थे, मुझे इससे क्या?" वे यही कहते रहे और मेरी कन्या पर मुसलमानों द्वारा अत्याचार किया जाता रहा। अन्त में उसे एक मोपला अपनी रखैला बनाकर ले गया। थोड़े दिनों के पश्चात् वह बीमार हो गई और कुछ दिनों के पश्चात् उससे मेरी भेंट हुई। परन्तु वह पागलों के समान यही बोली, "मुझे इससे क्या? इन मरे हिन्दुओं को कोई अच्छी तरह सिखा दे कि उसके इस कथन का क्या परिणाम होता है कि मुझे किसी से क्या लेना-देना है?" कुछ

दिनों पश्चात् तो उसकी स्थिति यह हो गई कि वह जब कहीं किसी भी हिन्दू को देखती तो तत्काल कह उठती, मुझे इससे क्या ? सिखाऊँ तुझे मैं कि तुझे इससे क्या लेना-देना है।" मेरे दोनों लड़के भी पकड़ लिए गए और उन्हें भी धर्मच्युत किया गया। इनमें से जो उस कन्या को लेकर निकल भागा तो वह मेरे पास रह गयी ! परन्तु जो अभी छोटा ही था, उस पर एक दिन एक मोपला थंगल की पाप-दृष्टि ऐसी पड़ी कि वह उसे मेरे पास से बलात् छीन ले गया। उसे उसने एक मुसलमानी पाठशाला में कुरान का सस्वर और आद्योपान्त पाठ पढ़ाया और सिखाया। वह पक्का मुसलमान बन गया और इतना पक्का मुसलमान कि एक दिन स्वयं मुझे और अपने बड़े भाई को भी इस आरोप में जान से मार डालने को तैयार हो गया कि हम धर्मानुसार नमाज अदा नहीं करते हैं। हम दोनों को धर्मच्युत किया गया था, किन्तु हम धर्मच्युत नहीं हुए हैं यह बताते हुए हम तालपुत्तर के सभी हिन्दू-बन्धुओं के पास गए। हमने उनसे अनुनय-विनय की कि हमें पुनः हिन्दू धर्म की शरण में ले लिया जाए। परन्तु वे सभी ठहाका मारकर हँसते और यही कहते, "हिन्दू मुसलमान हो सकता है, किन्तु मुसलमान कभी हिन्दू नहीं हो सकता है ? तुम्हें हिन्दू धर्म का अधिकार प्राप्त नहीं हो सकता। तू मूलतः कनीसन जाति की स्त्री है और मुसलमानों ने तुझे अपना लिया है। अतः तू हमें छू सकती है ! तुझे पानी लेने कुएँ पर तथा देवालय के सामने से हम गुजरने देते हैं। तूने गोमांस खाया है, तो भी तुझ पर क्रोध नहीं करते। तू राम और कृष्ण का अपमान करेगी तो भी हम कुछ नहीं कह सकेंगे। क्योंकि यह तेरा धार्मिक अधिकार है, इसलिए हमें क्रोध नहीं आएगा ! भला तुझे पुनः कनीसन जाति में शामिल होने और हिन्दू धर्म का अधिकार कैसे वापस दिया जा सकता है। जा हम तुझे देवालय तथा अपने घरों से १५० फुट दूर रहने का अधिकार पुनः देने को तैयार नहीं हैं ?"

मेरा लड़का तो तब मारा ही जा चुका था। मैं तथा मेरा वह पुत्र

दोनों ही उसी घर में थे। कुछ दिन तो हमने इसी प्रकार बिताए कि लोग हमें मुसलमान समझते रहे और हम अपने-आपको हिन्दू ही समझते रहे। एक दिन हम दोनों रामनवमी उत्सव की समाप्ति के उपरान्त अपने घर में ही भक्ति-भावना से तल्लीन होकर भजन कर रहे थे। तभी हाथ में छुरा लिए एक भयंकर आक्रान्ता हमारे घर में घुस आया और बोला, "मुसलमान बना लिए जाने पर भी तू अभी तक काफिरों के ही धर्म का पालन करती है ? जो मुसलमान पुनः काफिर हो जाता है, उसे जान से मार दिया जाए यही हमारे धर्म की आज्ञा है ?" ऐसा कहते हुए वह चांण्डाल मुझे जान से मारने के लिए आगे बढ़ा। परन्तु मेरे वीर पुत्र ने उछल कर कुल्हाड़ी उठा ली और उस पर इतने जोर से तथा चतुराई से वार किया कि वह, "या अल्लाह, या अल्लाह" की चीख मुख से निकालता हुआ दम तोड़ गया। और यह आक्रमणकारी अन्य कोई नहीं अपितु वही मोपला था जिस पर दुष्काल के दिनों में मैंने दया दिखाई थी और जो मुझे माता कहकर सम्बोधित किया करता था। सुमति ने जिस सर्प को दूध पिलाया था, उसने अपने दूध का उपकार निभाया था। परन्तु मैंने जिस मोपले को खिला-पिलाकर पाला था उस मनुष्य ने मेरे प्राण लेने का प्रयास किया। यह दिया था उसने मुझे उपकार का प्रतिदान। वस्तुतः सर्प का विष धर्म के लिए उन्मादी व्यक्ति के मन में निहित विष से कम ही भयंकर होता है।

"उस आक्रान्ता के हाथों से तो हम बच गए परन्तु उसकी हत्या का बदला हमसे लिया जाएगा, मुसलमान पुनः हमें हिन्दू धर्म का परित्याग न करने के आरोप में मार डालेंगे; इस भय से हमने वह ग्राम छोड़ देने का निश्चय कर लिया ! मेरा पुत्र, मैं जाति का थिय्या हूँ यह बताकर कुटुम्ब ग्राम में रहने लगा। मैं भी वहीं पहुँच गई किन्तु किसी को भी अपनी जाति अथवा गोत्र न बताते हुए और न ही किसी से विशेष सम्बन्ध ही रखते हुए ग्राम से बाहर रहने लगी। कुछ दिनों के पश्चात् मेरे पुत्र का एक थिय्या कन्या से विवाह हो

गया और उसको बाद में एक पुत्र भी प्राप्त हुआ। मुझे अपना वह पौत्र (नाती) बचपन से ही प्राणों से भी प्रिय रहा। किन्तु मैंने उसे कभी यह नहीं बताया कि मैं कौन हूँ और उससे मेरा कभी सम्बन्ध है और न ही कभी मैं उससे जाकर मिली ही! वही मेरा पौत्र श्रीरंग मन्दिर की रक्षा करते-करते घायल हो जाने वाला तथा हिन्दू जाति की रक्षार्थ प्राणों का भी बलिदान दे देने वाला हुतात्मा हिन्दू हुतात्मा कम्बु था।

यह हिन्दू हुतात्मा कम्बु था मेरा एक पौत्र। और मेरा वह दूसरा पुत्र जिसे मुसलमानों ने बाल्यावस्था में मुझसे छीन लिया था और जो उन्हीं की शिक्षा-दीक्षा के कारण कट्टर मुसलमान बन गया था—इतना पक्का कि मुझे भी जो काफिर बताकर मारने को तैयार था, उस मेरे दूसरे पुत्र का विवाह एक हिन्दू चमार कुल की धर्मच्युत की गई मुसलमान कन्या के साथ हुआ। उसी का जो पुत्र हुआ वह मेरा दूसरा पौत्र। उसके रक्त में मेरा दूध नहीं, ऐसा नहीं है। वह बाल्य-काल से ही मुसलमानी धर्मशास्त्रों का अध्ययन करता-करता एक बड़ा मौलवी हो गया। वह मेरा दूसरा पौत्र अन्य कोई नहीं अपितु यही गयासुद्दीन है, जो श्रीरंग की मूर्ति को उलटा कर उस पर आसन जमाकर तथा उनके पादपीठ पर पैर रखकर बैठा हुआ है। जो खिलाफती राज्य का तुम्हारा कलक्टर है यह 'मौलवी।"

"चुप! रांड कहीं की। अरे यह पगली क्या बकवास कर रही है! तुम्हारे नेता को नरक में धकेलने के लिए काफिरों ने जान-बूझ-कर उसे यहाँ भेजा है। देखते क्या हो! मारो!" मौलवी चिल्लाया।

"काफिरों ने नहीं" वह वृद्धा बोल उठी!

"तो फिर शैतानों ने तुझे भेजा होगा!" मौलवी पुनः गरजा। वह उठा ही था कि मौलवी ने कहा, "मैं यहाँ हूँ, मैं काजी हूँ, मैं थंगल हूँ। आपको भी अपना अपमान उसी प्रकार निगल जाना चाहिए, जिस तरह मैं अपमान का कड़ुआ घूँट निगलता रहा हूँ।"

वह वृद्धा कहने लगी, "इससे अधिक मैं और कुछ नहीं कहूँगी।

केवल एक ही वाक्य और कहती हूँ। वह यह है कि यह कम्बु और गयासुद्दीन दोनों ही मेरे पौत्र है। मेरे एक स्तन का दूध कम्बु के रक्त में और दूसरे स्तन का दूध गयासुद्दीन के रक्त में मिला है। एक हिन्दू हुतात्मा और दूसरा मोपला मौलवी कैसे हो गया ? रक्त का रंग लाल बताया जाता है। कहते हैं कि रक्त को रक्त आकर्षित करता है। परन्तु मुझे प्रतीत होता है कि रक्त का कोई रंग नहीं; रक्त का रंग ठीक पानी ही सरीखा है। जैसी शिक्षा किसी को मिलती है वह उसी के रंग में रंग जाता है। यह है वह वाक्य ! और एक नाम और भी सुनो। वह मेरी पुत्री ! जो हमेशा यही बकती थी कि 'मुझे इससे क्या ? सिखाऊँगी कि तुम्हें किससे क्या लेना-देना है, जो ऐसा कहते हुए भटकती फिरती थी, वह आज पुनः मुझे मिल गई है। मेरी वह पुत्री है—यह पगली ! यह मशाल वाली बुढ़िया !!"

"हाँ ! हाँ ! मैं वही तो हूँ ! जैसे किसी व्यक्ति पर चढ़ा हुआ भूत उतर जाने के उपरान्त वह शान्त मुद्रा में बोलने लग जाता है, उसी प्रकार शान्त भाव से वह मशाल लेकर चलने वाली वृद्धा बोली, "मैं वही हूँ। मेरी माता ने जो कुछ भी बताया है, वह सब सत्य है। और यह भी सत्य है कि मैं कुछ पागल हो गई थी, परन्तु मेरे इस उन्माद में भी एक बुद्धिमत्तापूर्ण अर्थ निहित था। उसी अर्थ को लोगों को समझाने के लिए मैं जलती मशाल हाथ में लिए घूमती थी। मैं अपने सम्पूर्ण अंगों और धमनियों को पूरा ज़ोर लगाकर इतने ज़ोरों से चीखती थी कि आकाश फट जाए ! वस्तुतः मैं यही बताना चाहती थी कि हिन्दुओ। तुम्हारी किसी भी उपजाति की एक कन्या अथवा बालक तुमसे अलग हुआ, परधर्मियों के दुष्ट हाथों में पड़ गया तो तुम सबको क्या हानि होती है, यह मेरे उदाहरण से भी तुम्हें पता लग पाया है अथवा नहीं ? यदि मेरी बाल्यावस्था में, मेरी तथा मेरे भाई की मालपुत्तर ग्राम के उन हिन्दुओं ने रक्षा की होती तो, जो वे बड़ी आसानी से कर सकते थे तो मैं भी आज उस कम्बु के समान ही श्रीरंग की रक्षार्थ जूझ पड़ती। यह मौलवी भी कम्बु के समान ही हिन्दू

धर्म और हिन्दू कुमारियों की पवित्रता और परित्राण के लिए कम्बु के समान ही आत्म-बलिदान दे देता। किन्तु तुमने मेरे जैसे डोंबो अथवा कुमारियों को कुछ भी महत्व न देते हुए उनकी लज्जा भ्रष्ट होने दी। तुमने मुझे मुसलमानों के हाथों में पड़ने से बचाने के प्रयास में उस स्थान पर भी नहीं ठहरने दिया, जहाँ कुत्ते आराम से रहते हैं, तुमने मेरी रक्षा नहीं की। तुम यही सोचते रहे कि यदि डोंबो का कोई बालक अथवा बालिका पथभ्रष्ट भी कर दी गई तो हमें इससे क्या? यह सोचकर ही तुमने मेरी अवहेलना की, अपमान किया, उसी का यह परिणाम है। भोग लिया कि नहीं? मुझ अकेली की मशाल ने ही सैकड़ों हिन्दुओं के घर जलाकर राख किये। हेरियों में परिणत कर दिए। जैसे मैं रोई थी, उसी प्रकार जब बलात्कार किए जाने पर हिन्दू कन्याएँ बिलख-बिलख कर रोती थीं तो मैंने वे दृश्य बड़े प्रसन्न मन से देखे हैं। मैं देवता की प्रतिमाओं पर सैकड़ों बार चढ़कर नाची हूँ। मैंने सैकड़ों हिन्दुओं को मरते देखा है, मारे जाने पर यही सोचा है, "पता लग गया तुम्हें किसी से क्या लेना है? तुम्हें समझ में आ गया है कि धर्म के नाम पर किए जाने वाले उपद्रवों के समय यदि किसी डोंब-कन्या को उठाकर मुसलमान ले जाते हैं और वह हिन्दू धर्म से च्युत कर दी जाती है तो तुम्हारा क्या जाता है?" क्या तुम अब भी यही कहोगे कि तुम्हारा धर्म तुम्हारे पास और हमारा हमारे पास? घोंट दूँ तुम्हारा गला? मेरा धर्म तो मेरे पास से गया किन्तु तुम्हारे प्राण भी तुमसे छीने बिना नहीं रहूँगी, यह सत्य तुम्हें आज भी स्पष्टतः दिखाई दिया अथवा नहीं। नहीं देख पाए तो देखो इन तीन सौ हिन्दू घरों में लगाई गई अग्नि से हुए उजाले में देखो। डोंबों का एक बालक अथवा बालिका हिन्दुत्व से निकलकर जब इतना हाहाकार चारों ओर करा सकता है, हे हिन्दू जाति!

"मैं चिल्ला-चिल्लाकर किलकारी मार-मार कर यह बात कह रही हूँ कि तेरे ऐसे हजारों बालक और बालिकाएँ तेरे घरों से उठाए जा रहे है अथवा भगाए जा रहे हैं और तू अभी भी यही समझकर

बैठी हुई है कि भला मुझे इससे क्या? मेरी माता ने जो कथा सुनाई है वह केवल उसकी ही नहीं है, हे हिन्दू जाति! यह तो तेरी कहानी का ही एक प्रतिबिम्ब मात्र है।"

इस प्रकार एक प्रचंड किलकारी मारती हुई, "बीवी अम्मा, वह पगली पुनः चीखी और क्षण-भर बाद रुक गई। उस समय सब एकदम स्तब्ध हो गए। वह पुनः बोल उठी, "चाहे जो भी हो। मैंने अपना प्रतिशोध ले लिया, मेरा पागलपन समाप्त हो गया। मेरी मशाल भले ही बुझ गई अब यह अन्धकार मिटा दूँगी।"

ऐसा कहते हुए वह सहना उठ खडी हुई, पुनः बोली, "जिसने मुझे पागल बनाया वह अंधकार तो तू है। तू भी बुझ।" यह कहती हुई वह चीखी और किसी सिहँनी के समान उछलकर उसने उस मौलवी की गर्दन पकड़ ली।

"हा! हा!" कहते हुए लोग अभी स्थिति की गम्भीरता को समझ कर उसे पकड़ना ही चाहते थे कि उसने मौलवी की छाती में छुरी घुसेड़ दी। और फिर अपनी छुरी को मौलवी की छाती से बाहर निकालकर पगली ने उसे अपने हृदय में घोंप लिया! मौलवी और पगली दोनों ही के प्राण-पखेरु उड़ गए, और दोनों के निर्जीव शरीर रक्त में नहा गए।

ऊँचे-ऊँचे आह्वान देते हुए भयप्रद बिगुल तथा बैंड इत्यादि रण-वाद्य बजने लगे! हजारों तुर्क लोगों को लेकर अनवर पाशा, हजारों हथियारों से लदी अरबी नौकाएँ, सहस्रों पठानों के साथ अमीर, हिन्दुस्थान में मुसलमानों के साम्राज्य की स्थापनार्थ अली मुसेलियर के मोपला खिलाफती राज्य की सहायतार्थ दौड़ते हुए आये। आने के पहले ही गोरखों की सेना ने 'हर हर महादेव' का जयघोष करते हुए धावा बोल दिया। थंगल ने जिन देवताओं के रेवड़ के रेवड़ अथवा किरीट में तीन चन्द्रमा लटकाए वह देव सेनापति जेब्रिल किंवा सुरतुल मुजदिल अध्याय के अनुसार मुसलमानों की विजय होगी, उस मौलवी द्वारा दिया गया आश्वासन, इनमें से कोई भी उन वीर गोरखों की तलवारों के प्रहारों को नहीं रोक पाया। तो फिर इन बेचारे मोपलों की तो बिसात ही क्या थी! थंगल ने मरने के उपरान्त स्वर्ग में दारू और स्त्रियाँ मिलने का जो प्रलोभन दिया था, तथा न दिखाई देने वाले देवदूतों की सहायता प्राप्त होने का जो भ्रम मन में बसा हुआ था उससे प्रेरित होकर दस-बारह मोपले लड़ते हुए मारे गए। परन्तु सैकड़ों मोपले स्वर्ग में प्राप्त होने वाली दारू और स्त्रियों के लोभ को बिसार कर गोरखों से लड़ने के स्थान पर अपने प्राण बचाकर भाग निकले। संध्या होते-होते कुट्टम ग्राम में मोपलों का दिखाई देना भी दुर्लभ हो गया। कोई मार डाला गया, कोई भाग निकला, हर हर महादेव की उस तलवार के सामने खिलाफत की आफत ही आ गई!

रात्रि हो गई, अंधकार चतुर्दिक व्याप्त हो गया। वह कुआं जिसमें थंगल और मौलवी ने कत्ल कराके सैकड़ों हिन्दू फेंक दिए थे, भी मानो आकाश की ओर निहार रहा था। अंधकार बढ़ता गया, मध्य-रात्रि हो गई। जिस प्रकार बैठे-बैठे झपकियां लेने लगता है, उसी प्रकार कुएँ को खोलकर अंधकार भी मानों गहरी नींद में खर्राटे भरने लगा था। उसके पेट में भयंकर पाचन क्रिया जारी थी। उस कुएँ में पड़े हुए अनेक अर्धजीवित और मरणासन्न हिन्दुओं की आहें और कराहें, जो बीच-बीच में सुनाई पड़ रही थीं उस अन्धकार के पेट में होती हुई गड़गड़ाहट-सी प्रतीत होती थी!

वह कुआं, उसमें धकेली गई लाशों, धड़ों, धड़विहीन सिरों, टूटे हुए हाथों के टुकड़ों, मांसपिंडों से आकंठ भरा हुआ था। इस कुएँ की एक दीवार में एक वृक्ष फूटकर निकला हुआ था। अतः अनेक हिन्दुओं के जो शव, मांस आदि के टुकड़े फेंके गए थे वे इसमें अटक गए थे और इसकी शाखाएँ भी झुक गई थीं। इसी की एक शाखा में एक घायल हिन्दू जिसे इस कुएँ में धकेला गया था, अटक कर रह गया था। उसी के समीप एक मरणासन्न हिन्दू और भी लटका हुआ था। वह दम तोड़ ही रहा था कि एक कोमल-कंठ से निःसृत आवाज उस घायल हिन्दू को सुनाई पड़ी। वह कह रही थी 'भाई, तू कहाँ है? मुझे भय लग रहा है, अपना हाथ पकड़ा दे। उस वृक्ष में अटके हुए हिन्दू ने जब यह आवाज सुनी थी तब उसकी थोड़ी-थोड़ी चेतना बनी हुई थी। उसने सोचा कि यह किसी ऐसी बहिन की आवाज है कि जो मरते समय अपने भाई का स्मरण कर रही है कि उसका क्या हुआ है, अतः वह विह्वल है। अथवा जब उसने हिन्दू धर्म का परित्याग न करने का संकल्प व्यक्त किया तो मोपलों द्वारा की जा रही मारा-मारी में उसका भाई उससे बिछुड़ गया है! या फिर जब मोपलों द्वारा इस कुएँ में ओ अन्धाधुन्ध गिराया जा रहा है तो वह बहिन अपने भाई के हाथ का सहारा मांग रही है, जिससे कि वे दोनों ही साथ-साथ इस अन्धकूप में गिर सकें। अभी तक तो वह घायल हिन्दू

अर्ध-चेतन अवस्था में ही था, इसलिए उसे अपनी पीड़ा का भान ही नहीं हो पा रहा था, किन्तु सहसा ही एक दम तोड़ते हुए व्यक्ति द्वारा पैर पटके जाने पर जब उसकी नाक पर आघात लगा तो वह सहसा ही पूर्णतः सचेत हो गया। किन्तु वह चेतना बड़ी ही भयंकर थी, मृत्यु की अचेत अवस्था से भी अधिक भयावह! मध्यरात्रि, घिरा हुआ अन्धकार, चारों ओर गूंजती आहे-कराहें, बिलबिलाते मानसपिंड, रक्त, मज्जा, मांस और अन्तड़ियाँ, भीषण विस्मृति, भीषण स्मृतियाँ। वह घायल तरुण होश में आ गया था। अब उसके घायल कंधे और अंग-प्रत्यंग में भयंकर पीड़ा उभर उठी थी! वह भी ज़ोरों से चीख उठा। उसकी उन आहों और कराहों से कतिपय अन्य अर्धमृत घायल भी तड़प उठे! मलाबार में यह एकमात्र कुआँ ही नहीं था, जहाँ अर्ध-रात्रि के इस अन्धकार में आहों और कराहों के स्वर उभरे थे। ऐसे दसियों कूपों में इसी प्रकार की आहों और कराहों के गूंजते स्वरों से रावण के द्वारा की जाने वाली भयंकर गड़गड़ाहट का आभास हो उठता था।

× × ×

उसी समय कानपुर के समीप एक भव्य बंगले में प्रेमवर्धक महा-मंडल की सभा हो रही थी—खुदाबख्श, कड़कखान इत्यादि प्रमुख मुसलमान नेता तथा भालचन्द, गयाल सेठ, पीट गय्या इत्यादि हिन्दू नेता इस संस्था के इस विशेष अधिवेशन में उपस्थित थे। सभा में खड़े होकर कड़कखान ने कहा कि प्रेमवर्धक महामंडल ने अपने अविकल परिश्रम से हिन्दू-मुसलमानों में जो एकता निर्माण की है, वह कतिपय देश-शत्रुओं को फूटी आँखों नहीं भा रही है। अतः उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों में दंगे होने के मिथ्या अत्याचार छापने का अभियान चलाया हुआ है! उनकी यह रुचि तीव्र निन्दा करती है! सभा ने स्वयं इस मामले की जाँच करने के लिए खुदाबख्श को मलाबार भेजा था। उनके द्वारा प्रस्तुत किये गए प्रतिवेदन को देखते हुए यह सभा देश-भर की जनता की ओर से यह प्रस्ताव करती है कि मलाबार में

हिन्दू मुसलमानों की एकता को भंग करने वाली एक भी घटना घटित नहीं हुई है।"

गयाल सेठ बोला, "सभी हिन्दुओं की ओर से मैं इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूँ। मलाबार में हिन्दू और मुसलमान सुख और समाधान-सहित निवास कर रहे हैं। मलाबार में कुछ भी नहीं हुआ है!

सभी हिन्दू बोल उठे—"कुछ भी नहीं हुआ है।"

"छी: छी:, कुछ भी नहीं हुआ, ऐसा कैसे कह रहे हो? या अल्लाह! अभी भी हमारे हिन्दू बन्धुओं में मुसलमानों के प्रति जितनी सहानुभूति होनी चाहिए वह नहीं है। मलाबार में हमारे शूर मोपले जो यह कर रहे हैं, क्या वह कोई बात ही नहीं है?" कड़कखान कड़क उठा।

तभी अध्यक्ष भालचन्द ने खड़े होकर कहा, "क्षमा कीजिए! कड़कखान महोदय, तुम्हारे शूर बन्धुओं उन मोपला वीरों और उनके धैर्य का यह सभा अभिनन्दन करती है। मोपले हम हिन्दुओं के भाई हैं।"

"हिन्दू मुसलमान भाई हैं" सभा में गर्जना हुई।

"हिन्दू मुसलमान है" मूढाप्पा, बावले, शास्त्री आदि उत्साह से नारे लगाने लगे।

"और यदि हिन्दू मुसलमान नहीं हुए हैं तो मोपले उन्हें मुसलमान बना रहे हैं, जान से मार रहे हैं।" एक गृहस्थ ने उठकर ज़ोरदार आवाज़ लगाई। तभी बावले, गयाले, भालचन्द इत्यादि हिन्दू नेता चीख उठे "गलत बात कहता है! तू है कौन, बता तो सही, तू देशभक्त है?"

"यह देशशत्रु है। हिन्दू-मुसलमानों की एकता नष्ट कर रहा है" सारी सभा गूंज उठी। परन्तु इससे भी भयभीत न होते हुए वह गृहस्थ बोला, "शान्त हो जाओ। मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह अक्षरशः सत्य है। मैं एक हिन्दू हूँ। मेरी इस संबंध में प्रत्यक्ष साक्षी है! स्वयं मुझे ही मोपलों ने भयंकर बल द्वारा मुसलमान बना लिया था। मेरे

से भी लाखों गुना अधिक अत्याचार अन्य लोगों पर किया गया है।

"परन्तु अब तू मुसलमान है ना, फिर तू मुसलमानों के विरुद्ध कैसे बोल रहा है?" मौलवी करीमुद्दीन ने उससे पूछा।

"मैं हिन्दू हूँ। मोपलों ने मुझे बलात् मुसलमान बनाया था। परन्तु मुझे मेरी इच्छा के अनुरूप आर्यसमाज ने संस्कार कर शुद्ध कर लिया है। मैं तो हिन्दू का हिन्दू ही हूँ।"

"या अल्लाह! फिर तो यह काफ़िर मार दिए जाने के योग्य है!" कुढ़कर भयंकर रूप से चीखता कड़कखान बोला, "मुसलमानों की शरीयत के अनुसार जो व्यक्ति मुसलमान से पुनः हिन्दू होगा वह मृत्युदण्ड का पात्र है। वह काफ़िर है, उसे जान से मार दिया जाना चाहिए।"

तभी अध्यक्ष भालचन्द ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, "खान साहेब! खान साहेब! क्षमा कीजिए। अपराध इस गृहस्थ का है। यह क्योंकि भांडखोर आर्यसमाज का अनुयायी है उसी प्रकार इसकी बात पर कोई विश्वास नहीं किया जा सकता यह तो स्पष्ट ही है।"

"आर्यसमाज बिलकुल भांडखोर संस्था है। यह आर्यसमाजी है, इसलिए इसकी साक्षी पर विश्वास ही नहीं किया जा सकता।" सभा में एक स्वर से लोग बोल उठे।

"परन्तु मलाबार में हिन्दुओं पर भयंकर अत्याचार किए जा रहे हैं, उनकी हत्याएँ की जा रही हैं। यह मैं आर्यसमाजी नहीं कहता अपितु यह बात श्री देवधर के पत्र में कही गई है। ये देखिए उनका पत्र।"

"श्रीयुत देवधर उपद्रवी है" सभा गरज उठी।

"श्रीयुत देवधर उपद्रवी है, हम असहकारी देशभक्तों को उसका कथन मान्य नहीं है।" भालचन्द ने निर्णय दे दिया।

"फिर भी मलाबार में मोपलों द्वारा हिन्दुओं से किए गए छल को तुम्हें सत्य मानना चाहिए! कारण देवधर ही नहीं डॉ० मुंजे भी इस बात की साक्षी देने को तैयार हैं कि यह बात सत्य है!"

"डॉ० मुंजे जाहिल हैं अतः उनकी साक्षी पर विश्वास नहीं किया जा सकता।" सभी का स्वर गूंज उठा।

"डॉ० मुंजे जाहिल, अतः हम अनत्याचारी देशभक्तों की दृष्टि में उनकी साक्षी विश्वसनीय नहीं है।" अध्यक्ष भालचन्द ने निर्णय दिया।

"परन्तु जिन-जिन हिन्दुओं को इस भयंकर आपत्ति से ग्रस्त होना पड़ा है, उन्होंने हस्ताक्षरों-सहित आपदाओं की यह गाथाएँ लिख कर मेरे मित्रों को तारों द्वारा भेजी हैं। कुट्टम ग्राम में कुछ दिन पूर्व ही भयंकर हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ है और मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं का शिकार खेला जा रहा है। यह सूचना मुझे दूसरे द्वारा मिली है, मैं वह थोड़ी-सी पढ़कर सुनाए देता हूँ।"

"अरे तारों का क्या है? काल्पनिक दंगा संबंधी समाचारों की तारें तो मुझे प्रतिदिन ही सैकड़ों मिल रही हैं। परन्तु मलाबार के इन हिन्दुओं की इन तारों की एक गद्दी बनाकर मैं अपनी उस कुर्सी पर बैठता हूँ। यहाँ से आई हुई तारें सत्य हैं, यह कैसे मान लिया जाए? भालचन्द ने शान्त मुद्रा में किन्तु बड़ी गम्भीरता सहित कहा, "तारों पर मुझे विश्वास नहीं है।"

खुदाबख्श कुछ कराहता हुआ-सा बोला, "अभी मुझे कोचीन के खिलाफत मंडल के अध्यक्ष का तार भी मिला है। इस प्रश्न से सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है। कोचीन से खिलाफत के सेक्रेटरी ने लिखा है कि मलाबार में मुसलमानों ने हिन्दुओं पर अत्याचार किया है कि हिन्दुओं को मुसलमान धर्म में बलपूर्वक दीक्षित किए जाने के जो समाचार प्रकाशित हो रहे हैं वे पूर्णतः निराधार हैं। प्रेक्षतः जानकारी प्राप्त करने से यह विदित हुआ है कि एक अथवा डेढ़ हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाने की घटना हुई है।"

"बस-बस। इस तार ने सभी प्रश्नों का समाधान कर दिया है। मलाबार के हिन्दुओं पर अत्याचारों संबंधी सभी कहानियाँ मिथ्या हैं। एकाध हिन्दू को इस प्रकार धर्मच्युत किया गया होगा। यह बात खुदा-

बख्श को मिली तार से ही स्पष्ट हो जाती है। अतः शंका करने का कोई कारण नहीं है।" भालचन्द बोला।

"अब का शंका कोई कारण ही नहीं रहा, मलाबार में कोई गड़बड़ नहीं हुई। मलाबार में हिन्दू और मुसलमान प्रेम-सहित रह रहे हैं।" सभा में गर्जना हुई।

यहाँ मूल प्रस्ताव से मोपलों के शौर्य का अभिनंदन करने संबंधी खुदा की उस सूचना को सम्मिलित करते हुए मोपलों की दयालुता, सहनशीलता के गुण-गान करके यह बताया जा रहा था कि उनके द्वारा हिन्दू बन्धुओं पर अत्याचार किया जाना किस भाँति असंभव है।

और उसी समय वहाँ—

वहाँ भयंकर अंधकार में अपना जबड़ा खोले सोए हुए से उस भयंकर कुएँ के पेट में हाड़-रक्त-माँस, शव, कटे हुए अंग-प्रत्यंगों, छिन्न-भिन्न हुए सिर, टूटे पैर आदि यह सब अन्न पचता जा रहा था। और उस अन्न के चाबे जाने, दले जाने से उत्पन्न किसी रत्न के समान वह हिन्दू तरुण—वह लटका हुआ घायल मरने वालों में से किसी की लात लगने से जब सचेत हुआ तो उसे एकदम उस समय की स्मृति हो आई जब वह अचेत हुआ था। उसे लगा कि मानो उससे पूछा जा रहा है, "हिन्दू धर्म छोड़ता है कि नहीं? मुसलमान होता है कि मरता है?" और वह चीख उठा, "जी नहीं होता, जी नहीं छोड़ता! मैं हिन्दू हूँ! मारो तुम कितना मारते हो। परन्तु कुछ ही समय उपरान्त उसे अनुभूति हो गई कि वह कहाँ है। उसका प्रकृति-प्रदत्त धैर्य पुनः उदित होने लगा। उसके समीप ही किसी हिन्दू का पैर लटक रहा था और उससे रक्त की धारा उसके मुख पर टपक रही थी। वह उस लटकते हुए पैर पर चढ़ गया। किन्तु तभी उसके मन में एक टीस-सी उठी कि कहीं उसके द्वारा किसी हिन्दू हुतात्मा की देह का अपमान तो नहीं हो रहा। किन्तु उसने अपने मन के इस संकोच को शान्त किया और कुएँ में उगे हुए उस वृक्ष को पकड़ कर कुएँ से बाहर निकलने का प्रयत्न किया। किन्तु वह डाली छूट गई और वह धड़ाम से गिर गया। इसका परिणाम यह

हुआ कि कुएँ में दूसरी ओर शवों का जो ढेर लगा हुआ था वह उस ऊपर खिसक कर जा गिरा। थोड़ी-सी चूक हुई ही थी कि उसका पैर तक का भाग शवों आदि की उस ढेरी में धँस गया। उसने उस ढेरी से निकल कर एक ओर खड़े होने का प्रयास किया ही था कि उसका पैर एक व्यक्ति के पेट पर पड़ गया और पेट फूटते ही उस शव की अंतड़ियाँ, मांस, नसें, अन्न-मल सभी कुछ निकल कर बिखर पड़ा। इससे बनी कीच में उसका पाँव फँस गया था। उसे सहसा ही अत्यधिक भय प्रतीत होने लगा किन्तु उसने येन-केन-प्रकारेण उस भय से अपने आपको उबारा और झटका देकर अपना पैर खींचा। उसने पास ही पड़े एक सिर विहीन धड़ को कुएँ की दीवार के सहारे खड़ा किया और उस पर पांव रखकर पुनः उस वृक्ष की टहनी को पकड़ा। उसके मन में बार-बार एक ही विचार आ रहा था कि वह सिरहीन हिन्दू हुतात्मा कौन था? रहने के लिए मरण का भी वरण करने वाले उसके समान लोग थोड़े ही हैं। और तू उस सिरविहीन हिन्दू हुतात्मा की पीठ और कंधे पर पग रखकर बचने के लिए इतने हाथ-पैर मार रहा है, तुझे लज्जा नहीं आती?

किन्तु सिरविहीन हुतात्माओं के कन्धों पर चढ़कर ही तो कोई राष्ट्र पतन के गर्त से अपना सिर ऊँचा करके निकल पाता है। मरण के अंधकार से पुनर्जीवन के उदयाचल की ओर बढ़ने के लिए शीशदान देने वाले ऐसे ही हुतात्माओं के शवों की ढेरियाँ तो किसी राष्ट्र को खड़ी करनी पड़ती हैं।

अतः हे हिन्दू तरुण! संकोच न कर। चढ़ इस ढेरी पर, पकड़ ले वह डाली, और आगे बढ़ा अपना हाथ तथा उस कुएँ की लकड़ी को पकड़कर इस मृत्यु के मुख से बाहर निकल आ।

वह हिन्दू तरुण इसी प्रयास में लगा हुआ भी था।

और उधर उस सभा में खुदाबख्श मोपलों की दीनता और सुशील स्वभाव का वर्णन करते हुए कह रहा था—"ऐसे लोग हिन्दुओं भयंकर अत्याचार व उनका बलात् धर्मान्तरण कर रहे हैं इस बात

बन्धुओं को विश्वास ही कैसे हो रहा है ? हिन्दू बन्धुओ, स्मरण कि मोपले मुसलमान हैं। बस ! इस एक ही शब्द से इन सम्पूर्ण आपत्तियों की समाप्ति हो जाती है। मुसलमानी धर्म बलात् दूसरों के धर्म को हानि पहुँचाने के पूर्णतः विरुद्ध है।"

"पूर्णतः विरुद्ध है।" कड़क खान बोला, "कुरान के तो एक-एक पृष्ठ में यही स्पष्ट किया गया है।"

"उदाहरणस्वरूप आप मुझे इस मत की पुष्टि करने वाले किन्हीं दो पृष्ठों को बता सकते हैं क्या ? और यह भी बताएँगे क्या कि इन वचनों के विरुद्ध कितने वचन हैं तथा मुसलमानी इतिहास में इन दोनों वचनों के स्थान पर कौन से वचनों को ग्रहण किया गया है ?" वह आर्यसमाजी बीच में ही बोल उठा। यह सुनते ही कड़कखान एकदम आगबबूला हो गया और बोला, "इस आर्यसमाजी को सभा से निकाल दो, अन्यथा मैं इसको जान से मार दूँगा। जो भी एक बार मुसलमान बना लिया गया है, चाहे वह बलपूर्वक ही बनाया गया हो वह यदि पुनः मुसलमानी धर्म को छोड़ता है, चाहे, वह स्वेच्छा से ही ऐसा करे, उसे जान से मार देना ही मुसलमानी धर्म की आज्ञा है।"

"यह हरामी है, यह काफिर है" ऐसा कहते हुए अनेक मुसलमान उस हिन्दू की तरफ बढ़े। अध्यक्ष भालचन्द भी भयभीत हो गया। कहीं सभा ही भंग न हो जाए, इस भय से उसने उस आर्यसमाजी को धक्के देकर सभा से निकाल देने का आदेश दे दिया। जब उसको सभा से बाहर निकाला जा रहा था तो उसने कहा कि, "हे हिन्दुओ, तुम मुझे धक्के मारकर क्यों निकाल रहे हो, तुम तो अत्याचार न करने वाले लोग हो।"

"चुप रह ! गधा कहीं का ! श्रीयुत झकमार घोष ने क्षुब्ध होकर कहा, 'हमारा अत्याचार न करने का निर्णय केवल दूसरों के सम्बन्ध में है। अपनों के विरुद्ध भी हम बल प्रयोग नहीं करेंगे, अत्याचार न करने का यह भी अर्थ होता है क्या ?"

(आर्यसमाजी को बाहर निकाल दिए जाने पर सभा में शान्ति

स्थापित हो गई। स्वयं भालचन्द द्वारा प्रस्तुत यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकार कर लिया गया कि मुसलमानी धर्म का प्रचार कभी भी बलपूर्वक नहीं किया गया। अत: मलाबार में भी बलप्रयोग नहीं हुआ है। मोपले शूर-वीर और हम हिन्दुओं के सगे भाई हैं। उन्होंने हिन्दुओं के साथ किसी प्रकार का भी छल नहीं किया है। इसके विपरीत अनेक मोपलों ने हिन्दुओं को आश्रय देकर हिन्दू जनता पर उपकार किया है। जिन लोगों ने भी हिन्दुओं के बलात् धर्मान्तरण की अफवाहें फैलाई हैं वे सभी देश के शत्रु हैं। इस प्रचार का आधार कहीं एक डेढ़ हिन्दू का बलात् धर्मान्तरण किया जाना है। अत: मलाबार में कोई चिन्ताजनक स्थिति नहीं है।"

"मलाबार में हिन्दू मुसलमानों की एकता कोई भंग नहीं कर सकता। वहाँ कोई चिन्ताजनक स्थिति नहीं है।" बावले, झकमार घोष, मुढाप्पा इत्यादि सभी हिन्दुओं ने एक स्वर से गर्जना की।

और वहाँ—

वह हिन्दू युवक उस कुएँ से बाहर निकल आया था। उसके अंग-प्रत्यंग, नख-शिख सने हुए, किसी के रक्त से तो किसी की मज्जाओं से बहते रस से। मुसलमानों द्वारा उस पर किए प्रहारों से उसके कंधे आदि पर भी भयंकर घाव लगे थे और उनसे रक्तस्राव हो रहा था, असह्य वेदना हो रही थी। परन्तु खुली वायु में श्वांस लेकर वह तरुण अपने को कुछ हलका अनुभव कर रहा था। परन्तु घोर अन्धकार। वह गहन कूप ! वह घोर स्मृति और गहन विस्मृति ! किन्तु वह सहसा ही चौंक-सा पड़ा। उसने देखा कि पास के वृक्षों के पीछे कोई खड़ा है। फिर उसे स्पष्टत: दिखाई देने लगा कि वहाँ कोई स्त्री खड़ी है। उसने समझा कि यह कोई मोपला नारी है।

इधर श्रीरंगम देवालय के समीप से एक प्रचण्ड जयघोष सुनाई पड़ा, "हर हर महादेव।" हिन्दू युवक यह विचार कर प्रसन्न हो उठा कि इतने जोरों से हर हर महादेव का जयघोष गुंजाने में समर्थ हिन्दू अभी भी विश्व में जीवित हैं। उसका रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठा

और सुध-बुध भूलकर उस प्रिय और पूज्य जयघोष को तन्मयता सहित सुनने लगा और स्वयं भी बोल उठा, "हर हर महादेव।"

उस तरुण के मुख से यह ध्वनि सुनते ही वह झाड़ी के पीछे खड़ी हुई आकृति भी चल पड़ी। उसने अपनी साड़ी के पल्ले के पीछे छिपाया दीप निकाला और उसके उजाले की रेखा उस जयध्वनि करने वाले व्यक्ति पर पड़ने लगी। वह स्त्री तत्काल उसकी ओर "दामू! हे वीर-वर!" कहते हुए दौड़ पड़ी। आश्चर्य, आनन्द, आभार और अभिमान से उसका शरीर कंपित हो उठा। उसके हाथ से जलता दीप गिर पड़ा। उस दीप के गिरने के साथ ही उसके धैर्य का बाँध भी टूट गया। "दामू जानते हो कि नहीं? वीरवर मैं हूं तुम्हारे द्वारा मुक्त की गई लक्ष्मी।" एक सांस में ही यह कहती हुई वह युवती दामू से लिपट गई। उसकी छाती से लिपट कर वह युवती बोली, "मुझे संभाल दामू, अब तक इस श्मशान में भी मुझे भय नहीं लग रहा था, किन्तु मैं अब क्षण-भर भी खड़ी नहीं रह सकती।"

यह चिन्तामणि शास्त्री की वही कन्या थी जिसे शास्त्री के शांति-कुटीर में सोए हुए सुमति समझकर पकड़ा गया था। और उसके बाद उसने कितने संताप, छल, भीति, बलात्कार, प्रहार और आशा तथा निराशा सहन की! उसे भी बन्दी बनना पड़ा था, किंतु विजयी गोरखों ने सभी बन्दी बनाई गई हिन्दू कन्याओं को स्वतन्त्र कर दिया था। यह युवती, लक्ष्मी भी उन्हीं के साथ मुक्त हुई थी। इतने कष्टों और दुःखों से लक्ष्मी टूट-सी गई थी।

परन्तु अब उसके जीवन का बन्धन भी टूटने ही वाला था, जब उसकी दामू से भेंट हुई।

इतने दिनों के उपरान्त उसे कोई अपना मिला था। यह पगली स्त्री जाति! संकटकाल में झेले सभी दुखों को वह एकदम भूल गई। दुखों के आघात से उसकी जो जीवन-डोरी टूट नहीं पाई थी वह सुख का यह अतिरेक सहन न कर पाई। और दामू मुझे संभाल ले, कहती-कहती वह उस युवक के बाहुपाश में इस प्रकार आबद्ध हो गई कि

फिर न हिली। उसने इतना ही कहा "दामू ! मेरा दामू ! मेरा···" और लजा गई। परन्तु अधूरे वाक्यों का उच्चारण यही तो प्रेम का पुरातन अभ्यास है ! दामू ने भी उसे सान्त्वना दी—"लक्ष्मीबाई ! भयभीत न हो, मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

किन्तु प्रेमोन्मत्त इस सुन्दर कन्या का यह प्रथम बाहुपाश में आबद्ध होना, उसके लिए जीवन का अन्तिम बन्धन सिद्ध हुआ। लक्ष्मी बड़ी निश्चिन्तता-सहित उस युवक की गोदी में सिर रख कर सो गई। युवक भी सोच रहा था कि गोरखों ने पुनः ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है कि कुटुम्ब ग्राम में हिन्दू निश्चिन्तता सहित सो सकते हैं। उसने समझा कि युवती को नींद आ गई है। कुछ समय पश्चात युवक को भी नींद आ गई।

प्रातःकाल हुआ। सुशीतल सुगन्धित समीरण बह चला। पक्षियों की चहचहाट चारों ओर गूंज उठी। पहले एक चिड़िया उन दोनों के ऊपर से उड़ी और उसने कई चक्कर लगाए और फिर लक्ष्मी की बिखरी केशराशि में से एक केश खींच कर वह चिड़िया उड़ गई। परन्तु वह युवती जागी नहीं, अपितु उस युवक के गले में हाथ डाले उसी भाँति निश्चिन्त पड़ी रही। युवक के घावों से होते हुए रक्तस्राव से वह भी पूर्णतः भीग गई थी। कुछ ही समय पश्चात् एक छोटा-सा हिन्दू बालक एक भव्य आकृति वाले संन्यासी को साथ लिए वहाँ आ पहुँचा और बोला, "यही है वह कुआँ महाराज।" संन्यासी भी स्तम्भित-सा होकर खड़ा रहा।

"परन्तु यह कौन है ?" वह बालक दामू और उस युवती को वहाँ सोए हुए और रक्त से नहाए हुए देखकर बोला, "आहो, यह तो दामू थिय्या है ! कम्बु का सहायक और वीर शिष्य, और यह ? यह है चिन्तामणी शास्त्री की कन्या—लक्ष्मी, हाँ वही तो है यह !"

संन्यासी ने भी बड़ी कुरूप दृष्टि से यह दृश्य देखा। उस युवक और युवती के संबन्ध में शंकित होकर उन्हें संन्यासी ने हिलाया। परन्तु वह कन्या तो निश्चिन्त पड़ी थी। किन्तु वह तरुण एकदम उचक

पड़ा। उसे लगा कि लक्ष्मी को किसी शत्रु ने हाथ लगाया है। परन्तु उसने देखा कि उसके सिर पर एक भव्य आकृति वाले परम दयालु संन्यासी ने हाथ रखा हुआ है और वह उसे आशीर्वाद दे रहा है। उसे यह संन्यासी अभय दान देने वाले देवता के समान प्रतीत हुआ।

दामू झटपट उठा, खड़ा हुआ और भक्ति-भावना-सहित कुछ दूर पीछे हटा और उस संन्यासी को दण्डवत किया। अभी संन्यासी पुनः उसके मस्तक पर प्रेम-सहित हाथ रखने ही वाला था कि युवक बोल उठा, "भगवान मैं थिय्या हूँ। आपको कलंक लग जाएगा।"

"पगले ! तेरी वीरता की कथा मैंने लोगों के मुख से सुनी है। मुझे बताया गया था कि तेरी हत्या कर दी गई है। तब तेरे तथा तेरे गुरु कम्बु सहित हिन्दू धर्म के सम्मान की वेदी पर, जिस-जिसने अपनी देह सानन्द समर्पित की है, उन्हीं हुतात्माओं के वध किये शरीर के दर्शन करने हेतु मैं यहाँ आया था। और मुझे वहाँ उन हिन्दू हुतात्माओं के समान ही तेरा प्रत्यक्ष दर्शन मिला है। जो थिय्या हिन्दू धर्म के लिए अपनी आत्मा का हवन करता है वह तो ब्राह्मणों से भी श्रेष्ठ ब्राह्मण है। जो महान् हिन्दू धर्म के लिए अपना शीश भेंट चढ़ाता है वह क्षत्रियों से भी श्रेष्ठ क्षत्रिय है। चल, सर्वप्रथम इस सुन्दर ब्राह्मण कन्या के शव को इस कुएँ में डाल दें। रो मत, हजारों वृद्ध एवं तरुण, बालक और बालिकाएँ स्त्रियाँ तथा पुरुष हिन्दू धर्म के लिए मोपलों की तलवारों का शिकार बन रहे हैं। जब तू किसी व्यक्ति-विशेष के लिए रोने लगा है तो यह समझ कि तेरा अहंकार तेरे जाति-प्रेम के मार्ग में रोड़ा बन रहा है। तुम्हारा प्रत्येक अश्रु हिन्दू जाति के लिए गलना चाहिए। किसी व्यक्तिविशेष के लिए अपने नेत्रों से अश्रु प्रवाहित करते रहने का अवसर अब कहाँ है।

उन दोनों ने उस निरपराध किन्तु पीड़ाओं के भार से क्लान्त-श्रान्त हुई युवती के शव को उस कुएँ में फेंक दिया। वह संन्यासी तथा दामू बहुत देर तक उस कुएँ के समीप खड़े रहे। बीच-बीच में संन्यासी कुछ पूछता जाता था और दामू उसे उत्तर देता जाता था। उस कुएँ के पास

बड़ी दूर-दूर तक अनेकों हिन्दुओं की कटी हुई शिखाएँ; और बलात् की गई सुन्नत के कारण कंटक हुआ माँस तथा चर्म और रक्त बिखरा हुआ था। और उस कुएँ में हिन्दुओं के अनेक शव रक्त में सराबोर पड़े थे। ऐसा लग रहा था कि मानों इस कुएँ के निर्माण में मलाबार के मुसलमान कारीगरों ने हिन्दुओं के रक्त-माँस के चूने से कटे हाथों, पाँवों, सिरों, बोटियों और अस्थियों व धड़ों तथा शवों से इसका निर्माण किया हो। संन्यासी उस दृश्य को बारम्बार देखकर बोला—"आगरा में मुसलमानों ने प्रेम का ताजमहल बनाया है, परन्तु मुसलमान कारीगरों ने इस कुएँ के समान द्वेष के ताजमहलों का निर्माण भी पद-पद पर समग्र हिन्दुस्तान में किया है। ईश्वर उन्हें क्षमा कर और सद्बुद्धि प्रदान कर।"

"सुबुद्धि दे" सहसा ही एक ध्वनि उठी। संन्यासी ने पीछे मुड़कर देखा तो एक मुसलमान वृद्ध लाठी टेकता हुआ अपनी ओर आते हुए दिखाई दिया। वह मुसलमान बोला, "महाराज चौंकिए नहीं, मैं मोपला मुसलमान हूँ।"

"अच्छा तो ऐसा है।" संन्यासी बोला, "यदि तू अन्य मोपला मुसलमानों के समान मुझ हिन्दू की हत्या करने आया है, तब भी मैं चौंकूंगा नहीं। इस कुएँ को देख। चौदह-चौदह वर्ष की अल्हड़ हिन्दू कुमारियों ने हिन्दू धर्म की रक्षार्थ अपने प्राण समर्पित किए हैं। उन्होंने ही कोई संकोच नहीं किया, मैं तो संन्यासी हूँ। संन्यासी के प्राण तो पहले ही आधे जा चुके होते हैं। और यदि तू मोपला होकर भी हिन्दुओं से द्वेष नहीं करता और उनके द्वारा किये भयंकर अन्याय और अत्याचार पर तुझे वस्तुतः पश्चाताप हो रहा है तो भी मैं चौंकूंगा नहीं। कारण यह है कि क्या मोपला, क्या मुसलमान, क्या ईसाई! सम्पूर्ण जाति की जाति ही दुष्ट होती है ऐसा तो मैं मानता नहीं हूँ। वे भी मनुष्य ही हैं। उनमें भी साधु, सत्त्वशील तथा दयामय नर-नारी हैं। मैं जब किसी जाति के लोगों द्वारा किये गए कृत्यों का विरोध करता हूँ तो उन कृत्यों का विरोध करता हूँ उस जाति अथवा धर्म का नहीं।"

आँखों में अश्रु भरकर वह मोपला बोला, "महाराज, हिन्दू लोगों में साधु-सन्तों की मैंने पर्याप्त संगति की है। अतः मुझे यह विदित है कि न्याय, सत्य व दैवी विचारों को जितना हिन्दुओं ने मान्यता दी है, उतने, दुर्दैव से हम मुसलमानों में अभी तक नहीं पनप पाए हैं। कुरान सरीखे ग्रन्थ का उसके लाखों अनुयायियों द्वारा बड़ा ही भयंकर अर्थ किया जाता है। वह अर्थ मुझे तथा मेरे पंथ के अनुयायियों को मान्य नहीं है। अनेक मुसलमान हमें मुसलमान मानते हुए भी हमारे प्रति भारी द्वेष-भावना रखते हैं। क्योंकि हम कुरान के वचनों का अर्थ समझ और परिस्थितियों के संदर्भ में लगाते हैं। जो वचन त्रिकाल में सत्य हैं तथा मानव-जाति के हितों के अनुकूल प्रतीत होते हैं उन्हें हम त्रिकाल-बाधित मानते हैं अतः हमारे हिन्दू बन्धुओं पर मुसलमानों ने जो अत्याचार किए हैं, उनका भी हमारा पंथ तीव्र निषेध करता है। हम तो यह प्रार्थना करते हैं कि "हे रहीम, हे राम! मुसलमानों को सद्बुद्धि दे। हिन्दुओं को सद्बुद्धि दे कि जिससे मनुष्य देव के नाम पर और देवताओं के नाम पर मनुष्यों की बलि न लें। जिस कुरान ने अरबों को अपनी कन्याओं को न मारने की शिक्षा दी है वही कुरान अल्ला के नाम पर दूसरों की हत्या की शिक्षा भला कैसे दे सकती है? और यदि वह ऐसी शिक्षा देता है तो फिर वह ईश्वरीय पुस्तक नहीं है।"

"ईश्वरीय पुस्तक?" संन्यासी बोला, "इस ईश्वरीय पुस्तक की मनुष्य ने शैतानी टीकाएँ करके मनुष्यों पर अत्याचार किए हैं। यदि मनुष्य जाति के लिए जो शिक्षाएँ प्रत्यक्षतः उपकारक हैं उनका अनुकरण किया जाए और जो शिक्षाएँ राक्षसी व अहितकारी प्रतीत होती हैं दे केवल किसी पुस्तक में उल्लिखित हैं, केवल इसीलिए मान्य हैं, यदि मनुष्य इस दृष्टिकोण का परित्याग कर दे तो मानव का मानव पर कितना उपकार होगा? ईश्वरीय पुस्तकों के नाम पर मानव ने इतने अधिक अनर्थ किए हैं कि उनकी अपेक्षा मनुष्य-कृत पुस्तकें ही अधिक आदरणीय व नैतिक प्रतीत होती हैं। परन्तु यह स्थिति तो

जब आएगी तब आएगी। तब तक तो अत्याचार और बलात्कार का मुकाबला करने वाला कोई भी व्यक्ति ही हमारे लिए वन्दनीय है। यह कुआँ अनेक सुकोमल सुकुमारियों और नवयौवन में मदमाते तरुणों के शवों से भरा हुआ है ! उनसे यही प्रश्न किया जाता है कि तुम मुसलमान होते हो कि मरते हो ? बालिकाओं ने अपनी माताओं और माताओं ने बालकों के मोह को तज कर तथा तरुणों ने मदमाते यौवन का मोह छोड़कर हँसते-हँसते काल का वरण किया है। उनके खण्ड खण्ड कर दिए गए फिर भी उन्होंने सी तक न की। उनका यह धर्म-वीरत्व धन्य है। अत्याचारों की धार भी जिस ढाल से टकराकर कुंठित हो गई ऐसे हुतात्माओं की ढाल हे हिन्दू जाति, आज भी तेरे हाथों में है, अतः भय न कर।

एक बाबा बन्दा बहादुर ने बलिदान दिया, सम्भाजी शहीद हो गए किन्तु आज भी उनके बलिदानों के कारण हम उनका नाम सम्मान-सहित लेते हैं। किन्तु जिनकी शहादत की पावनता उनसे अणुमात्र भी कम नहीं, परन्तु जिनके नामों का पता लगाया जाना असंभव है, ऐसे सैकड़ों आबालवृद्ध नर-नारी, ब्राह्मण और चाण्डालों, हिन्दू धर्मवीरों ने जो अत्युग्र बलिदान देकर इस कुएँ को पाटा है, उन्हीं के नाम पर इस कुएँ को नाम देता हूँ। हिन्दू जाति की अवनत स्थिति में भी प्रकाशमान उनका दिव्य बलिदान और उनकी शक्ति का नाम ही यह कुआँ। इनके दिव्य बलिदान और शक्ति के नाम पर यह हिन्दू जाति पुनरादि समर्थ, सुन्दर और देवप्रिय होगी। ऐसी जो आशा हमारे हृदय का स्पन्दन कर रही है उस आशा का नाम ही यह कूप।"

संन्यासी ने भक्ति-भावना से परिपूरित होकर इस कुएँ की तीन प्रदक्षिणा कीं। उसके पीछे-पीछे ही वह मुसलमान वृद्ध और दामू भी भक्ति-भावना से चल रहे थे। तदुपरान्त इन तीनों ने इस कुएँ को साष्टांग दण्डवत किया। संन्यासी ने अपनी भुजा को ऊँचा उठाते हुए कहा, "दामू मैं मर जाऊँगा, किन्तु तू उस सौभाग्यशाली दिवस को देखने के लिए जीवित रहेगा। तू मेरा यह कथन स्मरण रखना कि जब

हिन्दू जाति एक स्वतन्त्र व सामर्थ्यवान राष्ट्र के रूप में खड़ी हो जाए तो वह इस कुएँ को कदापि विस्मृत न करे। यदि एक बार चन्द्रगुप्त, शिवाजी तथा गुरु गोविंद और भाऊ द्वारा जिन रणांगणों में विजय प्राप्त की गई वहाँ विजय-स्तम्भ न भी बनाए गए तो क्षण भर चलेगा? परन्तु इस कूप के रक्तांगण में जयस्तम्भ नहीं तो यशस्तम्भ का निर्माण किये जाने का कार्य कदापि न भुलाया जाए। जाति के जीवन का आधार जयस्तम्भ की अपेक्षा उसके यशस्तम्भों की दृढ़ता पर ही अधिक अवलम्बित होता है।"

"परन्तु महाराज? जिनके भाग्य में उस सौभाग्यशाली दिन का दर्शन करना है वही करे। मैं तो इस कूप में पुनः उतरूँगा। मेरे साथ-ही-साथ जिन लोगों ने धर्मयुद्ध में भाग लिया और जो मारे गए, उनके शवों पर पग रखकर, अपना जीवन बचाने के लिए इस कूप से बाहर आकर मैंने जो कृतघ्नता दिखाई है उसको अपने-आपको इसमें पुनः प्रविष्ट कराकर मैं भस्म क्यों न कर दूँ।"

"छीः छीः! पगला कहीं का। ध्येय की प्राप्ति के लिए मरना जितना पावन है उसकी अपेक्षा ध्येय की सफलता के लिए जीवित रहना और भी अधिक पावन है। यदि तेरे सरीखे युवक जाति के लिए अपना जीवन लगा दें तो फिर धर्म के लिए मरने की स्थिति ही कभी उत्पन्न नहीं होगी! धर्म के लिए सजग रहना यही मुख्य कर्तव्य है! उससे पवित्र होने पर ही धर्म पर संकट के घन फहरा उठते हैं और उस उपेक्षा का प्रायश्चित्त करने के लिए धर्महेतु जीवन समर्पित करने पड़ते हैं। परोपकारार्थ मरना तो आपद्धर्म है। अतः तू जी और इस प्रकार जी कि तेरी जाति भी एक जीवित जाति के रूप में खड़ी रहे! इन हुतात्माओं ने महान् कार्य किया है। किन्तु जिस ध्येय के लिए ये जीवन दे चुके हैं उसको प्राप्त करते ही इन हुतात्माओं को अधिक सन्तोष प्राप्त होगा। इस कार्य के लिए तुझे एक महत्त्वपूर्ण कार्य करना पड़ेगा।"

"महाराज वह महत्त्वपूर्ण कार्य क्या है?"

"शुद्धि !" संन्यासी बोला, "चल हुतात्माओं के पावन रक्त से पवित्र हुए इस कुएँ के समक्ष प्रतिज्ञा कर कि जिन लोगों को मुसलमानों ने बलात् मुसलमान बनाया है उन सब हिन्दुओं की शुद्धि कर, मैं उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित करूँगा ! जिन्होंने हिन्दुत्व के लिए प्राण दिए हैं उन्होंने हिन्दुत्व की रक्षा की है, और तुम जीवित हो, अब तुम्हें शुद्धि द्वारा हिन्दू धर्म की रक्षा करनी होगी ! शुद्धि का प्रचार करो और शत्रु के दुष्ट इरादों को विफल करो। चलो, कार्य में प्रवृत्त हो जाओ।"

वे चल पड़े। संन्यासी और दामोदर दोनों ही ग्राम-ग्राम और झोंपड़ी-झोंपड़ी में पहुँचे और मोपलों द्वारा बलपूर्वक धर्मच्युत किए गए हिन्दुओं को शुद्ध करने लगे। यह कार्य बड़ी तीव्र गति से चला। मोपलों के विद्रोह के प्रवाह का शमन हो गया। उनके नेतागण भी मारे गए और वे दाँतों तले तृण दबाकर अनुनय-विनय कर रहे थे। किन्तु इस पर भी संन्यासी और दामोदर द्वारा किए जा रहे शुद्धि के कार्य से क्षुब्ध होकर मोपलों में से ही कुछ व्यक्तियों ने उनकी हत्या का षड्यन्त्र रचने में भी कोई कमी नहीं की।

एक दिन तीसरे पहर के लगभग एक झोंपड़ी के द्वार पर एक तरुण कन्या सुस्वर में कोई गीत गुनगुना रही थी। उस स्वर को सुनकर उस मार्ग से जाने वाला एक संन्यासी सहसा ही चौंक पड़ा और ठहर गया। उस तरुणी के गीत की पंक्तियों में, उसे गोविन्द नाम अस्पष्ट-सा सुनाई पड़ा। वह भी मार्ग छोड़कर धीरे-धीरे उस झोंपड़ी के समीप पहुँच कर एक झाड़ी के पीछे छिपकर खड़ा हो गया। वह तरुणी भी अपने गीत के स्वर को धीरे-धीरे ऊँचा करती जा रही थी। और अब संन्यासी को स्पष्टतः उसके सुमधुर कंठ से वह गीत मुखरित होता सुनाई पड़ने लगा—गोविन्दा! सुन्दरा! मन्मन धे तव छन्दा।

संन्यासी सामने आ गया। उसे देखते ही वह तरुणी चौंक पड़ी। संन्यासी बोल उठा, "लड़की! यह झोंपड़ी किसकी है?" "एक मोपले की है।" "और तू यहाँ कैसे आ गई?" परन्तु इन प्रश्नों के साथ-

ही-साथ उस लड़की का चेहरा उतर गया तथा उसके नेत्रों से अश्रुकण छलक पड़े। किन्तु साथ ही आशा और उत्कंठा भी उसके मुखमण्डल पर स्पष्टतः उभर आई थी।

उसने मोपलों के मुख से सुना था कि कोई हिन्दू संन्यासी हिन्दुओं को शुद्ध कर उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में वापस लेने का कार्य कर रहे हैं। मोपले उसे क्रोध में शैतान संन्यासी के नाम से ही पुकारते थे।

उस तरुणी का हृदय सहसा काँप उठा। कहीं यह वही संन्यासी तो नहीं है? उसने केवल रोना आरम्भ कर दिया।

"रो नहीं!" संन्यासी बोला, "लड़की, तेरे शरीर पर मोपला स्त्रियों की जाखट है, परन्तु तू यह गोविन्द का गीत गा रही है। कहीं तू पहले हिन्दू तो नहीं थी?"

युवती ने कुछ साहस करते हुए कहा, "भगवन्, भक्तों की परीक्षा गोविन्द जाखट से नहीं हृदय से करते हैं। मुझे मेरे माता-पिता ने यही सिखाया है। मैं हिन्दू थी, आपकी यह बात सत्य है। परन्तु मैं अभी भी हिन्दू ही हूँ। मेरे शरीर पर यह मुसलमानी जाखट चढ़ा दी गई मन पर नहीं; क्षमा कीजिए, मैंने सुना है कि धर्मभ्रष्ट किए गए हिन्दू पुनः शुद्ध होकर हिन्दू-धर्म व समाज में वापस आ सकते हैं। यह सत्य है क्या?"

संन्यासी बोला, "यह सत्य है! बलात्कार अथवा मूर्खतावश जो हिन्दू धर्मच्युत हुए हैं, वे सभी प्रायश्चित्त करके पुनः हिन्दू हो सकते हैं।"

"महाराजा! परन्तु मैं तो एक मसकुनी हूँ, नीच जाति की एक कन्या। फिर बलात् मुझे एक मुसलमान ने यहाँ अपनी पत्नी बनाकर रखा हुआ है। अभी भी मैं जीवित हूँ, क्या मैं भी शुद्ध हो सकती हूँ?"

"हाँ, क्यों नहीं। तेरा चित्त जिस क्षण शुद्ध हो गया उसी समय वह प्रायश्चित्त हो गया। तू जीवित है इसे मैं सद्भाग्य मानता हूँ। यदि पतित होने वाला प्रत्येक व्यक्ति आत्महत्या करने लगेगा तो हिन्दू जाति स्वतः ही समाप्त हो जाएगी! यदि ऐसा ही किया जाने लगा तो मोपलों

को तुम्हें बलात् धर्मान्तरित करने का भी कष्ट नहीं उठाना होगा। यदि धर्म के प्रति हृदय से आस्था समाप्त न हो तो प्रत्येक बात क्षम्य है और जो कुछ हुआ है उसकी तुम्हारे द्वारा किये गए अपराध के रूप में गणना नहीं की जा सकती। ध्येय के बन्दरगाह तक पहुँचने के लिए अनेक बार नाविक को सामने से बहती वायु को चीर कर बढ़ने के स्थान पर मार्ग बदल कर भी चलना पड़ता है। तुम तो केवल यह बताओ कि तुम पुनः हिन्दू होना चाहती हो। यदि चाहो-तो पुनः हिन्दू हो सकती हो।"

अप्रत्याशित रूप से यदि कोई शुभ समाचार मिलने पर जैसे मनुष्य क्षण-भर विश्वास ही नहीं कर पाता उसी प्रकार क्षण-भर अवाक् रह कर वह युवती बोली, "ऐसा है तो महाराज, क्या सचमुच ही मैं हिन्दू हो सकती हूँ। आप तुरन्त ऐसा कीजिए और मुझे अभी ले चलिए। हिन्दू धर्म से च्युत किये ए हिन्दू यदि पुनः अपने धर्म में वापस जाते हैं तो मोपले उनकी हत्या कर देते हैं। अतः जल्दी चलिए। क्या मैं भी आपके साथ चलूँ ?"

"अवश्य, परन्तु तुम मुसलमानी पहनावा मत पहने रहो। यह जाकट उतार दो। तुम उस राक्षस से किंचित मात्र भी भयभीत न हो। मेरे साथी यहाँ समीप में ही हैं। ये बटन खोल दो, और निकाल दो इस जाकट को।"

यह अकल्पित मुक्ति—राक्षसों की बंदीशाला से यह अकल्पित मुक्ति—एक क्षण पूर्व तक तो इस मुक्ति की कहीं गंध भी न आ पा रही थी। वह युवती बटन खोलने लगी किन्तु मैं पुनः हिन्दू होने वाली हूँ; इस प्रिय कल्पना से उसके नारी-स्वभाव के अनुसार मृदुल ज्ञान-तंतु पुनः थर-थर कम्पित हो उठे और बटन न खुल पाए।

हिन्दू जाति के मातृपक्ष में वापस लौटने के मार्ग में एक मोपलों की जाकटरूपी फाटक आड़े आ गया था और उस फाटक पर लगी साँकल शीघ्र ही नहीं खुल सकी !

परन्तु इसमें हो रहा विलम्ब भी वह सहन न कर पाई। जो बटन

खुल नहीं पाए थे, उसने उन्हें तड़-तड़ तोड़ दिया और वह जाखट उतार कर फेंक दी ! जिस प्रकार पिंजरे में बन्द कोई पक्षी पिंजरे से मुक्त होते हुए पंख फड़फड़ाकर उड़ पड़ता है, और किसी वृक्ष पर जाकर आश्रय ले लेता है उसी प्रकार वह भी झट से आगे बढ़ी और उसने उस संन्यासी के बाहुपाश में आश्रय ले लिया।

संन्यासी चल पड़ा। उस कन्या-सहित अभी वह कुछ ही दूर चल पाया था कि उसके साथी भी उससे आ मिले।

"यह कौन है ? अरे मालती !" दामोदर आश्चर्यचकित होकर बोला। "ऐसा है तो हे भगवान् ! ऐसे जितने भी हिन्दू जिन्हें हम जानते थे और जिन्हें दुष्टों ने हिन्दू धर्म से पतित किया था, कितनी आनन्द-दायक है यह बात।"

संन्यासी बोला, "और जिन्हें मैं पहचानता था वे सब भी। अभी छः मास भी नहीं हुए होंगे उस मौलवी कुर्रमला ने खड़े होकर सगर्व गर्जना करते हुए कहा था कि, "आज हिन्दू धर्म मर गया है। इस खिलाफती राज्य में जितने भी हिन्दू थे, वे सभी मुसलमान बना लिए गए हैं। आज हम ऐसा कह सकते हैं कि मलाबार में तो तुम्हारे खिलाफत राज्य का नाम-निशान तक भी नहीं रह गया है। धर्मभ्रष्ट किए गए सभी हिन्दू पुनः अपने धर्म में आ गए हैं और तेरे प्रयास विफल हो गए हैं।"

"स्वामिन ! शकों और हूणों की तलवारों से लगे आघात जिस प्रकार समूल भर दिए गए थे उसी प्रकार आपकी कृपा से इस प्रहार को भी पूर्णतः विफल कर दिया गया है।"

"यह ठीक ही हुआ।" संन्यासी गम्भीरता-सहित बोला, "अपने किये गए आघातों को मिटा देना यह हिन्दू जाति की जीवन-शक्ति की गौरवपूर्ण विजय है इसमें तो कोई शंका ही नहीं। किन्तु अब इस जीवन-शक्ति से ऐसी क्रिया-शक्ति का निर्माण किया जाना अभीष्ट है कि किसी का हिन्दू जाति पर पहल करने का साहस ही न हो। घावों को भरकर उनके चिह्न मिटा देने की अपेक्षा अब हिन्दू जाति को अपने-

आप में ऐसा सामर्थ्य और चैतन्य उत्पन्न करना होगा कि अब किसी को इस जाति पर प्रहार करने का साहस ही न हो पाए और किसी को ऐसा करने का अवसर ही न मिल पाए। वह विजय इस विजय की अपेक्षा अधिक गौरवपूर्ण होगी। औरंगजेब का पराभव कर मुग़ल-साम्राज्य को धूलि-धूसरित कर दिया गया यह तो विजय है ही परन्तु यदि बाबर अथवा महमूद गज़नवी और कासिम को सिन्धु नदी को पार करने का प्रयत्न करते हुए ही उन्हें डुबाकर नष्ट कर दिया जाता तो वह विजय, इसकी विजय की अपेक्षा परिपूर्ण निरपवाद विजय सिद्ध होती। अब आगामी पीढ़ी को, जिसके तुम प्रतिनिधि हो ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि हिन्दू जाति का संगठित बल-रूपी हिमालय सगर्व यह चुनौती दे सके कि किस माता ने ऐसा पूत जना है जिसने मुझ पर अन्याय-सहित आघात करने का धौंसा खाया है ?"

"इस प्रकार की विजय प्राप्त करने का कार्य, दामोदर तुम्हें, मालती और तुम्हारी पीढ़ी को ही करना है। ऐसा कहते हुए संन्यासी ने दामोदर और मालती के हाथों को एक-दूसरे से मिला दिया और गम्भीर स्वर में बोला, "हे युवक ! हे युवती ! यह तुम्हारा पाणिग्रहण तुम्हारे लिए तुम्हारी हिन्दू जाति के लिए सुखद एवम् शुभ हो।"

□